हूल दिवस पर वीर शहीदों को नमन

संताल एक्सप्रेस

वर्ष- 08 अंक - 276 दुमका | RNI NO. JHABIL/2018/76383 | santalexpress20@gmail.com | 30 जून 2026, मंगलवार | पृष्ठ-10 मूल्य : 2 रुपये

आज हूल दिवस पर भोगनाडीह में पक्ष और विपक्ष के नेता करेगे सिदो-कान्हू को श्रद्धासुमन अर्पित

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

बरहेट/साहिबगंज-30 जून हूल दिवस के अवसर पर मंगलवार को साहिबगंज जिले के बरहेट प्रखंड क्षेत्र के ऐतिहासिक भोगनाडीह में संथाल हूल के अमर शहीद सिदो, कान्हू, चांद, भैरव, फूलो एवं झानो को जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा श्रद्धासुमन अर्पित किए जाएंगे.मिली जानकारी के अनुसार हूल दिवस समारोह में झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय सचिव पंकज मिश्रा, बोरियो विधायक धनंजय

सोरेन तथा राजमहल विधायक मोहम्मद ताजुद्दीन राजा भोगनाडीह पहुंचकर शहीद स्मारक पर माल्यार्पण करेंगे. इसके अलावा भारतीय जनता पार्टी के स्थानीय नेता एवं कार्यकर्ता भी कार्यक्रम में शामिल होकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे.कार्यक्रम के दौरान जिला प्रशासन की ओर से भी शहीदों के स्मारक पर माल्यार्पण किया जाएंगा.साथ ही संथाल हूल के शहीदों के वंशजों को अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया जाएगा.हूल दिवस को लेकर भोगनाडीह में सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं. समारोह को शांतिपूर्ण एवं गरिमामय ढंग से संपन्न कराने के लिए प्रशासन द्वारा सुरक्षा एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं.

अमेरिका और ईरान एक-दूसरे पर हमले रोकने पर राजी

एजेंसी

तेहरान/वाशिंगटन । अमेरिका और ईरान ने आपसी तनाव कम करने पर सहमति बना ली है। एक वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी के अनुसार, दोनों देशों के प्रतिनिधि मंगलवार को कतर की राजधानी दोहा में मिलेंगे। यहां दोनों अधिकारियों के बीच होर्मुज जलमार्ग से जुड़े विवाद पर बातचीत होगी। यह जानकारी एक्सियोस की रिपोर्ट में दी गई है। वरिष्ठ अमेरिकी अधिकारी ने कहा कि हमने सभी सैन्य कार्रवाई रोकने का फैसला किया है। उन्होंने सैन्य भाषा में इस्तेमाल होने वाले शब्द 'काइनेटिक एक्टिविटी' का जिक्र करते हुए बताया कि फिलहाल हमले और अन्य सैन्य अभियान रोक दिए जाएंगे। एक अन्य अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि फिलहाल दोनों पक्ष तनाव कम करने पर सहमत हैं और होर्मुज जलमार्ग से जहाजों की आवाजाही सामान्य रूप से जारी रहेगी। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिकी अधिकारियों और मामले की जानकारी रखने वाले एक अन्य सूत्र ने भी मंगलवार को होने वाली इस बैठक की पुष्टि की है। बैठक में तकनीकी स्तर की बातचीत आगे बढ़ाई जाएगी। 11 दिन पहले लागू हुआ संघर्षविराम (सीजफायर) अभी भी बेहद नाजुक स्थिति में है।

पलामू में रहस्यमयी बीमारी से 10 दिनों में पांच लोगों की मौत

संवाददाता

पलामू । झारखंड के पलामू जिले के पड़वा प्रखंड स्थित सिक्का गांव में रहस्यमयी बीमारी से मौतों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। सोमवार तड़के रांची के राजेंद्र आयुर्विज्ञान संस्थान (रिम्स) में इलाज के दौरान नकुल महतो की मौत हो गई। इसके साथ ही पिछले 10 दिनों में एक ही परिवार के पांच सदस्यों की जान जा चुकी है। परिवार के अन्य सदस्य अब भी रिम्स में भर्ती हैं और उनकी हालत गंभीर बनी हुई है।

मृतकों में सबसे पहले 19 जून को कुलदीप महतो की मौत हुई थी। इसके बाद 20 जून को उनकी बेटी बबीता कुमारी, 26 जून को दूसरी बेटी इंदु कुमारी, 28 जून को बहू श्वेता कुमारी और 29 जून को बेटे नकुल महतो की मौत हो गई। श्वेता और नकुल ने रिम्स में इलाज के दौरान दम तोड़ा, जबकि कुलदीप महतो की पत्नी लाखो देवी, एक बेटा और एक पोता अभी भी अस्पताल में भर्ती हैं।

स्वास्थ्य विभाग की प्रारंभिक जांच में कई अहम तथ्य सामने आए हैं। अधिकारियों के अनुसार, बीमार होने के बाद परिवार ने चिकित्सकीय उपचार के बजाय लंबे समय तक झाड़-फूंक का सहारा लिया।

कैबिनेट फेरबदल की चर्चा के बीच प्रधानमंत्री ने की शीर्ष नौकरशाहों के साथ बैठक

एजेंसी

नई दिल्ली । कैबिनेट फेरबदल की तेज होती अटकलों के बीच, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मंगलवार को विभागीय सचिवों के साथ महत्वपूर्ण बैठक करने वाले हैं। इस महामंथन का मुख्य उद्देश्य नियमों में ढील, उदारीकरण और सुधारों को गति देना है, ताकि व्यापार करने में आसानी और जीवन जीने में आसानी के एजेंडे को आगे बढ़ाया जा सके।

यह दो माह से भी कम समय में शीर्ष नौकरशाही के साथ प्रधानमंत्री मोदी की दूसरी अहम बैठक होगी। पीएम मोदी सोमवार को सेशेल्स की आधिकारिक यात्रा समाप्त कर दिल्ली लौट रहे हैं, और मंगलवार को इस ब्रीफिंग में शामिल होने वाले है। इसके पहले 21 मई को उन्होंने विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने के लिए नियामक रोडमैप तैयार करने हेतु केंद्रीय मंत्रिपरिषद और केंद्रीय सचिवों की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता की थी। बताया जा रहा है कि इस आगामी बैठक में उदारीकरण और सुधारों के अलावा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने पर खास ध्यान केंद्रित रहेगा।

झारखंड की तीन बेटियां भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम में चयनित

संवाददाता

रांची । झारखंड की महिला हॉकी ने एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। राजधानी रांची स्थित सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, बरियातू हॉकी सेंटर की तीन होनहार खिलाड़ी बिनीमा धान, पार्वती टोप्पो और रोशनी आइंद का चयन भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम में हुआ है। तीनों खिलाड़ी 5 से 14 जुलाई

तक होने वाले इंग्लैंड और स्कॉटलैंड दौरे पर भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व करेंगी। भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम इस दौरे के दौरान कुल सात अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेलेगी।

साहिबगंज में भीषण सड़क हादसा - पिकअप व ई रिक्शा में टक्कर, पिता और पुत्र की मौत, चार घायल

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

बरहेट/साहिबगंज- बरहेट थाना क्षेत्र के बरहेट-गोड्डा मुख्य सड़क पर सोमवार को पाडेर बथान स्थित पेट्रोल पंप के समीप एक दर्दनाक सड़क हादसे में पिता-पुत्र की मौत हो गई. जबकि चार अन्य लोग घायल हो गए. मिली जानकारी के अनुसार बरहरवा से गोड्डा जा रही एक ई रिक्शा सड़क किनारे खड़ी एक पिकअप बोलोरो से टकरा गई. टक्कर इतनी जोरदार थी कि ई रिक्शा के परखच्चे उड़ गए और उसमें सवार छह लोग गंभीर रूप से घायल हो गए. हादसे में गोड्डा जिले के निपनिया गांव निवासी 85 वर्षीय देवेंद्र महतो की मौके पर ही मौत हो गई. वहीं उनके 55 वर्षीय पुत्र वर्मानंद महतो ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया.घायलों में मृतक देवेंद्र महतो की पुत्र वधू 40 वर्षीय चंपा देवी, पोती 17 वर्षीय कुमकुम कुमारी, हंसडीहा थाना क्षेत्र के खसिया गांव निवासी 60 वर्षीय चितमन महतो तथा उनकी 45 वर्षीय पत्नी मयनमा देवी शामिल हैं.सभी घायलों का प्राथमिक उपचार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बरहेट में चिकित्सक डॉ. चंदन कुमार ने किया.

क्या झारखंड को है एक और हूल की जरूरत है?

डॉ. प्रमोदिनी हाँसदा

डॉ. राजकिशोर हांसदा

डॉ एस.के.झा, समाजशास्त्री

विजय सोनी

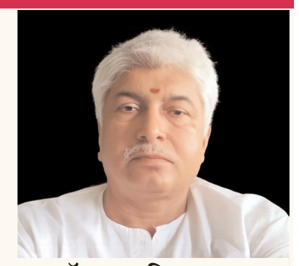
डॉक्टर अनिल ठाकुर

डॉ श्याम देव हेंब्रम

सुलेमान मरांडी

डॉक्टर सुशील टुडू

एस.के.झा.सुमन

दुमका। 30 जून 1855 को सिदो-कान्हू, चांद-भैरव और फूलो-झानो के नेतृत्व में सुलगने वाली %हूल% की चिंगारी सिर्फ ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ जंग नहीं थी, बल्कि वह जल-जंगल-जमीन की संप्रभुता और मानवीय गरिमा का वैचारिक घोषणापत्र था। आज साल 2026 में, जब झारखंड अपनी स्थापना के ढाई दशक पूरे कर चुका है, तब संघर्ष का मैदान बदल चुका है। आज का दुश्मन सामने खड़ा कोई अंग्रेज नहीं, बल्कि व्यवस्थागत खामियां हैं। हमारी शिक्षा डिग्रियों में सिमट रही है। युवा रोजगार के लिए पलायन कर रहे हैं। सामाजिक ताने-बाने पर व्यक्तिवाद हावी है और वैश्विक चकाचौंध में हमारी सांस्कृतिक जड़ें कमजोर हो रही हैं। इस विशेष विमर्श में 8 प्रबुद्ध हस्ताक्षर इस बात को टटोल रहे हैं कि क्या आज के झारखंडी समाज को अपनी सोई हुई चेतना को जगाने के लिए एक नए वैचारिक हूल की जरूरत है?

संताल परगना : गरीबी नहीं, अशिक्षा असली संकट

झारखंड में आज एक और वैचारिक हूल (आंदोलन) की सख्त जरूरत है। संताल परगना क्षेत्र की सबसे बड़ी और गंभीर समस्या गरीबी नहीं, अशिक्षा है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्ता का भारी अभाव है। विद्यालयों में बच्चों को मिड-डे मील तो मिल रहा है, लेकिन सही मायने में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है। शिक्षा ही वह शक्ति है जो प्रगति के मार्ग खोलती है। बिना गुणात्मक शिक्षा के लोगों में वैचारिक चेतना जगाना और किसी भी प्रकार का वैचारिक आंदोलन खड़ा करना असंभव है।

डॉ. प्रमोदिनी हाँसदा, देवघर हिंदी विद्यापीठ की कुलपति

सांस्कृतिक चेतना ही असली विकास : 1855 के हूल से लें प्रेरणा

सांस्कृतिक पहचान के बिना विकास अधूरा है÷ 1855 का हूल अपनी अस्मिता को बचाने की लड़ाई थी। आज हमारी संस्कृति और भाषाएं संक्रमण के दौर से गुजर रही हैं। जब तक झारखंड की प्राथमिक शिक्षा में स्थानीय भाषाओं और लोक-संस्कृति को गहराई से नहीं जोड़ा जाएगा, तब तक हमारी युवा पीढ़ी अपनी जड़ों से कटी रहेगी। वैचारिक हूल का पहला कदम अपनी सांस्कृतिक चेतना को जगाना है।

डॉ. राजकिशोर हांसदा, जनजाति सुरक्षा मंच के सदस्य एवं राष्ट्रीय सह संयोजक

झारखंडी समाज : वैचारिक चेतना की ज़रूरत

बदलते समाज में अधिकारों के प्रति सजगता जरूरी आज का झारखंडी समाज आंतरिक विरोधाभासों और राजनीतिक भटकाव का शिकार है। हूल का मूल मंत्र था सामूहिकता । आज व्यक्तिवाद हावी हो रहा है। समाज में जब तक विस्थापन, मानव तस्करी और डायन प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ जमीन पर वैचारिक चेतना नहीं फैलेगी, तब तक 1855 के शहीदों का सपना अधूरा रहेगा।

डॉ एस.के.झा, समाजशास्त्री

झारखंड का अधूरा संकल्प चेहरे बदले, पर नीति के केंद्र से गायब है अंतिम व्यक्ति

राजनीतिक इच्छाशक्ति के बिना वैचारिक बदलाव असंभव। झारखंड राज्य जिस उद्देश्य के लिए बना था, क्या वह पूरा हुआ? सत्ता बदलती है, लेकिन व्यवस्था नहीं बदलती। जब तक नीति निर्धारण के केंद्र में झारखंड का अंतिम व्यक्ति (गरीब, किसान, मजदूर) नहीं होगा, तब तक कोई भी बदलाव बेमानी है। नीतिगत हूल की शुरुआत राजनीतिक शुचिता से ही संभव है।

विजय सोनी, समाजसेवी, झारखंड आंदोलनकारी एवं राजनीतिक विश्लेषक

खनिज हमारा, रोजगार क्यों पराया?

संसाधनों की प्रचुरता के बीच रोजगार का अकाल क्यों? झारखंड देश को खनिज देता है, लेकिन यहां के युवा रोजगार के लिए दूसरे राज्यों में पलायन करने को मजबूर हैं। यह नीतिगत विफलता है। हमें एक ऐसी औद्योगिक और कृषि नीति की जरूरत है जो स्थानीय युवाओं को रोजगार दे। वैचारिक हूल का मतलब अब यह होना चाहिए कि हम अपने संसाधनों पर अपना आर्थिक हक मांगें।

डॉक्टर अनिल ठाकुर (वरिष्ठ अर्थशास्त्री)

डिजिटल दौर में युवाओं को पहचाननी होगी अपनी ताकत

आज का युवा सोशल मीडिया पर सक्रिय है, लेकिन वह वैचारिक रूप से भ्रमित है। 1855 में सूचना के साधन नहीं थे, फिर भी लाखों लोग एकजुट हो गए। आज सब कुछ होते हुए भी हम बिखरे हुए हैं। युवाओं को रील्स और सतही विमर्श से बाहर निकलकर राज्य के वास्तविक मुद्दों जैसे स्थानीयता, नियोजन और शिक्षा पर तार्किक बहस शुरू करनी होगी।

डॉ श्याम देव हेंब्रम, अध्यक्ष, छात्र समन्वय समिति, एसकेएमयू

बौद्धिक हूल : बदलते झारखंड में आदिवासी अस्मिता और विकास की नई राह

1855 का संताल हूल केवल अंग्रेजों के खिलाफ हथियारबंद जंग नहीं था। यह जल, जंगल, जमीन और आत्मसम्मान की रक्षा का महासंकल्प था। आज 2026 में झारखंड के सामने विस्थापन, बेरोजगारी और सांस्कृतिक पहचान खोने जैसी गंभीर चुनौतियाँ हैं। इन परिस्थितियों से निपटने के लिए अब तीर-धनुष की नहीं, बल्कि उच्च शिक्षा, जागरुकता और संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजगता की आवश्यकता है। सिदो-कान्हू के सपनों का झारखंड तभी साकार होगा जब युवा बौद्धिक रूप से सशक्त होंगे। आज हमें एकजुट होकर कुरीतियों और शोषण के खिलाफ एक नया %वैचारिक हूल% फूंकना होगा, ताकि आदिवासी अस्मिता और आधुनिक विकास दोनों साथ चल सकें।

सुलेमान मरांडी, मीडिया प्रभारी, गोटा भारोत सिदो कान्हू हूल बैसी

जागो वीर के वंशजों : नशा छोड़ो, अधिकार पहचानो

1855 के संताल विद्रोह में सिदो और कान्हू ने 'आबोवाक् दिसोम, आबोवाक् राज' का सपना देखा था अर्थात हमारा देश, हमारा शासन। आज झारखंड राज्य बनने के बावजूद आदिवासी समाज जल, जंगल, जमीन और अधिकारों के सवाल पर अब भी संघर्षरत है। योजनाएँ बनती हैं, पर ज़मीन पर नहीं उतरतीं। शिक्षा की कमी और नशाखोरी समाज को कमजोर कर रही है। यदि आदिवासी समाज को शोषण से मुक्त होना है, तो चेतना, शिक्षा और आत्मसंघर्ष का नया हूल खड़ा करना होगा, तभी सिदो-कान्हू का सपना पूरा होगा।

डॉक्टर सुशील टुड,सहायक प्राध्यापक, संताली विभाग, सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय दुमका

झारखंड को फिर से वैचारिक हूल की आवश्यकता : कुनुल कांदिर

संवाददाता

दुमका। हूल का सीधा और स्पष्ट अर्थ है–क्रांति। 30 जून 1855 को सिदो, कान्हू, चांद और भैरव के कुशल नेतृत्व में संथाल परगना की धरती पर हूल का शंखनाद किया गया था। दुमका के भोगनाडीह गांव से इस ऐतिहासिक क्रांति की शुरुआत हुई थी, जिसमें हजारों की संख्या में स्थानीय संथालों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। इस महासंग्राम में सिदो-कान्हू की वीर बहनों, फूलो एवं झानो ने भी अपनी वीरता का परिचय देते हुए मुख्य भूमिका निभाई थी।

हूल दिवस मूल रूप से अंग्रेजों और शोषक जमींदारों के अत्याचारों व दमनकारी नीतियों के खिलाफ हुए ऐतिहासिक संथाल विद्रोह की याद में मनाया जाता है। यह दिन इस क्रांति में अपने प्राणों की आहुति देने वाले वीर शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि देने का अवसर है।

आज के दौर में झारखंड को फिर से एक और वैचारिक हूल (वैचारिक क्रांति) की सख्त आवश्यकता है। ऐसा इसलिए क्योंकि आज भी यहां का आम समाज और संथाल जनजातियां भुखमरी, अशिक्षा, बीमारी एवं बेरोजगारी के संकट से जूझ रही हैं। उन्हें उनके बुनियादी अधिकारों–जल, जंगल और जमीन से बेदखल किया जा रहा है।

अतः समय की मांग है कि हम हूल क्रांति के गौरवशाली इतिहास से प्रेरणा लें। हमें आज के दौर के अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के खिलाफ एकजुट होकर पूरी ताकत से लड़ना होगा।

प्रोफेसर डॉ. कुनुल कांदिर
कुलपति, सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका

हूल हथियारों से नही जागरूकता और नीतिगत स्तर पर लड़ा जाना चाहिए : आलोक सोरेन

1855 का संताल हूल जल, जंगल और जमीन की रक्षा का महासंग्राम था। आज 2026 परिस्थिति के अनुसार झारखंड को एक और वैचारिक हूल की जरूरत है, बेहद प्रासंगिक है। आज राज्य के सामने अपनी अस्मिता, संस्कृति और संसाधनों को बचाने की नई चुनौतियाँ हैं। यह वैचारिक हूल हथियारों से नहीं, बल्कि शिक्षा, अधिकारों के प्रति जागरूकता और नीतिगत स्तर पर लड़ा जाना चाहिए। झारखंड के युवाओं को अपनी धरोहर सुरक्षित रखने और शोषण के खिलाफ एकजुट होने के लिए इस वैचारिक क्रांति की सख्त जरूरत है।

आलोक सोरेन,विधायक शिकारीपाड़ा

आदिवासी अस्मिता और जल-जंगल-जमीन के लिए झारखंड को एक और हूल की जरूरत : सुनील सोरेन

संवाददाता

दुमका। दुमका लोकसभा के पूर्व सांसद व भाजपा नेता सुनील सोरेन ने हुल पर दोटूक शब्दों में कहा कि आज के दौर में झारखंड को बिल्कुल एक और हूल (क्रांति) की जरूरत है। सुनील सोरेन ने आगाह किया कि जब तक हमारी वैचारिक क्रांति और संघर्ष की मशाल नहीं जलेगी, तब तक आदिवासियों का अस्तित्व और उनकी पहचान सुरक्षित नहीं रह पाएगी।

पूर्व सांसद ने संताल विद्रोह के अमर नायकों को याद करते हुए कहा कि सिदो-कान्हू, चांद-भैरव और वीरांगना फूलो-झानो ने अपनी माटी, संस्कृति, धर्म और जमीन को बचाने के लिए अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के खिलाफ महासंग्राम छेड़ा था। उन्होंने कहा, हमारे वीर पुरखों ने जल-जंगल-जमीन की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, लेकिन विदेशी हुकूमत से कभी समझौता नहीं किया।

सुनील सोरेन ने मौजूदा हालातों पर चिंता जताते हुए कहा कि आज 2026 में भी आदिवासियों के सामने अपनी पहचान को बचाए रखने का बड़ा संकट खड़ा है।

स्वामी, प्रकाशक,मुद्रक एवं संपादक अशोक कुमार द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस,धनबाद गोविंदपुर मेन रोड अशोक नगर, केजी आश्रम,गोसांईडीह धनबाद झारखंड से मुद्रित तथा संताल एक्सप्रेस कार्यालय दंगालपाड़ा, हिजला रोड, दुमका (झारखंड)से प्रकाशित, RNI NO. JHABIL/2018/76383, सलाहकार संपादक चंदन मित्र, प्रबंध संपादक सिद्धार्थ कुमार, स्थानीय संपादक चुण्डा सोरेन सिपाही फोन न. 7367009287, 9771486686

हूल दिवस पर वीर सिदो-कान्हू की प्रतिमा का अनावरण, विस अध्यक्ष ने दी शहीदों को श्रद्धांजलि

संताल एक्सप्रेस

नाला (जामताड़ा)। हूल दिवस (30 जून) की पूर्व संध्या पर सोमवार को नाला प्रखंड के धोबना पंचायत अंतर्गत कपासडांगाल मौजा में अमर क्रांतिकारी वीर सिदो-कान्हू की प्रतिमा का अनावरण झारखंड विधानसभा के अध्यक्ष रविन्द्रनाथ महतो ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, सामाजिक कार्यकर्ता और ग्रामीण मौजूद रहे। प्रतिमा अनावरण के बाद आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधानसभा अध्यक्ष रविन्द्रनाथ महतो ने कहा कि हूल केवल एक विद्रोह नहीं, बल्कि जल, जंगल, जमीन, स्वाभिमान और आदिवासी अस्मिता की रक्षा का अमर उद्घोष है। उन्होंने कहा कि वीर सिदो-कान्हू, चाँद-भैरव तथा फूलो-झानो का त्याग और बलिदान आने वाली पीढ़ियों को राष्ट्रभक्ति, सामाजिक न्याय और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सदैव प्रेरित करता रहेगा।

उन्होंने हुल दिवस के अवसर पर वीर सिदो-कान्हू सहित सभी अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ उनका अदम्य साहस और संघर्ष भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर है। कार्यक्रम में पद्म भूषण से सम्मानित दिवंगत दिशोम गुरु शिबू सोरेन को भी श्रद्धांजलि अर्पित की गई और उनके योगदान को याद किया गया। कार्यक्रम में बड़ापुर पंचायत के मुखिया दिलीप टुडू, मांझी हाड़ाम, प्रखंड अध्यक्ष उज्जवल भट्टाचार्य, बासुदेव हांसदा, जनार्दन भंडारी, सफीक अंसारी, भव सिंधु लायक, सलीम जहाँगीर, दयामय घोष,आशीष तिवारी, सुबोध दास, अनंत मंडल, पूर्व मुखिया नुनुधन किस्कू, कालोसोणा गोराई सहित अनेक जनप्रतिनिधि, कार्यकर्ता एवं स्थानीय ग्रामीण उपस्थित रहे। समारोह में हुल आंदोलन के अमर शहीदों के बलिदान को याद करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया गया।

झारखंड में क्या एक और हूल की आवश्यकता है?

संताल एक्सप्रेस

अधिकारों की अनदेखी से बढ़ता है असंतोष : सर्वजीत

जल, जंगल और जमीन हमारी पहचान और जीवन का आधार हैं। अगर हमारे अधिकारों की अनदेखी होती रही, तो लोगों में असंतोष बढ़ेगा।

सर्वजीत झा, अधिवक्ता गोड्डा

हूल से पहले जन जागरूकता जरूरी : फनी लाल

आज के समय में हूल का मतलब सिर्फ विद्रोह नहीं होना चाहिए, बल्कि जागरूकता, शिक्षा और लोकतांत्रिक संघर्ष भी होना चाहिए। संविधान के दायरे में रहकर अपने अधिकारों की लड़ाई अधिक प्रभावी हो सकती है।

ईमानदार संवाद जरूरी : संजीव

झारखंड में भूमि अधिकार, विस्थापन और वनाधिकार जैसे मुद्दे अब भी गंभीर हैं। सरकार, समुदाय और नागरिक संगठनों के बीच ईमानदार संवाद जरूरी है।

लोकतांत्रिक संस्थाओं का प्रभावी उपयोग जरूरी : सुरजीत

इतिहास का हूल अन्याय के खिलाफ एक महत्वपूर्ण जनआंदोलन था। आज की परिस्थितियाँ अलग हैं। इसलिए जरूरत है कि संवैधानिक अधिकारों और लोकतांत्रिक संस्थाओं का प्रभावी उपयोग किया जाए।

पारदर्शी तरीके से बात की जरुरत : सच्चिदानंद

विकास भी जरूरी है और लोगों के अधिकार भी। यदि सरकार और कंपनियाँ स्थानीय लोगों से पारदर्शी तरीके से बात करें और उचित मुआवजा तथा रोजगार दें

प्रेमनंदन मंडल । हूल दिवस केवल अतीत के शहीदों को नमन करने का औपचारिक दिन नहीं है, बल्कि यह अपनी माटी और अधिकारों की रक्षा के संकल्प को दोहराने का दिन है।

सौरभ पाराशर उर्फ बच्चू झा:आज गोड्डा के स्थानीय युवाओं को रोजगार के लिए बड़े पैमाने पर दूसरे राज्यों में पलायन करना पड़ रहा है।

प्रियंका सिन्हा : हूल दिवस हमें अपनी लोक संस्कृति, भाषा और जल-जंगल-जमीन की मुकम्मल हिफाजत के लिए एकजुट होना सिखाता है।

मोहम्मद इदरीश:सीएनटी और एसपीटी एक्ट जैसी सुरक्षात्मक व्यवस्थाओं को कड़ाई से लागू रखना औरव ग्राम सभाओं को मजबूत करना जरूरी है।

तराना खातुन:जल, जंगल और जमीन से सबसे ज्यादा जुड़ाव महिलाओं और जमीनी स्तर के परिवारों का होता है।

शशि यादव : आज की युवा पीढ़ी को हूल क्रांति के वास्तविक इतिहास और पुरखों के बलिदान से प्रेरणा लेनी चाहिए।

कामरान अशर्फी :आज के समय में हूल की जरूरत एक वैचारिक, कानूनी लोकतांत्रिक आंदोलन के रूप में है। **सुमन कुमार दास :** गोड्डा के स्थानीय विकास में यहाँ के मूल निवासियों और स्थानीय व्यापारियों को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

अंकुल कश्यप :सिमटते जंगल और पानी की गहराती समस्या एक गंभीर चेतावनी हैं।

नामजद प्राथमिकी अभियुक्त गिरफ्तार

मेहरमा। प्रखंड थाना पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए नामजद प्राथमिक अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। पुलिस की इस कार्रवाई को क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार,भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तहत मेहरमा थाना में दर्ज किया गया था। मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने त्वरित अनुसंधान शुरू किया और छापेमारी कर नामजद प्राथमिक अभियुक्त अंकित रविदास (22 वर्ष), पिता अर्जुन रविदास, निवासी ग्राम पहाड़खंड, थाना मेहरमा, जिला गोड्डा को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने अभियुक्त से पूछताछ की तथा आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी की। इसके उपरांत उसे माननीय न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, जहां से न्यायालय के आदेश पर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।मेहरमा थाना पुलिस ने बताया कि किसी भी प्रकार के अपराध या कानून-व्यवस्था भंग करने की कोशिश करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। पुलिस का कहना है कि अपराध नियंत्रण, फरार अभियुक्तों की गिरफ्तारी तथा क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए लगातार अभियान चलाया जा रहा है।

पर्यटन विकास और एसआईआर पर प्रशासन का जोर

जामताड़ा। जिले में पर्यटन विकास और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम को लेकर सोमवार को समाहरणालय सभागार में उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी आलोक कुमार की अध्यक्षता में दो महत्वपूर्ण बैठकें आयोजित की गईं। बैठकों में पर्यटन स्थलों के विकास कार्यों की समीक्षा के साथ निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने की रणनीति पर विस्तार से चर्चा हुई।पर्यटन संवर्द्धन समिति की बैठक में उपायुक्त आलोक कुमार ने लादना डैम, पर्वत विहार, मालंचा पहाड़, दुखिया बाबा मंदिर, देवलेश्वर धाम, गिरधारी मंदिर, सिंहवाहिनी मंदिर एवं मां चंचला मंदिर सहित अधिसूचित पर्यटन स्थलों के सौंदर्यीकरण और जीर्णोद्धार कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने लादना डैम में शीघ्र बोटिंग सुविधा शुरू करने, पार्कों के बेहतर रखरखाव, फाउंटेन चालू कराने, किड्स प्ले जोन विकसित करने तथा प्रमुख स्थलों पर साइनेज लगाने के निर्देश दिए।

झाड़ी में शव मिलने से सनसनी

जामताड़ा। जामताड़ा जिले के करमाटांड थाना क्षेत्र अंतर्गत कालाझरिया के समीप जामुनतर गांव में सोमवार को एक अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। शव मिलने की सूचना पर आसपास के क्षेत्र के लोग बड़ी संख्या में घटनास्थल पर जुट गए। जानकारी के अनुसार, सोमवार सुबह जामुनतर गांव के समीप अचानक तेज दुर्गंध फैलने लगी। दुर्गंध आने पर स्थानीय ग्रामीण आसपास के क्षेत्र में पहुंचे, जहां झाड़ियों के बीच एक अज्ञात व्यक्ति का शव पड़ा हुआ मिला। इसके बाद ग्रामीणों ने तत्काल इसकी सूचना करमाटांड थाना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही करमाटांड थाना प्रभारी विकास कुमार तिवारी पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और मामले की जांच-पड़ताल शुरू कर दी। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जामताड़ा भेज दिया है। स्थानीय ग्रामीणों एवं राहगीरों का कहना है कि शव की स्थिति को देखते हुए व्यक्ति की मौत करीब चार से पांच दिन पहले हुई होने की आशंका है। हालांकि, शव आखिर कब से घटनास्थल पर पड़ा था, इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हो सकी है। समाचार लिखे जाने तक मृतक की पहचान नहीं हो पाई थी। पुलिस मृतक की शिनाख्त कराने का प्रयास कर रही है। वहीं, पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का स्पष्ट खुलासा हो सकेगा। फिलहाल पुलिस सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मामले की जांच में जुटी हुई है।

एसआईआर को लेकर प्रशिक्षण आयोजित

संताल एक्सप्रेस मंडरो। मंडरो प्रखंड सभागार में सोमवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी मेघनाथ उरांव की उपस्थिति में एसआईआर को लेकर एक दिवसीय प्रशिक्षण वॉलिंटियर को दिया गया. प्रशिक्षण में बीएलओ को मतदाताओं के बीच फार्म वितरण करने एवं फार्म को मतदाताओं से जमा लेना व सही-सही भरने का कार्य 30 जून से 29 जुलाई तक बीएलओ, बीएलए व वॉलिंटियर अपने अपने क्षेत्र में कार्य प्रारंभ करेंगे. जबकि सभी मतदाताओं के घर-घर जाकर फार्म वितरण करने एवं फार्म भराकर एक पर्ची उठाव करेंगे. जिसमें जन्म तिथि एवं जन्म स्थान और नागरिकता,भारतीय सभी बिंदुओं पर प्रशिक्षण में बताया गया. इस संबंध में प्रखंड विकास पदाधिकारी ने बताया कि एक मतदाता को दो फार्म देना है और एक फार्म पुरे दस्तावेज के साथ वापस लेना है, और दुसरे फार्म को रिसीव कर मतदाता को दे देना है.मौके पर दर्जनों वॉलिंटियर प्रशिक्षण सत्र में उपस्थित थे.

पुरी की तर्ज पर साहिबगंज में निकली भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा

साहिबगंज । प्रभु श्री जगन्नाथ स्नान रथ यात्रा व स्नान महोत्सव के पावन अवसर पर साहिबगंज जिला मुख्यालय के श्री श्री जगन्नाथ सेवा समिति की ओर से प्रभु श्री जगन्नाथ स्नान रथ यात्रा सोमवार की शाम

साहिबगंज नगर के साक्षरता चौक काटरगंज दुर्गा मंदिर प्रांगण से निकाली गई. रथयात्रा मंदिर प्रांगण से निकलकर पुलिस लाइन, सुभाष कॉलोनी, पोखरिया पूर्वी फाटक, कॉलेज रोड, ग्रीन होटल चौक, स्टेशन चौक, पटेल चौक, चौक बाजार होते हुए भरतिया कॉलोनी स्थित अयोध्या धाम पहुंची. रथयात्रा में जय जगन्नाथ का खूब जयकारा लगाया. भक्त झूमते नाचते प्रभु जगन्नाथ को रस्सी खींचकर नगर भ्रमण कराया.वही अयोध्या धाम में मंत्रोच्चारण के साथ विधि विधान के अनुसार प्रभु जगरनाथ का भव्य स्नान गंगा जल, आम रस, गुलाब जल, दही, दूध, घी, सहस्त्र धारा से स्नान कराया गया ओर प्रभु का श्रृंगार करके पूजन आरती कर 56 भोग लगाया गया. वही भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया.मौके पर समिति अध्यक्ष अविनाश नरसरिया, सचिव कुमार दीपांशु, कोषाध्यक्ष आनंद ठाकुर, सदस्य चंदन कुमार, अभिषेक, निखिल गुप्ता, सूरज, अनुज, आदित्य, गौरव, अंकुश, सुमित, विशाल, ऋषभ सहित सैकड़ो महिला, पुरुष व बच्चे शामिल थे.

जामताड़ा में हूल दिवस पर लोगों ने दी शहीदों को श्रद्धांजलि

1. हूल दिवस केवल इतिहास नहीं, आज भी संघर्ष की प्रेरणा : सेवानिवृत्त शिक्षक महेंद्र टुडू

जामताड़ा। हूल दिवस की प्रासंगिकता पर सेवानिवृत्त शिक्षक महेंद्र टुडू ने कहा कि 1855 का संताल हूल केवल अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह नहीं था, बल्कि जल, जंगल और जमीन की रक्षा का आंदोलन था। आज भी आदिवासी क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार और विस्थापन जैसे मुद्दे बने हुए हैं।

2. विकास और आदिवासी अधिकारों में संतुलन जरूरी : मुखिया सुखेंद्र टुडू

जामताड़ा। मुखिया सुखेंद्र टुडू ने कहा कि हूल दिवस हमें यह याद दिलाता है कि विकास तभी सार्थक है जब उसमें स्थानीय लोगों की भागीदारी हो।

3. शिक्षा बने आधुनिक हूल का सबसे बड़ा हथियार : सेवानिवृत्त शिक्षक सुनील कुमार बास्की

जामताड़ा। सेवानिवृत्त शिक्षक सुनील कुमार बास्की ने कहा कि आज का हूल हथियारों से नहीं, बल्कि शिक्षा, तकनीक और जागरूकता से लड़ा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जल, जंगल और जमीन की रक्षा को समाज को कानून की जानकारी और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी बढ़ानी होगी।

4. हूल दिवस सामाजिक न्याय का प्रतीक : अधिवक्ता संचिता दाँ

जामताड़ा। अधिवक्ता संचिता दाँ ने कहा कि हूल दिवस सामाजिक न्याय और अधिकारों की लड़ाई का प्रतीक है।

5. प्रकृति बची तो संस्कृति बचेगी : गुरु हड़ाम रेणु मुर्मू

जामताड़ा। गुरु हड़ाम रेणु मुर्मू ने कहा कि हूल दिवस का सबसे बड़ा संदेश प्रकृति संरक्षण है। जल, जंगल और जमीन आदिवासी जीवन की आत्मा हैं।

6. ग्रामसभा को मजबूत करना ही असली श्रद्धांजलि : सामाजिक कार्यकर्ता सुनील हांसदा

जामताड़ा। सामाजिक कार्यकर्ता सुनील हांसदा ने कहा कि यदि ग्रामसभाओं को मजबूत किया जाए तो जल, जंगल और जमीन से जुड़े अधिकांश विवाद समाप्त हो सकते हैं।

7. युवाओं को इतिहास से सीखकर भविष्य गढ़ना होगा : भारतेंदु मुर्मू

जामताड़ा। भारतेंदु मुर्मू ने कहा कि हूल दिवस केवल अतीत का गौरव नहीं बल्कि भविष्य की दिशा भी है। उन्होंने कहा कि युवाओं को सिद्धो-कान्हू, चांद-भैरव और फूलो-झानो के संघर्ष से प्रेरणा लेकर समाज निर्माण में योगदान देना चाहिए।

8. अधिकारों के साथ जिम्मेदारी भी जरूरी : प्रो कृष्ण मोहन साह

जामताड़ा। प्रो कृष्ण मोहन साह ने कहा कि झारखंड में विकास और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के बीच संतुलन जरूरी है। उन्होंने कहा कि स्थानीय लोगों को रोजगार, शिक्षा और पुनर्वास की बेहतर व्यवस्था मिले तो विवाद कम होंगे। उन्होंने कहा कि हूल दिवस अधिकारों के साथ जिम्मेदार नागरिक बनने का भी संदेश देता है।

9. आदिवासी संस्कृति का संरक्षण समय की मांग : मुखिया खुशबू टुडू

जामताड़ा। मुखिया खुशबू टुडू ने कहा कि जल, जंगल और जमीन केवल संसाधन नहीं बल्कि आदिवासी संस्कृति की पहचान हैं।

10. लोकतंत्र में संवाद ही सबसे बड़ा समाधान : समाजसेवी संजय पाहन

जामताड़ा। समाजसेवी संजय पाहन ने कहा कि हूल दिवस अन्याय के खिलाफ संघर्ष का प्रतीक है, लेकिन आज लोकतांत्रिक व्यवस्था में संवाद, नीति निर्माण और जनभागीदारी के माध्यम से समस्याओं का समाधान संभव है।

सात लोगों को बंधक से छुड़ाने पहुंची पुलिस टीम पर हमला

उधवा। राधानगर थाना क्षेत्र के उत्तर पलाशगाछी पंचायत के अजुल टोला में बीते रात रुपया लेन-देन के मामले सात लोगों को बंधक बनाकर रखने की सूचना पर पहुंचे पुलिस के साथ ग्रामीणों ने हाथापाई कर पुलिस वाहन को क्षतिग्रस्त कर दिया.इधर पुलिस पर हमला की सूचना मिलने पर एसडीपीओ विमलेश त्रिपाठी, पुलिस निरीक्षक राजीव रंजन,तालझारी,राजमहल व तीन पहाड़ थाना पुलिस दल-बल के साथ घटना स्थल पहुंच कर कथित बंधक बनाएं लोगों को मुक्त कराया. जानकारी के अनुसार पश्चिमी प्राणपुर के एक युवक जो मुम्बई में नारियल का करोबार में अजुल टोला के एक युवक पर बकाया रुपया मांगने के लिए रात में पहुंचे थे.इस दौरान दोनों पक्षों के बीच बकझक होने के बाद प्राणपुर से पहुंचे सात लोगों को अजुल टोला में बंधक बनाकर रखा था.बंधक बनाकर रखें पीड़ित लोगों के परिजनों ने राधानगर थाना शिकायत कर बंकध बनाकर मारपीट करने का आरोप लगाया था.रात करीब 12 बजे राधानगर थाना पुलिस घटना स्थल पर पहुंचे और बंधक बनाकर रखें लोगों को मुक्त कराने का प्रयास किया.इसी के विरोध बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पुलिस पर हमला कर दिया. हालांकि देर रात पुलिस ने सभी को मुक्त कराकर थाना लाया.इस संबंध में थाना प्रभारी अमर कुमार मिंज ने बताया कि मामले को लेकर पुलिस पर हमला करने, पुलिस के सरकारी वाहन को क्षतिग्रस्त करने एवं सरकारी काम में बाधा डालने को लेकर बीस नामजद और 40 से 50 अज्ञात लोगों पर केस दर्ज कर पुलिस छानबीन शुरू कर दिया है.

तीन दिवसीय राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान

गोड्डा । जिले में 28 से 30 जून तक आयोजित होने वाले तीन दिवसीय राष्ट्रीय पल्स पोलियो अभियान-2026 के सफल संचालन को लेकर शनिवार को सिविल सर्जन कार्यालय में मीडिया ब्रीफिंग का आयोजन किया गया। सिविल सर्जन डॉ. एस.सी. शर्मा की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में अभियान की तैयारियों, कार्ययोजना एवं जनजागरूकता कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी गई।सिविल सर्जन डॉ. शर्मा ने बताया कि इस वर्ष अभियान का संदेश दो बूंद हर बार, पोलियो पर जीत रहे बरकरार रखा गया है। उन्होंने कहा कि 28 जून को बूथ दिवस मनाया जाएगा, जिसके तहत सुबह आठ बजे से शाम चार बजे तक जिले के सभी निर्धारित पोलियो बूथों पर शून्य से पांच वर्ष तक के बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जाएगी। वहीं 29 और 30 जून को स्वास्थ्य विभाग की टीमें घर-घर जाकर ऐसे बच्चों को दवा पिलाएंगी, जो किसी कारणवश बूथ तक नहीं पहुंच पाएंगे। उन्होंने बताया कि जिला स्तरीय अभियान का शुभारंभ 28 जून की सुबह आठ बजे सदर अस्पताल, गोड्डा से किया जाएगा। इसके साथ ही जिले के सभी प्रखंडों में संबंधित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों से भी अभियान की शुरुआत होगी।सिविल सर्जन ने बताया कि जिले में कुल 2,85,788 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए 1,090 बूथ, 1,159 टीमें, 2,318 वैक्सीनेटर, 237 सुपरवाइजर, 104 सब-डिपो, 29 ट्रांजिट टीम तथा 33 मोबाइल टीमों की प्रतिनियुक्ति की गई है, ताकि कोई भी बच्चा पोलियो की दवा से वंचित न रह जाए। उन्होंने कहा कि अभियान की सफलता के लिए सभी स्वास्थ्यकर्मियों का प्रशिक्षण पूरा कर लिया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से वैक्सीनेटरों एवं सुपरवाइजरों को प्रशिक्षित किया गया है।

गोड्डा में भरत तिवारी की स्मृति में उमड़ी भीड़

गोड्डा । स्वर्गीय भरत तिवारी की स्मृति में रविवार की संध्या गोड्डा शहर श्रद्धा, सम्मान और एकजुटता के भाव से सराबोर नजर आया। परशुराम युवा वाहिनी, गोड्डा के तत्वावधान में विशाल

कैंडल मार्च निकालकर स्वर्गीय भरत तिवारी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कैंडल मार्च अशोक स्तंभ से प्रारंभ होकर कारगिल चौक होते हुए हटिया चौक स्थित शहीद भगत सिंह स्मारक तक पहुंचा, जहां बड़ी संख्या में मौजूद युवाओं एवं समर्थकों ने मोमबत्तियां जलाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।पूरे मार्च के दौरान अनुशासन, उत्साह और सामाजिक एकजुटता का अद्भुत दृश्य देखने को मिला।

एसआईआर को लेकर बीएलओ और कांग्रेस के बीएलए-2 की बैठक

बरहरवा। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार चलाए जा रहे मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण-2026 अभियान के तहत सोमवार को बरहरवा प्रखंड के विभिन्न मतदान केंद्रों

पर बीएलओ एवं कांग्रेस पार्टी के बीएलए-2 की संयुक्त बैठक आयोजित की गई. बैठक में मतदाता सूची को त्रुटिरहित एवं अद्यतन बनाने, प्रत्येक पात्र नागरिक तक विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान की जानकारी पहुंचाने तथा नए मतदाताओं का नाम मतदाता सूची में जोड़ने को लेकर विस्तार से चर्चा की गई.बैठक का आयोजन रामनगर पंचायत के ईटावा पोखर विद्यालय, पंचायत भवन तथा कन्हाई डांग विद्यालय में किया गया. इसमें संबंधित बूथ स्तरीय अधिकारी, कांग्रेस के बूथ स्तरीय अभिकर्ता-2, स्थानीय कार्यकर्ता एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे.

स्वच्छता अभियान में एक टन कचरे का निष्पादन

साहिबगंज। साहिबगंज वन प्रमंडल के द्वारा जिले के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल मोती झरना में विशेष स्वच्छता अभियान वन प्रमंडल पदाधिकारी प्रबल गर्ग के नेतृत्व मेंसोमवार को चलाया गया. मौके पर वन विभाग के

अधिकारियों एवं कर्मियों, वन सुरक्षा समिति के सदस्यों ने संयुक्त रूप से मोती झरना परिसर की साफ-सफाई की. इस दौरान लगभग एक टन प्लास्टिक एवं अन्य ठोस अपशिष्ट एकत्र कर उसका वैज्ञानिक ढंग से निष्पादन किया गया. अभियान के उपरांत पर्यटन स्थल का प्राकृतिक सौंदर्य और अधिक स्वच्छ एवं आकर्षक रूप में निखरकर सामने आया.मौके पर वन प्रमंडल पदाधिकारी प्रबल गर्ग ने पर्यटकों से मोती झरना की स्वच्छता बनाएं रखने में सक्रिय सहयोग करने की अपील की. उन्होंने कहा कि प्राकृतिक एवं पर्यटन स्थलों का संरक्षण प्रत्येक नागरिक का सामूहिक दायित्व है. उन्होंने आगंतुकों से अनुरोध किया कि परिसर में प्लास्टिक, बोतलें, खाद्य सामग्री के रैपर अथवा अन्य किसी प्रकार का कचरा न फैलाएं तथा पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छ पर्यटन को बढ़ावा देने में अपना योगदान दें.मंडई गांव के आदिवासी परिवारों के बीच 60 धुआं रहित उन्नत चूल्हों का वितरण किया गया.

फतेहपुर में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

फतेहपुर (जामताड़ा)। डिग्री कॉलेज नाला (फतेहपुर) में सोमवार को विशेष गहन पुनरीक्षण (स्ढ्क्र) अभियान चलाया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मतदाता सूची पुनरीक्षण, मतदाता पंजीकरण एवं आवश्यक

दस्तावेजों की जानकारी देकर जागरूकता बढ़ाना और उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जोड़ना है। मौके पर मुख्य रूप से उपस्थित प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रेम कुमार दास ने विद्यार्थियों को एसआईआर अभियान का महत्व समझाया। उन्होंने छात्रों को निष्पक्ष और जिम्मेदार मतदान करने की शपथ दिलाई। कहा कि छात्र अपने घर परिवार, मित्रों और पड़ोसियों को भी मतदान के लिए जागरूक करें। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ अमर कुमार दास ने विद्यार्थियों को एसआईआर प्रक्रिया के उद्देश्यों और लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसके महत्व के बारे में जानकारी प्रदान किए। राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ स्वपन किस्कू ने एसआईआर अभियान के प्रति नागरिक कर्तव्य एवं उद्देश्य विषय पर विस्तृत जानकारी देते हुए स्वयंसेवकों एवं विद्यार्थियों से अधिक से अधिक लोगों तक जागरूकता संदेश पहुंचाने का आग्रह किया। इस अवसर पर प्रभारी बीपीआरओ प्रियंका कुमारी, डॉ अरविंद कुमार सिंह डॉ संतोष कुमार पत्रलेख, डॉ राकेश कुमार, डॉ होडिंग मरांडी, डॉ दीनानाथ ठाकुर, डॉ अमृत कुमार महतो समेत सैकड़ो की संख्या में स्वयंसेवक एवं छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

एसआईआर अभियान को लेकर प्रशासन सक्रिय, वॉलंटियर्स को मिला प्रशिक्षण

जामताड़ा। जामताड़ा में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम-2026 को सफल बनाने के लिए जिला प्रशासन ने तैयारियां तेज कर दी हैं। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त आलोक कुमार के निर्देश पर

सोमवार को एसजीएसवाई प्रशिक्षण भवन में नाला विधानसभा क्षेत्र के सभी मतदान केंद्रों के लिए नामित वॉलंटियर्स को दो पालियों में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में बीएलओ के सहयोग, गणना प्रपत्र भरने की प्रक्रिया, एएसडीओएफ सूची तैयार करने, विभिन्न श्रेणी के मतदाताओं से संबंधित नियमों तथा त्रुटिरहित एवं पारदर्शी तरीके से एसआईआर कार्य संपन्न कराने की विस्तृत जानकारी दी गई। प्रशिक्षुओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया। इधर, प्रशासन ने 30 जून को सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक सोशल मीडिया जागरूकता अभियान चलाने का निर्णय लिया है। उपायुक्त ने जिलेवासियों से अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील करते हुए कहा कि मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण लोकतंत्र को मजबूत बनाने की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अभियान के तहत जिले के उच्च विद्यालयों, प्लस-टू विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के ईएलसी क्लबों में छात्र-छात्राओं और शिक्षकों को एसआईआर की जानकारी दी गई तथा फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम और यूट्यूब सहित विभिन्न सोशल मीडिया मंचों पर जागरूकता संदेश साझा करने का आह्वान किया गया।

एसआईआर को लेकर विद्यालय में किया फ्यूचर वोटर्स को जागरूक

संताल एक्सप्रेस राजमहल। विशेष गहन पुनरीक्षण एसआईआर के तहत् सोमवार को प्लस टू जेके उच्च विद्यालय राजमहल एवं प्रोजेक्ट कन्या उच्च विद्यालय राजमहल में चुनाव पाठशाला के तहत् विभिन्न गतिविधि का आयोजन किया गया. इस दौरान

अनुमंडल पदाधिकारी सदानंद महतो, प्रखंड विकास पदाधिकारी राजमहल मो यूसुफ, निर्वाचन नोडल सह बीपीओ गगन बापू उपस्थित रहे. कार्यक्रम में एसडीओ सदानंद महतो ने सभी फ्यूचर वोटर्स को संबोधित करते हुए बताया कि एसआईआई अभियान के तहत 30 जून से 29 जुलाई तक गणना प्रपत्र प्रत्येक मतदाता को 2 सेट में बीएलओ द्वारा दिया जाएगा. जिसे भर कर 1 प्रति बीएलओ को वापस एवं एक अपने पास सुरक्षित रखेंगे. इस एसआईआर अभियान के दौरान कोई भी वैद्य मतदाता छूटे नहीं और कोई भी गलत मतदाता जुटे नहीं. इसी उद्देश्य को लेकर बीएलओ घर घर जाएगी और प्रत्येक मतदाता से गणना प्रपत्र भरवाईएगी. इस दौरान बीपीओ गगन बापू, ईएलसी के नोडल मो मज़हरुल हक, प्रधानाचार्य अभिजीत पांडे, राजीव कुमार शर्मा, सुबेश कुमार, रीमा पाठक, मुकेश दास सहित अन्य उपस्थित थे.

पुनरीक्षण अभियान को सफल बनाने में बीएलओ और स्वयंसेवकों की भूमिका अहम : बीडीओ

राजमहल। राजमहल प्रखंड कार्यालय के सभागार में सोमवार को सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी सह प्रखंड विकास पदाधिकारी मो यूसुफ की अध्यक्षता में विशेष गहन पुनरीक्षण एसआईआर को लेकर वॉलेंटियर के

साथ प्रशिक्षण सह बैठक हुई. बैठक में बीडीओ मो यूसुफ ने सभी को बताया कि मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण में सभी प्रतिभागियों को निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ कार्य करना है. एवं इस विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान को सफल बनाने में बीएलओ और स्वयंसेवकों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी. उन्होंने बताया कि शिक्षकों को स्वयंसेवक के रूप में मतदान केंद्रों से जोड़ा गया है. ताकि वे मतदाताओं को एसआईआर से जुड़ी प्रक्रियाओं की सही जानकारी दें. और उनकी शंकाओं का समाधान करें. यदि किसी विषय पर अतिरिक्त जानकारी की आवश्यकता हो तो संबंधित एईआरओ और ईआरओ से संपर्क करने को कहा गया. उन्होंने सभी स्वयंसेवकों से जमीनी स्तर पर मतदाताओं के बीच जागरूकता बढ़ाने और पूरी प्रतिबद्धता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करने की अपील की. साथ ही निर्देश दिया कि 30 जून को सभी मतदान केंद्रों पर आयोजित बीएलए-2, बीएलओ एवं चुनाव पाठशाला की बैठक में स्वयंसेवक भी अनिवार्य रूप से शामिल होकर अभियान को सफल बनाने में सहयोग करें. मौके पर बीपीओ गगन बापू, भरत मंडल, विजय कुमार सहित सभी स्वयंसेवक उपस्थित थे.

ई- केवाइसी के नाम पर अवैध वसूली का विरोध

उधवा। उधवा प्रखंड के उत्तर बेगमगंज पंचायत में संचालित वेदव्यास इंडेन ग्रामीण वितरक गैस एजेंसी पर ई- केवाईसी के नाम पर अवैध वसूली, गैस सिलेंडर देने से इंकार तथा उपभोक्ता को धमकी देने का गंभीर आरोप लगा है. इस मामले में उत्तर बेगमगंज निवासी शिवशंकर मंडल ने जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग साहिबगंज में लिखित शिकायत दर्ज कराया है.शिकायतकर्ता के अनुसार उन्होंने शनिवार को घरेलू गैस सिलेंडर बुक कराया था. गैस लेने के लिए गोबरगाड़ी स्थित वेदव्यास इंडेन ग्रामीण गैस वितरक गोदाम पहुंचे. जहां एजेंसी के कर्मचारियों ने कथित रूप से ई केवाईसी कराने के नाम पर 200 रुपये जमा करने तथा नया रेगुलेटर पाइप खरीदने की बात कही. जब उन्होंने इसका विरोध करते हुए कहा कि ई- केवाईसी की कोई निर्धारित फीस नहीं होती और फिलहाल पाइप की आवश्यकता भी नहीं है. तो उन्हें अगले दिन आने को कहा गया.आरोप है कि दूसरे दिन रविवार की सुबह दोबारा गोदाम पहुंचने पर गैस एजेंसी के संचालक चैतन्य मंडल ने उन्हें कहा कि ज्यादा नेता बनते हो अवैध वसूली की शिकायत करते हो यह कहते हुए गैस सिलेंडर देने से साफ इंकार कर दिया. शिकायतकर्ता का कहना है कि विरोध करने पर उन्हें यह भी कहा गया कि जहां शिकायत करनी है कर लो मेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा. ज्यादा बोलोगे तो गैस कनेक्शन काट देंगे या ब्लॉक कर देंगे. शिकायतकर्ता शिवशंकर मंडल ने यह भी आरोप लगाया है।

हमारी प्रतिबद्धता है कि शहीदों के सपनों का झारखंड बने : नलिन सोरेन

संताल हूल दिवस पर मैं संताल हूल के महानायक सिदो-कान्हू, चांद-भैरव तथा फूलो-झानो को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं। 30 जून 1855 को शुरू हुआ संताल हूल केवल अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह नहीं था, बल्कि यह जल, जंगल, जमीन, स्वाभिमान और अस्तित्व की रक्षा का ऐतिहासिक जनआंदोलन था।

आज 171 वर्ष बाद भी संताल हूल की प्रासंगिकता बनी हुई है। हूल हमें अन्याय, शोषण और दमन के खिलाफ संगठित होकर संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। उस समय महाजनी शोषण, जमींदारी अत्याचार और अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ आदिवासी समाज ने आवाज उठाई थी। आज परिस्थितियां बदली हैं, लेकिन चुनौतियां अब भी मौजूद हैं।

आज भी आदिवासी समाज जल, जंगल और जमीन की रक्षा, विस्थापन, बेरोजगारी, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों से जूझ रहा है। ऐसे समय में संताल हूल का संदेश हमें अपने अधिकारों के प्रति सजग और एकजुट रहने की सीख देता है।

झारखंड मुक्ति मोर्चा हमेशा से आदिवासियों, मूलवासियों, गरीबों और वंचितों के हक की लड़ाई लड़ता रहा है। हमारी प्रतिबद्धता है कि शहीदों के सपनों का झारखंड बने, जहां सामाजिक न्याय, समान अवसर और सम्मानजनक जीवन हर व्यक्ति को मिले।

संताल हूल दिवस केवल इतिहास को याद करने का अवसर नहीं है, बल्कि यह संकल्प लेने का दिन भी है कि हम शहीदों के आदर्शों पर चलकर न्यायपूर्ण, समतामूलक और सशक्त समाज के निर्माण के लिए निरंतर कार्य करेंगे।

हूल जोहार!

(लेखक झामुमो के वरिष्ठ नेता और दुमका के सांसद हैं।)

आज हूल की नितांत आवश्यकता है : हेमलाल मुर्मू

विधायक व पूर्वमंत्री हेमलाल बड़े ही बेबाकी के साथ कहते हैं कि आज जो परिस्थितियां है, उसे देखते हुए एक और हूल की नितांत आवश्यकता है। हूल व क्रांति का मायने परिवर्तन है। आज भी गांवों में शोषण और और महाजनी व्यवस्था कायम है। आदिवासियों व किसानों की जमीन धड़ल्ले से खरीद बिक्री की जा रही है। इसलिए आज भी शिक्षा एवं कृषि के क्षेत्र में हूल लाने की जरूरत है। आमलोग वर्तमान व्यवस्था से संतुष्ट नहीं हैं। हालांकि हूल का मेरा तात्पर्य सत्ता परिवर्तन से नहीं है। राजनीतिक सत्ता तो बदलती रहती है लेकिन इससे आमलोगों की समस्याओं का ठोस व स्थायी समाधान नहीं होता है। इस दिशा में हेमंत सरकार कुछ क्रांतिकारी प्रशासनिक कदम उठा रही है।

आज संताल काटा पोखर में गूंजेगी तीरंदाजों की टंकार

रानीश्वर। आगामी 30 जून को ऐतिहासिक हूल दिवस के अवसर पर दुमका जिले के रानीश्वर प्रखंड अंतर्गत दिगुली स्थित संताल काटा पोखर परिसर में एक भव्य तीरंदाजी प्रतियोगिता का आयोजन होने जा रहा है। संताल हूल अखाड़ा द्वारा आयोजित इस खेल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को आर्थिक पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर शनिवार को संताल हूल अखड़ा की एक अहम बैठक आयोजित की गई, जिसकी समीक्षा अध्यक्ष सुनील मुर्मू, सचिव सिमल हांसदा सहित विश्वनाथ मरांडी, बिपोनाथ मरांडी, महादेव हेम्ब्रम, राजकिशोर मरांडी और सुभाष पहाड़िया ने की।

सिद्दो कान्हू सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मना हूल दिवस

रघुनाथपुर । सिद्दो कान्हू सीनियर सेकेंडरी स्कूल, रघुनाथपुर में हुल दिवस की पूर्व संध्या पर सोमवार को पारंपरिक आदिवासी रीति-रिवाज और अपार हर्षोल्लास के साथ हुल दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर स्कूली छात्र-छात्राओं ने मनमोहक आदिवासी नृत्य, पारंपरिक गायन, नाटक और ओजस्वी भाषण प्रस्तुत कर पूरे माहौल को हुल क्रांति के रंग में रंग दिया। बच्चों ने अपनी कला के जरिए अमर शहीद सिद्दो, कान्हू, चांद, भैरव और फूलो-झानो के संघर्षों को जीवंत कर दिया। समारोह को संबोधित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य देवप्रिय मुखर्जी ने कहा कि हुल दिवस भारतीय इतिहास का वह गौरवशाली अध्याय है, जिसने अंग्रेजी हुकूमत की चूलें हिला दी थीं।

एस. पी. कॉलेज दुमका में हूल दिवस पर विचार गोष्ठी

दुमका। हुल दिवस की पूर्व संध्या पर एस. पी. कॉलेज, दुमका के इतिहास विभाग द्वारा एक गरिमामय एवं विचारोत्तेजक कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय के सभागार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के. पी. यादव ने की। कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के महान जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम संताल हुल (1855) के इतिहास, उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व तथा वर्तमान समय में उसकी प्रासंगिकता पर गंभीर विमर्श करना था। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षकगण, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ सिद्धो-कान्हू, चाँद-भैरव तथा फूलो-झानो के चित्रों पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। उपस्थित सभी लोगों ने हुल आंदोलन के महानायक एवं वीर शहीदों को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए उनके अदम्य साहस, संघर्ष और बलिदान को स्मरण किया। वातावरण देशभक्ति, जनजातीय गौरव तथा ऐतिहासिक चेतना से ओत-प्रोत था। अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्राचार्य डॉ. के. पी. यादव ने कहा कि हुल दिवस केवल एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि अन्याय, शोषण और दमन के विरुद्ध जनशक्ति की विजय का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि सिद्धो-कान्हू, चाँद-भैरव तथा फूलो-झानो ने जिस साहस और संगठन क्षमता का परिचय दिया, वह आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे इतिहास को केवल परीक्षा की दृष्टि से न पढ़ें, बल्कि उससे जीवन मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा ग्रहण करें। उन्होंने कहा कि झारखंड की धरती सदैव वीरों और क्रांतिकारियों की भूमि रही है और हुल आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है।

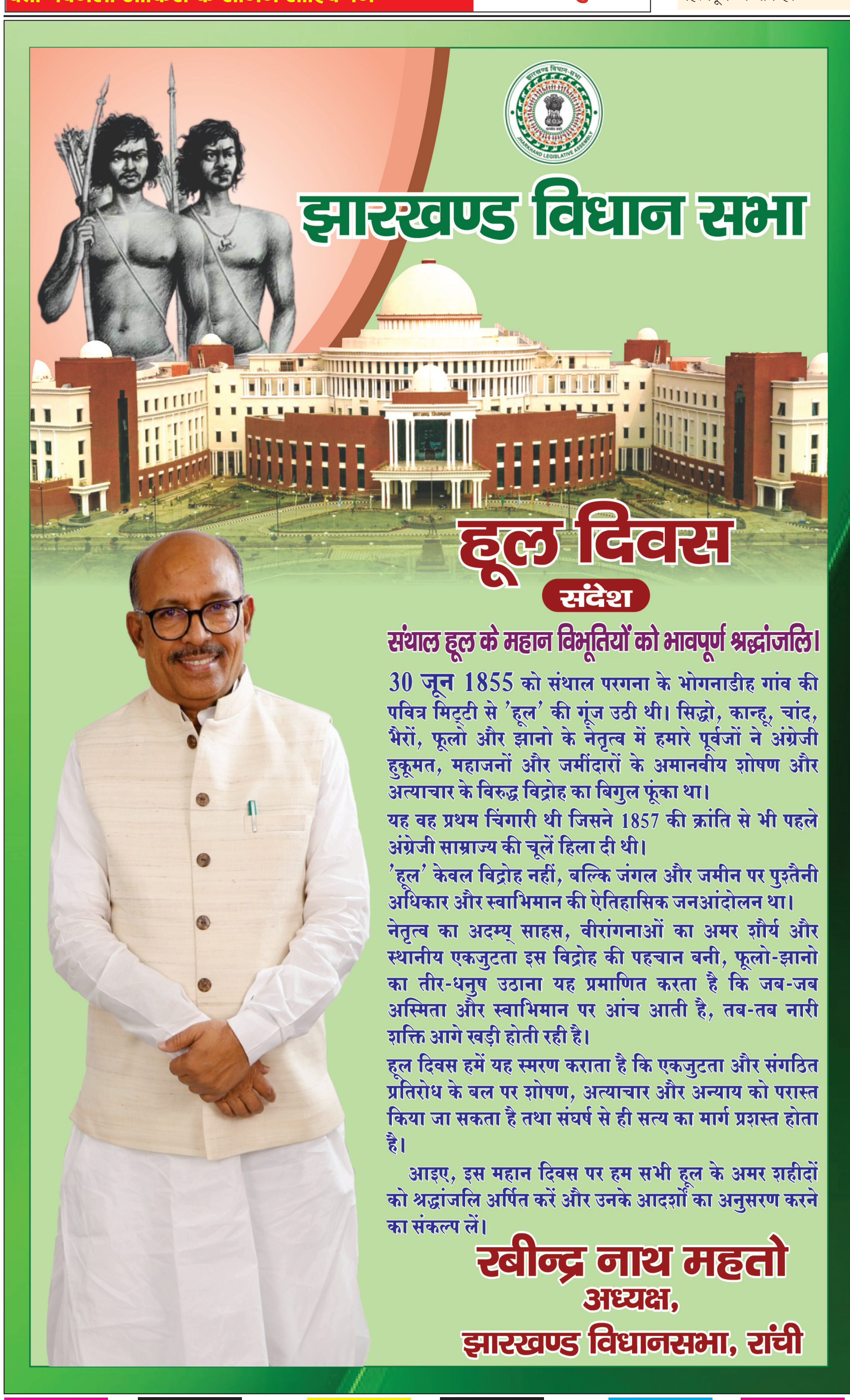

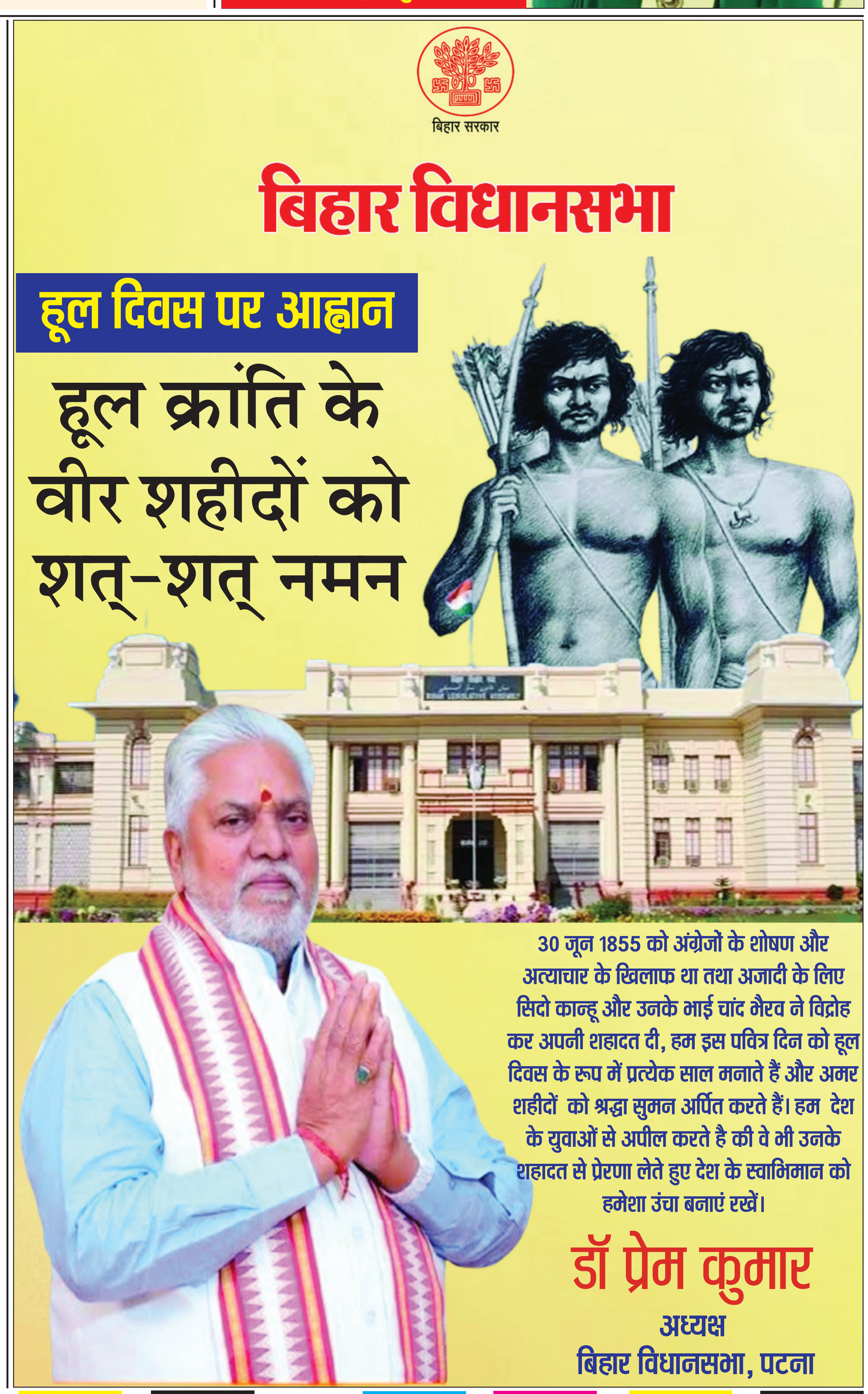

हूल दिवस : आदिवासी अस्मिता, बलिदान और स्वराज की पहली चिंगारी

चंदन मिश्र

झारखंड की मिट्टी में जो सबसे गहरी आवाज गूंजती है, वो है हूल जोहार की। हूल संथाली भाषा का शब्द है - अर्थात विद्रोह, क्रांति, एकजुट होकर उठ खड़ा होना । 30 जून 1855 को राजमहल की पहाड़ियों से उठी यही आवाज अंग्रेजी साम्राज्य की नींव हिला गई थी।

हूल दिवस सिर्फ एक तारीख नहीं है। यह उस पीड़ा की गवाही है जो शोषण से पैदा होती है, उस साहस की मिसाल है जो तीर-धनुष से तोप का सामना करता है, और उस सपने की झलक है जिसमें आदिवासी अपना राज, अपना कानून देखता है। संताल

1857 की क्रांति से 2 साल पहले, जब पूरा भारत अंग्रेजों की सभ्यता के सामने सिर झुका रहा था, संताल आदिवासियों ने जल, जंगल, जमीन की लड़ाई छेड़ दी थी। यह आलेख हूल दिवस के ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और समकालीन महत्व को 8 भागों में समझेगा।

हूल से पहले का संताल समाज दामिन-ए-कोह की दुनिया

संताल कौन थे?

संताल भारत की सबसे बड़ी आदिवासी जनजातियों में से एक हैं। इनकी आबादी आज झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार और बांग्लादेश में लगभग 1 करोड़ है। इनकी भाषा संथाली है, लिपि ओल चिकी है, और धर्म सरना है - यानी प्रकृति पूजा। पहाड़, नदी, पेड़, सूरज - सब उनके देवता।

18वीं सदी के मध्य तक संताल राजमहल पहाड़ी क्षेत्र और गंगा के किनारे जंगल काटो, खेती करो वाले स्थानांतरित कृषक थे। वे जंगल साफ करके धान, मड़ुआ, कोदो उगाते थे। उनका समाज समतावादी था। मुखिया मांझी होता था, पर फैसले जाहेर यानी गांव की सभा में होते थे।

दामिन-ए-कोह का प्रयोग

1793 में लॉर्ड कॉर्नवालिस ने स्थायी बंदोबस्त लागू किया। जमींदारों को जमीन का मालिक बना दिया गया। पर राजमहल की पहाड़ियाँ इतनी दुर्गम थीं कि कोई जमींदार वहाँ जाना नहीं चाहता था। इसलिए 1832 में ब्रिटिशों ने दामिन-ए-कोह यानी पहाड़ी की सीमा घोषित करके संथालों को वहाँ बसाया। लक्ष्य था- जंगल साफ करके खेती बढ़ाना, राजस्व बढ़ाना। ब्रिटिश अधिकारी कैप्टन शेरविल ने 40,000 संताल परिवारों को भागलपुर से राजमहल लाकर बसाया।

शुरुआत में संताल खुश थे। उन्हें जमीन मिली, जंगल मिला, आजादी मिली। पर ये सुनहरा काल ज्यादा दिन नहीं चला।

शोषण की तीन धाराएँ- दिकु, महाजन और अमला

संथालों ने ब्रिटिश, जमींदार और महाजन को दिकु कहा - अर्थात बाहरी लुटेरा।

शोषण 3 स्तरों पर हुआ-

आर्थिक शोषण- सूदखोरी का जाल संताल सीधे-सादे थे। खेती के लिए बीज, बैल, हल खरीदने को महाजन से कर्ज लेते थे। महाजन 50प्रतिशत से 500प्रतिशत तक ब्याज लेता था। हिसाब-किताब बही में होता था, जो संताल पढ़ नहीं सकते थे।

एक बार कर्ज लिया तो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता था। पिता का कर्ज बेटा चुकाता था। इसे बंधुआ मजदूरी बना दिया गया। कर्ज न चुका पाने पर जमीन, घर, गाय-बैल सब नीलाम हो जाते थे।

जमीनी शोषण : भूमि हड़प नीति

स्थायी बंदोबस्त के तहत जमींदार लगान वसूलते थे। संथालों से फसल का 50प्रतिशत तक लगान लिया जाता था। लगान न देने पर पुलिस आकर मारपीट करती थी, घर जला देती थी, औरतों की इज्जत लूटती थी।

रैयती जमीन धीरे-धीरे जमींदारी जमीन बन गई। संताल अपनी ही जमीन पर बटाईदार बन गए।

प्रशासनिक शोषण : अन्याय की कचहरी जब संताल कचहरी जाते थे न्याय मांगने, तो वहाँ भी दिकु जज बैठा था। वो महाजन-जमींदार की भाषा समझता था, संताल की नहीं। पुलिस ÷अमला÷ कहलाती थी। वो भी जमींदार के साथ मिलकर संथालों को लूटती थी।

कहावत बन गई थी- ÷दिकु का राज, दिकु का कानून, संताल का खून-पसीना।

सांस्कृतिक शोषण : महाजन संताल महिलाओं को तुच्छ समझते थे, उनका मजाक उड़ाते थे। शराब पिलाकर ठगी करते थे। संथालों के ÷जाहेर थान÷ यानी पवित्र उपवन काटे जा रहे थे। उनकी अस्मिता पर हमला हो रहा था।

---

30 जून 1855 : भोगनाडीह से उठी चिंगारी

चार भाई और ईश्वरीय आदेश

भोगनाडीह गांव, परगना महल, जिला साहिबगंज। यहाँ सिद्धो, कान्हू, चांद और भैरव - चार संताल भाई रहते थे। मान्यता है कि एक रात सिदो-कान्हू को स्वप्न में ठाकुर बोंगा यानी सर्वोच्च देवता ने दर्शन दिए। आदेश मिला- दिकुओं का अत्याचार बढ़ गया है। अब हथियार उठाओ। अपना राज स्थापित करो।

सिद्धो-कान्हू ने गांव-गांव संदेश भेजा- 30 जून 1855 को भोगनाडीह मैदान में इकट्ठा हो। हूल शुरू होगा।

हूल गुटि की सभा

30 जून को लगभग 10,000 संताल तीर-धनुष, टांगी, कुल्हाड़ी लेकर इकट्ठा हुए। पेड़ की डाल पर हूल गुटि यानी विद्रोह का झंडा गाड़ा गया। सिद्धो ने ऐलान किया।

हम अब अंग्रेज का हुकुम नहीं मानेंगे। हम अपना संताल राज बनाएंगे। जो दिकु जुल्म करेगा, उसे मारो। जो संताल धोखा देगा, उसे भी मारो।

यह स्वराज की पहली घोषणा थी 1857 से पहले।

हूल की रणनीति

हूल कोई अंधा विद्रोह नहीं था। इसकी योजना थी।

लक्ष्य : पहले महाजन, फिर जमींदार, फिर पुलिस, फिर अंग्रेज अधिकारी।

साधन : तीर-धनुष से रात में हमला। गुरिल्ला युद्ध ।

नारा : अपना देश, अपना राज÷।

संकेत : महुआ के पेड़ की शाखा, ढोल-नगाड़े की आवाज से संदेश फैलता था।

हूल का विस्तार और ब्रिटिश दमन

आग की तरह फैला विद्रोह जुलाई 1855 तक हूल भागलपुर, बीरभूम, मुर्शिदाबाद, मानभूम, सिंहभूम तक फैल गया। लगभग 30,000 संताल और 400 गांव इसमें शामिल हो गए। संथालों ने 150 से ज्यादा महाजनों और जमींदारों को मार डाला। कई थाने जला दिए। रेल लाइन उखाड़ दी। ब्रिटिश अधिकारी मेजर बरो ने लिखा- संताल अब जंगल के शेर बन गए हैं।

ब्रिटिश प्रतिक्रिया : मार्शल लॉ

अंग्रेज घबरा गए। बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर हॉलिडे ने मार्शल लॉ लगा दिया। सेना, तोप, बंदूकधारी सिपाही भेजे गए। नवंबर 1855 में पाकुड़ की लड़ाई हुई। संताल तीर लेकर तोप के सामने खड़े हो गए। हजारों मारे गए। ब्रिटिश सैनिकों ने लिखा-वे मरते दम तक हूल जोहार चिल्लाते रहे।

शहादत : सिद्धो-कान्हू की फांसी

26 जुलाई 1855 को धोखे से सिद्धो-कान्हू पकड़े गए। 2 अगस्त 1855 को भोगनाडीह में ही उन्हें पेड़ पर लटका कर फांसी दे दी गई। चांद-भैरव भी युद्ध में शहीद हो गए।

पर मरवाने से पहले सिद्धो ने कहा था- हम मर जाएंगे, पर संताल का हूल कभी नहीं मरेगा।

कुल मिलाकर 15,000 से 20,000 संताल शहीद हुए। यह संख्या 1857 की क्रांति से भी ज्यादा थी।

हूल के परिणाम : हार के बाद की जीत

ब्रिटिशों ने विद्रोह तो कुचल दिया, पर डर गए। उन्हें समझ आ गया कि आदिवासी को हमेशा दबाकर नहीं रखा जा सकता।

संताल परगना टेनेंसी एक्ट 1856

विद्रोह के एक साल बाद ब्रिटिशों को संताल परगना टेनेंसी एक्ट बनाना पड़ा।

इसके मुख्य प्रावधान-

1. दामिन-ए-कोह को संताल परगना नाम देकर अलग जिला बनाया गया।
2. संताल की जमीन गैर-आदिवासी को बेचना/गिरवी रखना प्रतिबंधित।
3. महाजनों के ब्याज की दर तय की गई।
4. संथालों के लिए अलग मांझी-परगना पंचायती व्यवस्था मान्य की गई।

यह भारत का पहला आदिवासी सुरक्षा कानून था।

1857 की क्रांति की पृष्ठभूमि

इतिहासकारों का मानना है कि हूल ने 1857 की क्रांति का रास्ता तैयार किया। अंग्रेजों को लगा कि भारत में आग सुलग रही है। संथालों ने दिखा दिया कि किसान-आदिवासी भी संगठित होकर लड़ सकते हैं।

आदिवासी चेतना की नींव

हूल के बाद उलगुलान यानी बिरसा मुंडा का आंदोलन 1895 में आया। बिरसा ने खुद कहा था-सिद्धो-कान्हू मेरे गुरु हैं।

आज भी झारखंड आंदोलन, छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट की मांग, जल-जंगल-जमीन का नारा - सबकी जड़ हूल में है।

हूल दिवस का समकालीन महत्व

आज 170 साल बाद भी 30 जून को हूल दिवस मनाया जाता है। क्यों?

शहीदों को श्रद्धांजलि

साहिबगंज के भोगनाडीह में सिद्धो-कान्हू पार्क और शहीद स्मारक है। इस दिन लाखों आदिवासी यहाँ इकट्ठा होते हैं। पुष्पांजलि, सांस्कृतिक नृत्य डाहार, ढोल-मांदर की थाप। झारखंड सरकार राजकीय शोक घोषित करती है। मुख्यमंत्री शहीद वेदी पर माल्यार्पण करते हैं।

आदिवासी अस्मिता का दिन

हूल दिवस पर संथाली भाषा, ओल चिकी लिपि, सरना धर्म पर गोष्ठियाँ होती हैं। स्कूल-कॉलेज में बच्चों को बताया जाता है कि हम गुलामों की औलाद नहीं, शहीदों की औलाद हैं।

. वर्तमान संघर्षों से जोड़ना

आज भी आदिवासी विस्थापन, खन, जंगल कटाई, फर्जी केस से जूझ रहे हैं। हूल दिवस पर नेता और कार्यकर्ता इन मुद्दों को उठाते हैं। पाथलगढ़ी आंदोलन, ग्राम सभा का अधिकार - ये सब हूल की भावना से जुड़े हैं।

. राष्ट्रीय एकीकरण का प्रतीक

हूल सिर्फ संताल का नहीं, पूरे भारत का इतिहास है। केंद्र सरकार ने भी अब हूल दिवस को मान्यता दी है। यह ÷जनजातीय गौरव दिवस÷ 15 नवंबर बिरसा जयंती के साथ मिलकर आदिवासी योगदान को राष्ट्रीय मुख्यधारा में लाता है।

हूल से सीख : पांच सबक 21वीं सदी के लिए

शोषण के खिलाफ संगठित प्रतिरोध- सिद्धो-कान्हू के पास बंदूक नहीं थी, पर एकता थी। आज भी अगर आदिवासी, किसान, मजदूर एकजुट हों तो नीतियाँ बदल सकती हैं।

जमीन से जुड़ाव : संथालों के लिए जमीन सिर्फ संपत्ति नहीं, माँ थी। आज जब कॉरपोरेट और खन कंपनियाँ जमीन ले रही हैं, हूल याद दिलाता है कि ÷विस्थापन मतलब सांस्कृतिक मृत्यु है।

स्वशासन का मॉडल : मांझी-परगना व्यवस्था गांव की स्वायत्तता का मॉडल थी। संविधान की 5वीं अनुसूची और PESA कानून 1996 इसी सोच को आगे बढ़ाते हैं।

प्रकृति पूजा : संताल सरना धर्म मानते थे - पेड़ काटो मत, नदी गंदी मत करो। जलवायु संकट के समय हूल का पर्यावरणीय संदेश और प्रासंगिक हो गया है।

बलिदान की परंपरा : सिद्धो-कान्हू ने परिवार, गांव, जान सब दांव पर लगा दिया। देश पहले की भावना हूल से ही शुरू होती है।

चुनौतियाँ और आगे का रास्ता हूल को याद करना काफी नहीं है, उसे जीना होगा।

ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण की कमी हूल का इतिहास ज्यादातर मौखिक परंपरा में है। ब्रिटिश रिकॉर्ड में इसे "Santhal Rebellion" कहा गया। संथालों के नजरिए से इसे स्कूल की किताबों में जगह मिलनी चाहिए।

आर्थिक विकास बनाम पहचान

आज झारखंड के संताल परगना में गरीबी, पलायन, शिक्षा की कमी है। विकास चाहिए, पर वो विकास जो संताल की जमीन, भाषा, संस्कृति को न निगले।

युवा पीढ़ी को जोड़ना

शहरों में पढ़ने वाले संताल युवा कई बार अपनी जड़ें भूल जाते हैं। हूल दिवस पर डिजिटल हूल - सोशल मीडिया, पॉडकास्ट, डॉक्यूमेंट्री के जरिए युवाओं को जोड़ना जरूरी है।

महिलाओं की भूमिका

हूल में फुलो-झानो जैसी संताल महिलाओं ने भी लड़ाई लड़ी थी। आज महिला स्व-सहायता समूह, महिला मुखिया - ये हूल की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं।

हूल खत्म नहीं हुआ, रूप बदल गया

170 साल पहले संथालों ने तीर-धनुष से हूल किया था। आज हूल का मतलब बदल गया है।

- कल हूल था महाजन के खिलाफ, आज हूल है कर्ज के जाल के खिलाफ।
- कल हूल था जमींदार के खिलाफ, आज हूल है फर्जी जमीन अधिग्रहण के खिलाफ।
- कल हूल था जंगल काटने के खिलाफ, आज हूल है जलवायु परिवर्तन के खिलाफ।

हूल दिवस हमें याद दिलाता है कि आदिवासी समाज समस्या नहीं है, समाधान है। प्रकृति के साथ जीने का, समता के साथ रहने का, अन्याय के खिलाफ खड़े होने का समाधान।

इसलिए जब 30 जून को हम ÷जोहार सिदो-कान्हू÷ बोलते हैं, तो हम सिर्फ नारा नहीं लगा रहे होते। हम अपने अंदर के उस संताल को जगा रहे होते हैं जो कहता है। अगर जुल्म होगा, तो हूल फिर होगा।

हूल जोहार! सिद्धो-कान्हू अमर रहें!
जल-जंगल-जमीन बचाओ!
आदिवासी एकता जिंदाबाद!

भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक और हूल की जरूरत

डॉ. अमरेन्द्र सुमन

जल, जंगल, जमीन और प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण झारखंड प्रदेश का संताल परगना प्रमंडल अपने अस्तित्व को लेकर आज किसी का मोहताज नहीं। चाहे सांस्कृतिक संरचना की बात हो या फिर सामाजिक, आर्थिक, वैचारिक, व्यवहारिक चैतन्य बोध की। इन क्षेत्रों के नागरिकों ने व्यवस्था के साथ कंधे से कंधा मिलाकर विकास की दौड़ को एक नया आयाम दिया। एक नई ऊँचाई प्रदान की। आपसी सौहार्द और भाईचारे की विस्मृत हो चुकी संस्कृति को विश्वास की तुला पर लाकर खड़ा कर दिया, किंतु जिस तरह अंग्रेजी हुकूमत की शासन व्यवस्था, उसके कायदे कानून, महाजनी प्रथा, शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार के विरुद्ध अमर शहीद सिदो- कान्हू और चाँद-भैरव ने क्रांति का शंखनाद कर उनकी जड़ें हिलाकर रख दी थी, इतिहास में वह स्वर्णाक्षरों में अंकित हो चुका है , जिसकी गूँज इस धरती के रहने तक जारी रहेगी।

30 जून 1855 भारतीय इतिहास का वह दिन है, जब संताल परगना की धरती पर इन चार भाईयों ने केवल अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल नहीं फूंका था, बल्कि अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार और अमानवीय व्यवस्था के विरुद्ध जनचेतना का ऐसा शंखनाद किया था जिसकी गूंज आज भी सुनाई देती है। जंगल तराई में बसोबास करने वाले संताल समाज ने इसे ÷हूल÷ कहा अर्थात अन्याय के विरुद्ध व्यापक जनाक्रोश। यह केवल एक सशस्त्र संघर्ष नहीं था, यह नैतिक प्रतिरोध का विराट और अकल्पनीय अभियान था।

संताल हूल के 171 वर्ष बाद, जब हम अपने समय की ओर देखते हैं तो पाते हैं कि सत्ता का स्वरूप बदला है। चेहरे बदल गए हैं। संविधान आ गया है। लोकतंत्र स्थापित हो चुका है। लेकिन व्यवस्था की असाध्य बीमारियां आज भी उसी प्रकार समाज को भीतर से खोखला कर रही हैं। यदि वर्ष 1855 का हूल विदेशी शासन के विरुद्ध एक महान क्रांति का शंखनाद था, तो वर्तमान व्यवस्था का संभावित हूल भ्रष्टाचार, नैतिक पतन और संस्थागत गिरावट के विरुद्ध होना चाहिए।

संताल हूल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की मांग नहीं की थी। उसका मूल उद्देश्य था शोषण से मुक्ति। उस समय महाजन, साहूकार, भ्रष्ट कर्मचारी और औपनिवेशिक प्रशासन मिलकर गरीब किसानों और आदिवासियों का आर्थिक तथा सामाजिक दोहन कर रहे थे। न्याय बिकता था, प्रशासन पक्षपाती था और सत्ता जनविरोधी बन चुकी थी। यही परिस्थितियाँ अंततः विस्फोट का कारण बनीं।

आज परिदृश्य अलग है, लेकिन प्रश्न वही खड़ा है। क्या भ्रष्टाचार केवल रिश्वतखोरी तक सीमित है ? नहीं। जब योग्यता की जगह सिफारिश अपना स्थान ले लेती है, जब जनसेवा की जगह निजी लाभ सर्वोपरि हो जाता है, जब राजनीति आम नागरिकों की सेवा के स्थान पर स्वार्थ का रूप ले लेती है, जब शिक्षा प्रमाण पत्रों का बाजार और स्वास्थ्य व्यापार का केंद्र बन जाता है, तब भ्रष्टाचार केवल आर्थिक अपराध नहीं रहता। वह समाज के चरित्र पर हमला बन जाता है।

सबसे अधिक चिंता का विषय यह है कि भ्रष्टाचार अब अपवाद नहीं, बल्कि कई स्थानों पर सामान्य व्यवहार के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। व्यवस्था से लेकर व्यक्ति तक। विचार से लेकर व्यवहार तक। भाषा से लेकर राजनीति तक गिरावट की यह प्रक्रिया निरंतर तेज होती जा रही है। ईमानदारी को मूर्खता और बेईमानी को चतुराई समझने की मानसिकता किसी भी सभ्य समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा है। संताल हूल हमें सिखाता है कि किसी भी व्यवस्था की वास्तविक शक्ति जनता का विश्वास होता है। जब यह विश्वास टूटता है, तब असंतोष जन्म लेता है। सिद्धो और कान्हू ने लोगों को हथियार उठाने से पहले आत्म सम्मान जगाने का काम किया था। उन्होंने बताया था कि अन्याय को चुपचाप सहना भी अन्याय को बढ़ावा देना है।

आज आवश्यकता किसी हिंसक विद्रोह की नहीं, बल्कि नैतिक हूल की है। ऐसा हूल जो व्यक्ति के भीतर से शुरू हो। जो रिश्वत लेने वाले से पहले रिश्वत देने वाले की विवशता समाप्त करे। जो सरकारी कार्यालयों में पारदर्शिता बढ़ाए। जो राजनीति को सेवा का माध्यम बनाए। जो शिक्षा में चरित्र निर्माण को पुनः प्रतिष्ठित करे। जो युवाओं को केवल रोजगार नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का भी बोध कराए, किंतु विडंबना यह है कि हम प्रतिवर्ष हूल दिवस मनाते हैं। सिद्धो-कान्हू की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण करते हैं, उनके नाम पर कार्यक्रम आयोजित करते हैं, लेकिन उनके मूल संदेश को जीवन में उतारने का साहस नहीं दिखा पाते। यदि हूल केवल स्मृति बनकर रह जाए और उसका मूल्यबोध हमारे सार्वजनिक जीवन से गायब हो जाए, तो वह इतिहास का उत्सव भर रह जाएगा, प्रेरणा का स्रोत नहीं। आज आवश्यकता है कि प्रशासन अपनी जवाबदेही को मजबूत करे, राजनीति अपनी विश्वसनीयता वापस अर्जित करे, न्याय व्यवस्था आमजन के विश्वास को और दृढ़ बनाए तथा समाज स्वयं भ्रष्टाचार के प्रति शून्य सहिष्णुता का वातावरण निर्मित करे। डिजिटल तकनीक, सूचना का अधिकार, सामाजिक जागरूकता और सक्रिय नागरिकता इस दिशा में प्रभावी साधन बन सकते हैं, यदि उनके साथ नैतिक प्रतिबद्धता भी जुड़ी हो। 1855 का हूल हमें यह भी सिखाता है कि परिवर्तन केवल नेताओं से नहीं आता। जागृत समाज ही इतिहास की दिशा बदलता है। सिद्धो-कान्हू किसी महल से नहीं निकले थे। वे जनमानस की पीड़ा से निकले थे। इसलिए आज यदि नया हूल होना है तो उसकी शुरुआत संसद से पहले समाज में, कानून से पहले चरित्र में और शासन से पहले नागरिक चेतना में करनी होगी। भारत आज विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में स्थान बनाने की ओर अग्रसर है।

विज्ञान, तकनीक, आधारभूत संरचना और वैश्विक प्रतिष्ठा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। किंतु यदि इन उपलब्धियों की नींव भ्रष्टाचार, अवसरवाद और नैतिक पतन से कमजोर होती रही, तो विकास का यह भवन अधिक समय तक स्थिर नहीं रह सकेगा। किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी अर्थव्यवस्था नहीं, बल्कि उसका नैतिक चरित्र होता है। संताल हूल की प्रासंगिकता इसी संदेश में निहित है कि अन्याय चाहे विदेशी शासन करे या अपने ही समाज का कोई तंत्र, उसका प्रतिकार आवश्यक है। आज का हूल बंदूक का नहीं, संविधान का। हिंसा का नहीं, जनजागरण का। विनाश का नहीं, नैतिक पुनर्जागरण का होना चाहिए।

यदि हम सचमुच सिदो-कान्हू और उनके साथियों को श्रद्धांजलि देना चाहते हैं, तो उनकी प्रतिमाओं पर पुष्प चढ़ाने से अधिक आवश्यक है कि हम अपने भीतर और अपने सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का दीप जलाएँ। यही 1855 के हूल की सच्ची विरासत है और यही आज के भारत की सबसे बड़ी आवश्यकता भी। आज जब भ्रष्टाचार व्यवस्था की नसों में और नैतिक पतन समाज की चेतना में प्रवेश कर चुका है, तब इतिहास फिर हमें पुकार रहा है। प्रश्न केवल इतना है क्या हम उस पुकार को सुनने के लिए तैयार हैं ? यदि हाँ, तो समय आ गया है कि भारत एक और हूल का साक्षी बने। ऐसा हूल जो मनुष्य को स्वयं से, समाज को अपने दायित्व से और शासन को उसकी जवाबदेही से परिचित कराए।

भारत के प्रथम जन-विद्रोहों में एक ऐतिहासिक अध्याय हूल क्रांति

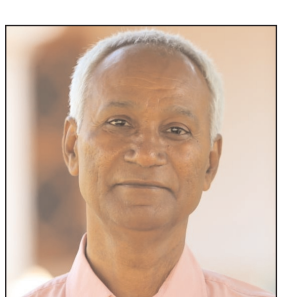
श्याम किशोर चौबे

झारखंड की धरती अनेक जन आंदोलनों और स्वतंत्रता संग्राम की गौरवशाली गाथाओं की साक्षी रही है। इनमें हूल क्रांति (संताल हूल) का विशेष स्थान है। यह विद्रोह 1855 में संताल समुदाय द्वारा अंग्रेजी शासन, जमींदारों और महाजनों के अत्याचार के विरुद्ध शुरू किया गया था। %हूल% शब्द का अर्थ है– क्रांति, विद्रोह या व्यापक जन उभार। यह केवल एक स्थानीय आंदोलन नहीं था, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध जनता के संगठित प्रतिरोध का प्रतीक था।

हूल क्रांति की पृष्ठभूमि

18वीं और 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने भारत में अपनी सत्ता मजबूत करने के लिए नई भू-राजस्व व्यवस्था लागू की। संतालों को जंगल साफ कर खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, लेकिन बाद में उन्हीं पर भारी लगान थोपा गया। जमींदारों, साहूकारों और महाजनों ने ऊंची ब्याज दर पर ऋण देकर उनका आर्थिक शोषण शुरू कर दिया।

पुलिस और प्रशासन भी अंग्रेजी शासन के पक्ष में था। संतालों की जमीनें छीनी जाने लगीं और उन्हें बेगार करने के लिए मजबूर किया गया। यहां तक कि कुछ मनचढ़े महिलाओं का भी शोषण करने में बाज न आते थे। अन्यायों की श्रृंखला ने धीरे-धीरे व्यापक असंतोष को जन्म दिया।

विद्रोह की शुरुआत

---

30 जून 1855 को वर्तमान झारखंड के भोगनाडीह गांव में हजारों संताल एकत्र हुए। यहां चार भाइयों– सिदो मुर्मू, कान्हू मुर्मू, चांद मुर्मू और भैरव मुर्मू ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया। उनकी बहनें फूलो मुर्मू और झानो मुर्मू भी इस आंदोलन की प्रेरणास्रोत बनीं।

सिदो और कान्हू ने घोषणा की कि अब संताल अंग्रेजों की सत्ता नहीं मानेंगे और अन्याय के विरुद्ध संगठित संघर्ष करेंगे। देखते ही देखते हजारों आदिवासी इस आंदोलन से जुड़ गए।

आंदोलन का स्वरूप

हूल क्रांति पूरी तरह जनआंदोलन थी। इसमें किसान, मजदूर, महिलाएं और युवा बड़ी संख्या में शामिल हुए। विद्रोहियों ने कई सरकारी कार्यालयों, पुलिस चौकियों तथा महाजनों के ठिकानों पर हमला किया। उन्होंने अंग्रेजी शासन को खुली चुनौती दी।

हालांकि संतालों के पास आधुनिक हथियार नहीं थे। वे मुख्यतः तीर-धनुष, फरसा, भाला और तलवार जैसे पारंपरिक हथियारों से लड़ रहे थे। दूसरी ओर अंग्रेजों के पास आधुनिक बंदूकें और प्रशिक्षित सेना थी।

अंग्रेजों का दमन

अंग्रेजी सरकार ने इस विद्रोह को कुचलने के लिए बड़ी सैन्य कार्रवाई की। कई महीनों तक संघर्ष चलता रहा। हजारों संताल वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हो गए। अंततः अंग्रेजों ने सिदो और कान्हू सहित अनेक नेताओं को गिरफ्तार कर फांसी दे दी या युद्ध में मार डाला।

इतिहासकारों के अनुसार इस आंदोलन में 10,000 से अधिक संतालों ने अपने प्राणों की आहुति दी। यह भारतीय इतिहास के सबसे बड़े आदिवासी जनविद्रोहों में से एक माना जाता है।

हूल क्रांति का महत्व

हूल क्रांति का महत्व कई कारणों से अत्यंत बड़ा है।

यह अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संगठित जनविद्रोहों में अग्रणी थी।

इसने आदिवासी समाज में स्वतंत्रता और स्वाभिमान की चेतना जगाई।

इस विद्रोह ने अंग्रेजों को अपनी प्रशासनिक नीतियों में परिवर्तन करने के लिए बाध्य किया। इसके बाद संतालों के लिए अलग प्रशासनिक क्षेत्र संताल परगना के गठन की दिशा में कदम उठाए गए। 1857 के व्यापक भारतीय विद्रोह से पहले इस आंदोलन ने अंग्रेजी शासन की कमजोरियों को उजागर कर दिया।

आज के संदर्भ में हूल

आज हूल क्रांति केवल इतिहास का विषय नहीं है, बल्कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष, सामाजिक न्याय और आत्मसम्मान का प्रतीक है। हर वर्ष 30 जून को झारखंड में हूल दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर सिदो-कान्हू, चांद-भैरव तथा फूलो-झानो के बलिदान को श्रद्धांजलि दी जाती है। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और सरकारी संस्थानों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

हूल की प्रासंगिकता

हूल क्रांति भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की एक अमूल्य धरोहर है। यह आंदोलन बताता है कि जब किसी समाज पर अत्याचार और शोषण की सीमा पार हो जाती है, तब वह अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उठ खड़ा होता है। सिदो-कान्हू और उनके साथियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर स्वतंत्रता, न्याय और स्वाभिमान का जो संदेश दिया, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। झारखंड की यह क्रांति केवल संताल समाज की नहीं, बल्कि पूरे भारत की साझी विरासत है। हूल के वीरों का बलिदान हमें यह प्रेरणा देता है कि अन्याय का विरोध, अपने अधिकारों की रक्षा और समाज की एकता ही किसी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होती है। इसलिए हूल क्रांति का इतिहास केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी साहस, स्वाभिमान और लोकतांत्रिक मूल्यों की प्रेरणा का स्रोत है।

हूल अंतिम विकल्प

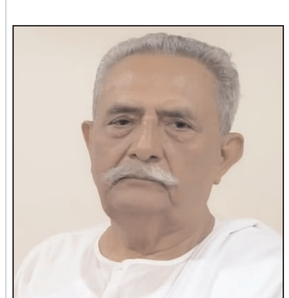
रामजन्म मिश्र

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पूर्व पीठिका के रूप में हूल का महत्वपूर्ण स्थान है। अन्यान्य, शोषण, उत्पीड़न के खिलाफ जितने भी आन्दोलन विश्व में हुए हैं, उनसे अलग 1855 का हूल आन्दोलन है क्योंकि इसकी शुरुआत समाज के अंतिम पायदान पर खड़े हजारों वंचित-पीड़ितों के द्वारा आन्दोलन किया गया। इस आन्दोलन के महानायक एक-दो नहीं चार सहोदर भाइयों ने किया।जिसकी शुरुआत साहिबगंज जिला के भोगनाडीह से हुई, जिसमें हजारों आन्दोलनकारी मौत के घाट उतर गये। तत्कालीन सरकार के कारिंदे, क्रूरता, जमींदार, सैनिकों को भी आन्दोलनकारियों के मौत के घाट उतार दिया। सरकार ब्रिटिश सरकार चिंतित हुई ।अंततः कानून बनाकर संताल परगना को प्रशासनिक ईकाई बनाना पड़ा। 1855 से लेकर आजतक राजनीतिक, सामाजिक,

प्रशासनिक परिवर्तन हुए। देश स्वतंत्र हुआ। स्थिति-परिस्थिति में बदलाव हुआ। बंगाल से बिहार व उड़ीसा अलग हुआ और सुवर्ण पूर्व बिहार से झारखंड अलग हुआ का प्रकृति झारखंड में अब आदिवासी नेतृत्व की ही जिन उद्देश्यों को लेकर आज से लगभग 170 वर्ष पूर्व हूल हुआ था, उससे कितना परिवर्तन एवं जनजातीय जीवन शैली में सुधार हुआ। अनेक अवसरों पर राजनीतिक-सामाजिक संगठनों के द्वारा जल-जंगल-जमीन, पर्यावरण-पारिस्थितिकी की रक्षा के लिए पुनः हूल की आवश्यकता बताते हैं।

संताल एक्सप्रेस दैनिक, दुमका के द्वारा हूल दिवस (30 जून) पर संवाद स्थापित करना चाहता है कि ÷क्या आज झारखंड जंगल-जंगल, जमीन, पर्यावरण-पारिस्थितिकी की रक्षा के लिए एक और हूल आवश्यक है

सिद्धो-कान्हू-चाँद-भैरव भाइयों के द्वारा जो हूल हुआ था, उस समय परिस्थिति अलग थी। सामने ब्रिटिश और महाजन थे। लेकिन आज भारत स्वतंत्र है, उसका अपना संविधान है। कोई भी आन्दोलन, हूल, अभियान संविधान के शीर्ष मानते हुआ करना है। जो विषय है वह सर्वाधिक प्रासंगिक है। विकास के नाम पर विस्थापन के खिलाफ, प्राकृतिक संसाधनों, जल स्रोतों, नदियों, पोखरों एवं जंगलों को बचाने के लिए हूल प्रासंगिक बन जायगा। प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर झारखंड के खनिजों का उत्खनन हो रहा है जहाँ विस्थापन, जंगल कटाई एवं जल स्रोतों के खिलाफ व कानूनों के दायरे में माँगों के लिए हूल करना है।

झारखंड राज्य का निर्माण जल-जंगल-जमीन की रक्षा के

साथ ही आदिवासियों के पारंपरिक न्याय व्यवस्था की रक्षा के लिए भी हुआ है। संविधान में जनजातीय क्षेत्र के लिए विशेष प्रावधान है उससे अवमानना के खिलाफ हूल प्रासंगिक हो जायगा। वर्तमान में आदिवासी नेतृत्व की सरकार है जो झारखंड के विकास के लिए काम कर रही है। संवेदनशील सरकार से संवाद स्थापित कर प्रसंगानुकूल विषयों का समाधान हो, अन्यथा विवश होकर पीड़ित समुदाय पुनः हूल का आह्वान क्या नहीं करेंगे? समस्याओं का समाधान हूल से नहीं बातों से ही श्रेयस्कर है।

रामजन्म मिश्र
साहिबगंज

171 साल बाद भी संताल हूल है प्रासंगिक, जारी है मुद्दों की लड़ाई

डॉ. सुमन सिंह

30 जून को न सिर्फ झारखंड-बिहार के साथ ही पश्चिम बंगाल और ओडिशा के आदिवासी इलाकों में हूल दिवस मनाया जाता है।171 साल पहले 1855 में 30 जून के दिन ही संताल हूल के महानायकों सिदो मुर्मू और कान्हु मुर्मू के नेतृत्व में महाजनी शोषण और जमींदारों एवं अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ संतालों ने विद्रोह कर दिया था,जो इतिहास के पन्नों में संताल हूल (संताल क्रांति) के रूप में दर्ज है।30 जून का यह ऐतिहासिक दिन स्मृति दिवस के साथ संताल समाज के स्वाभिमान और अधिकारों के लिए संघर्ष को याद करने का दिन है।संताल हूल केवल शोषण और अत्याचार के खिलाफ एक बड़ा जन आंदोलन था।

संसाधनों पर कब्जे के खिलाफ एक व्यापक जनाक्रोश था।यह जल,जंगल,जमीन के साथ आदिवासी अस्मिता,अस्तित्व और सम्मान की लड़ाई थी।आज संताल हूल के 171 वर्षों बाद भी यह सवाल अपनी जगह कायम है कि संताल हूल के जो मुद्दे थे और तब की जो परिस्थितियां थीं,उसमें अहम बदलाव हुए या फिर आज भी किसी न किसी रूप में संताल हूल की परिस्थितियां बरकरार हैं।यह जगजाहिर है कि झारखंड प्राकृतिक संसाधनों और कोयला, लौह अयस्क, पत्थर, अभ्रक, बॉक्साइट जैसे कई खनिज-संपदा से समृद्ध राज्य है।यह भी सच है कि प्राकृतिक खनिज-संपदा से भरपूर झारखंड के आदिवासी और मूलवासी आज भी गरीब हैं।यह स्थिति तब है जबकि खनिजों की खदानें अधिकांशतः आदिवासियों की जमीन पर है।अपनी ही जमीन पर चल रही खदानों में यहां के आदिवासी मजदूर बनकर काम करने को मजबूर हैं।अपनी जमीन की सुरक्षा करना आदिवासियों के लिए एक बड़ी चुनौती है और विस्थापन का डर सबसे बड़ी समस्या।खनिजों के खनन के मकसद से कब कौन कम्पनी आ जाए और हमारी जमीन छीन जाए,यह चिंता आज आदिवासी समाज को सबसे अधिक सत्ता रही है।लोग गरीबी के साथ जमीन को लेकर भारी असुरक्षा की आशंका के बीच जी रहे हैं।जंगल आदिवासी जनजीवन का आधार रहा है।उनकी आजीविका का बहुत बड़ा आधार जंगल रहा है।घने जंगल कट चुके हैं और जमीन खतरे में है। लोहा-कोयला की खदानों, कल-कारखानों, बड़े-बड़े डैम और इंफ्रास्ट्रक्चर विकास के नाम पर अब तक लाखों परिवार अपनी जमीन से विस्थापित हो चुके है। अधिकांश विस्थापित परिवारों को न पर्याप्त मुआवजा मिला और न उन्हें पुनर्वासित किया गया।वनाधिकार,जमीन अधिग्रहण और पर्यावरणीय असंतुलन के जो हालात बने हैं,हम कह सकते हैं कि संताल हूल के 171 साल बाद भी झारखंड में जल, जंगल और जमीन बहुत बड़ा मुद्दा है।

संताल परगना में जल,जंगल और जमीन से जुड़े प्रमुख मुद्दे

झारखंड खास कर संताल परगना में जल, जंगल और जमीन आदिवासियों के लिए सिर्फ संसाधन नहीं है। जल,जंगल और जमीन से उनकी पहचान और संस्कृति जुड़ी हुई है।जल,जंगल,जमीन उनके अस्तित्व का आधार है। जल,जंगल और जमीन से जुड़े संताल परगना के कुछ प्रमुख मुद्दे इस प्रकार हैं-

1.जमीन कब्जा और जमीन का अवैध हस्तांतरण

संताल परगना काश्तकारी कानून (एसपीटी एक्ट) के द्वारा जमीन की खरीद-बिक्री पर रोक है।इसके बावजूद बड़े पैमाने पर आदिवासियों की जमीन पर लोगों ने कब्जा कर रखा है।अवैध रूप से जमीन हस्तांतरण भी हो रहा है।बिचौलियों की सक्रियता से फर्जी दस्तावेज के माध्यम से जमीन का हस्तांतरण हो रहा है।

2.कोयला-पत्थर खदानों में जा रही जमीन, बढ़ रहा प्रदूषण

संताल परगना में धड़ाधड़ कोयला खदानें खुल रही हैं।दुमका,पाकुड और साहिबगंज इलाके में रैयती जमीन पर एक हजार से अधिक पत्थर खदानें और स्टोन क्रशर चल रही हैं।खनन कार्य से रैयतों को दोहरी मार पड़ रही है।एक तो अपनी जमीन से विस्थापित होना पड़ रहा है और दूसरे खनन से होने वाले प्रदूषण के खतरे से जूझना पड़ रहा है।

3.विकास के नाम पर जमीन अधिग्रहण

जमीन संताल हूल का बड़ा मुद्दा था।आज भी संताल परगना में आदिवासियों के लिए जमीन बचाना बड़ी चुनौती है।पत्थर-कोयला खदानों के लिए आदिवासियों की जमीन बाहरी और कम्पनियों का कब्जा हो रहा है। सड़क, उद्योग, रेलवे, पावर प्रोजेक्ट के लिए हो रहे जमीन अधिग्रहण से भी आदिवासी अपनी जमीन से विस्थापित हो रहे हैं।

4.बालू खनन से नदियों पर संकट, प्राकृतिक जल स्रोत भी सूखे

नदियों से बड़े पैमाने पर बालू के वैध-अवैध खनन से नदियों का अस्तित्व संकट में है।प्राकृतिक जल स्रोतों भी तेजी से सूख रहे हैं।नदी-तालाब, कुआं और अन्य प्राकृतिक जल स्रोतों के सूखने से आम जनजीवन के साथ ही विशेष रूप से यहां का आदिवासी जन जीवन प्रभावित हुआ है।

5.जंगल कटने से आजीविका पर असर

वन माफियाओं की सक्रियता से बड़े पैमाने पर जंगल कट गए।इससे भी आदिवासी जनजीवन प्रभावित हुआ।आदिवासी जीवन शैली में जंगल का महत्वपूर्ण स्थान है।दतुवन,जलावन के लिए लकड़ी,महुआ,साल पत्ता,तेंदूपत्ता,फल और औषधि आदि से आदिवासियों की आजीविका चलती रही है।जंगल पर आदिवासियों के परम्परागत अधिकार का जो भाव था,वह अब नहीं रहा।आदिवासियों के बीच वनाधिकार पट्टा वितरण की योजना भी सुस्त गति से चल रही है।

6.परंपरागत स्वशासन व्यवस्था कमजोर, पेसा कानून भी प्रभावी नहीं

संताल परगना के आदिवासी गांवों में आदिवासी समाज की अपनी परम्परागत स्वशासन व्यवस्था रही है।ग्राम सभा का विशेष महत्व रहा है जिसका संचालन गांव का परम्परागत ग्राम प्रधान करते रहे हैं।धीरे-धीरे आदिवासियों की यह परम्परागत स्वशासन व्यवस्था दम तोड़ रही है।

झारखंड सरकार ने पेसा एक्ट के माध्यम से ग्राम सभा को सशक्त करने की पहल की है,पर जमीनी स्तर पर अभी इसका प्रभाव नहीं दिख रहा है।

7.रोजगार के लिए पलायन मजबूरी

आज के युवाओं के समक्ष सबसे बड़ी समस्या रोजगार का संकट है।आदिवासी युवा सबसे अधिक प्रभावित हैं।आज काम की तलाश में दिल्ली-मुम्बई और अन्य महानगरों में पलायन कर रहे लोगों में सर्वाधिक आदिवासी हैं।काम दिलाने के नाम पर आदिवासी युवतियों का कई तरह से शोषण होने की खबरें अक्सर सामने आती है।

संताल हूल की अमर विरासत प्रतिरोध से प्रेरणा तक

कुमार कृष्णन

जब पूरा देश महान संताल हूल की 171वीं वर्षगांठ मना रहा है, तब यह अवसर उन अमर वीरों–सिदो मुर्मू, कान्हू मुर्मू, चांद मुर्मू, भैरव मुर्मू, फूलो मुर्मू, झानो मुर्मू तथा उन हजारों अनाम स्त्री-पुरुषों–को श्रद्धापूर्वक नमन करने का है, जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और शोषणकारी व्यवस्था के विरुद्ध अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास की एक अमिट गाथा लिखी।

30 जून 1855 को वर्तमान झारखंड के भोगनाडीह गांव से आरंभ हुआ संताल हूल केवल एक आदिवासी विद्रोह नहीं था। यह अन्याय, दमन और शोषण के विरुद्ध स्वाभिमान, आत्मसम्मान और स्वतंत्र अस्तित्व की उद्घोषणा थी। अंग्रेजी राज की दमनकारी भू-राजस्व व्यवस्था, महाजनों की सूदखोरी और जमींदारी शोषण के विरुद्ध उठी यह जनलहर भारतीय इतिहास के सबसे बड़े जनआंदोलनों में से एक मानी जाती है। इतिहासकार भले ही इसे भारत का पहला औपनिवेशिक-विरोधी आंदोलन कहने पर अलग-अलग मत रखते हों, लेकिन इस बात पर व्यापक सहमति है कि यह ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सबसे प्रारंभिक और व्यापक जनविद्रोहों में से एक था।

लगभग डेढ़ शताब्दी से अधिक समय बीत जाने के बाद भी संताल हूल केवल इतिहास का अध्याय नहीं है; वह न्याय, समानता, आदिवासी अधिकारों और लोकतांत्रिक भागीदारी की निरंतर प्रेरणा बना हुआ है। यह हमें याद दिलाता है कि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाता।

शोषण के विरुद्ध उठी स्वाभिमान की आवाज़

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक वर्तमान झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल के वनांचलों में रहने वाला

संताल समाज गहरे आर्थिक और सामाजिक संकट से गुजर रहा था। अंग्रेजी शासन की नई भूमि व्यवस्था ने उनकी पारंपरिक सामुदायिक जीवन-पद्धति को तोड़ दिया। महाजन, साहूकार और जमींदार कर्ज के जाल में फंसाकर उनकी जमीनें हड़पने लगे। खेती उजड़ने लगी, बेगार बढ़ी और सदियों से अपनी धरती पर स्वतंत्र जीवन जीने वाला समाज धीरे-धीरे विस्थापन और अपमान का शिकार होने लगा।

ऐसे कठिन समय में सिदो और कान्हू के नेतृत्व में चांद, भैरव, फूलो, झानो तथा हजारों साधारण संताल स्त्री-पुरुष एकजुट हुए। उन्होंने अपने व्यक्तिगत हितों के लिए नहीं, बल्कि समाज की अस्मिता, सम्मान और अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष का बिगुल फूंका।

संताल हूल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि यह किसी राजा, रियासत या साम्राज्य का युद्ध नहीं था। यह किसानों, श्रमिकों, शिकारियों, कारीगरों, महिलाओं और ग्रामीण समुदाय का सामूहिक आंदोलन था।

इस संघर्ष में फूलो और झानो मुर्मू की भूमिका भारतीय इतिहास में महिला साहस का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता और स्वाभिमान की लड़ाई केवल पुरुषों की नहीं होती। उन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने समाज, अपनी धरती और अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष किया।

हूल की ज्वाला शीघ्र ही सैकड़ों गांवों तक फैल गई। अंग्रेजी सत्ता ने इसे कुचलने के लिए भारी सैन्य बल का प्रयोग किया। हजारों लोग शहीद हुए, अनेक गांव उजाड़ दिए गए और अंततः 1856 की शुरुआत तक इस विद्रोह को दबा दिया गया। किंतु विचारों की पराजय कभी नहीं हुई। सैन्य हार के बावजूद हूल नैतिक विजय का प्रतीक बन गया।

हूल की ऐतिहासिक उपलब्धियां

संताल हूल को भले ही तत्कालीन शासन ने बलपूर्वक दबा दिया, लेकिन इसने ब्रिटिश प्रशासन को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए विवश कर दिया। आदिवासी क्षेत्रों के प्रशासन में सुधार किए गए और आगे चलकर संताल परगना को एक विशिष्ट प्रशासनिक क्षेत्र के रूप में विकसित किया गया, ताकि वहां के लोगों की समस्याओं का अलग ढंग से समाधान किया जा सके।

इस आंदोलन ने यह भी सिद्ध कर दिया कि समाज का सबसे वंचित वर्ग भी संगठित होकर साम्राज्यवादी सत्ता को चुनौती दे सकता है। यही कारण है कि संताल हूल को भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की प्रारंभिक जनधाराओं में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

स्वतंत्र भारत के संविधान ने अनुसूचित जनजातियों को विशेष संरक्षण दिया। पाँचवीं अनुसूची, वनाधिकार कानून, पेसा कानून तथा अनुसूचित क्षेत्रों की विशेष व्यवस्थाएं आदिवासी अधिकारों की रक्षा के उद्देश्य से बनाई गईं। झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों का गठन भी लंबे जनसंघर्षों का परिणाम था।

फिर भी वास्तविकता यह है कि आज भी अनेक आदिवासी समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पोषण और आधारभूत सुविधाओं के मामले में पिछड़े हुए हैं। विस्थापन, भूमि अधिकार, पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार जैसे प्रश्न आज भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं।

इसीलिए संताल हूल आज भी हमसे एक मूल प्रश्न पूछता है–विकास किसके लिए है, और विकास की प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों की भागीदारी कितनी सुनिश्चित है?

इतिहास से वर्तमान तक

आज अनेक विद्वान और सामाजिक चिंतक औपनिवेशिक काल के संसाधन दोहन और वर्तमान समय की कुछ विकास संबंधी चुनौतियों के बीच समानताओं पर चर्चा करते हैं। वहीं यह भी सत्य है कि स्वतंत्र भारत एक लोकतांत्रिक राष्ट्र है, जहां संविधान, न्यायपालिका और जनभागीदारी के माध्यम से नागरिक अपने अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं।

इसलिए संताल हूल का सबसे बड़ा संदेश विकास का विरोध नहीं, बल्कि ऐसे विकास का समर्थन है जिसमें न्याय, सम्मान, पारदर्शिता और सहभागिता सुनिश्चित हो।

एक अमर प्रेरणा

संताल हूल केवल संताल समाज की विरासत नहीं, बल्कि भारत की लोकतांत्रिक चेतना की अमूल्य धरोहर है। यह हमें सिखाता है कि स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ न्याय है, सम्मान है और समान अवसर है।

सिदो, कान्हू, चांद, भैरव, फूलो, झानो और हजारों अनाम शहीदों का बलिदान आज भी हमें प्रेरित करता है कि हम ऐसा भारत बनाएं, जहां विकास समावेशी हो, प्रकृति सुरक्षित हो, आदिवासी संस्कृति सम्मानित हो और समाज का अंतिम व्यक्ति भी न्याय का अधिकार पा सके।

संताल हूल अतीत की केवल एक ऐतिहासिक घटना नहीं, बल्कि साहस, एकता और स्वाभिमान का वह शाश्वत संदेश है, जो आने वाली पीढ़ियों का मार्गदर्शन करता रहेगा। यही उन अमर शहीदों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हुल दिवस की प्रासंगिकता एवं वर्तमान परिस्थिति जनजातियों की सोच एवं लक्ष्य

डॉ नजरुल इस्लाम

हुल दिवस के नाम पर हर वर्ष 30 जून को हमारे अमर शहीद सिदो कान्हू की जन्मस्थली व पैतृक आवास में विगत 20 वर्षों से बरहेट भोगनाडीह में, राजकीय समारोह का आयोजन होता रहा है जिसमें राज्यपाल / मुख्यमंत्री / केंद्रीय मंत्री और राजकीय मंत्री समारोह के मुख्य अतिथि होते हैं।

हुल दिवस यानी संथाली विद्रोह (क्रांति) को कहा जाता है संताल के नेतृत्व कर्ता और क्रान्तिवीर सिदो कान्हू, चांद, भैरव, फूलो-झानो के अलावे लगभग 50 हजार संताल विद्रोहियों ने अंग्रेजी हुकूमत के द्वारा शोषण और अत्याचार के विरुद्ध जल, जंगल, जमीन एवं महाजनों, साहुकारों के दमन और शोषण के खिलाफ 1855 में पूरी तैयारी के साथ अंग्रेजी हुकूमत को ललकारा एवं हमला बोल दिया। आज की वर्तमान परिस्थितियों में विकास और औ?द्योगिकरण के दौर में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और इन अधिकारों का हनन के बीच इस क्रांति यानी हुल दिवस की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। इस दिवस यानी 1855 का वर्ष संताल विद्रोह से शुरु होकर ये प्रथम स्वतंत्रता संग्राम यानी 1857 देश में अंग्रेजों के विरुद्ध पहली स्वतंत्रता की आवाज बन देश के कोने-कोने में गूंजा कि अब भारत आजादी चाहता है -संताल विद्रोह ने भारत के अंदर लोगों में क्रांति की आवाज उठाने वालों को एक जबरदस्त अवसर मिला और फिर लगातार आगे देश आजादी की लड़ाई पूरे देश के स्तर से छिट पुट होती रही और नतीजतन महात्मा गाँधी के नेतृत्व में 1947 में भारत को आजादी मिल गई। भारत छोड़कर अंग्रेज भाग गए।

संताल हुल के बदौलत ही आज हमारे संताल में SPT Act को अंग्रेजों ने लागू किया था जो आज भी बरकरार है इस Act से संथालों की जमीन को न कोई खरीद सकता है न बेच सकता है ये Non trnseble भी है। यह जमीन संबंधी मजबूत कानून सिदो कान्हू के सौजन्य से ही संथालों को मिला ताकि हम अपनी जल जंगल जमीन की रक्षा कर सकें।

इसलिए निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि हुल दिवस की प्रासंगिकता आज भी बरकरार है इसलिए हर वर्ष 30 जून को हुल दिवस मनाया जाता है ताकि प्रथम स्वतंत्रता सेनानी सिदो कान्हू चाँद भैरव फूलो-झानो जैसे अमर शहीदों को नमन किया जा सके उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सके।

प्रभारी प्राचार्य
शिबू सोरेन जनजातीय डिग्री महावि बोरियो साहेबगंज

हुल का महाशंखनाद और भारत में सारथी दल की अपरिहार्यता

शशिशेखर, संपादक, यूथ एजेंडा

वर्ष 1855, भोगनाडीह का मैदान। जहाँ 400 से अधिक गांवों के 50,000 से ज्यादा संताल आदिवासी एकजुट हुए थे। ब्रिटिश हुकूमत के स्थायी बंदोबस्त (Permanent Settlement) के कारण सिद्धू-कान्हू की इस पावन माटी को ज़मींदारों, साहूकारों और भ्रष्ट ब्रिटिश दारोगों (दिक्षुओं) के चंगुल में झोंक दिया गया था। जब शोषण अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा, तो तीर-धनुष और पारंपरिक हथियारों से लैस आदिवासियों ने उस समय की दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति यानी ब्रिटिश साम्राज्य की चूलें हिला दीं। 20,000 से अधिक संताल वीरों ने अपनी माटी के लिए प्राणों की आहुति दे दी, जिसके परिणामस्वरूप अंततः अंग्रेजों को संताल परगना काश्तकारी अधिनियम (SPT Act) पारित करने पर मजबूर होना पड़ा।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : जल-जंगल-जमीन और आत्मगौरव की रक्षा

सांस्कृतिक रूप से हुल कोई साम्राज्य विस्तार की लड़ाई नहीं थी। यह प्रकृति और मनुष्य के बीच के तादात्म्य की रक्षा का आंदोलन था। संताल संस्कृति में जमीन केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि उनके पुरखों की आत्मा और अस्मिता है। हुल क्रांति ने दुनिया को सिखाया कि जब सांस्कृतिक पहचान और अपनी जड़ों पर प्रहार होता है, तो समाज का अंतिम व्यक्ति भी एक महायज्ञ का योद्धा बन जाता है।

राजनैतिक पृष्ठभूमि : औपनिवेशिक तंत्र और लालफीताशाही के विरुद्ध विद्रोह

राजनैतिक दृष्टि से यह आंदोलन ब्रिटिश हुकूमत की क्रूर लालफीताशाही, पक्षपातपूर्ण न्यायिक व्यवस्था और शोषक आर्थिक नीतियों के खिलाफ पहला संगठित विद्रोह था। यह इस बात का प्रमाण था कि यदि शासन का ढांचा लोक-कल्याणकारी न होकर केवल दोहन (Extraction) पर आधारित होगा, तो विद्रोह अपरिहार्य है।

वर्तमान परिदृश्य : बदला हुआ समय, लेकिन वही सांगठनिक शून्यता*

आज हम आजाद भारत में जी रहे हैं, लेकिन हुल क्रांति के 170 से अधिक वर्षों बाद भी क्या हमारे देश का युवा, हमारा श्रमिक और हमारा वंचित समाज वास्तविक अर्थों में समृद्ध हो पाया है?

नया औपनिवेशिक तंत्र- आज बंदूकधारी अंग्रेज तो नहीं हैं, लेकिन प्रशासनिक लालफीताशाही और बाबूशाही का वही पुराना शोषक ढांचा आज भी कायम है। एक आम युवा को अपनी बुनियादी जरूरतों, अधिकारों और रोजगार के लिए आज भी दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते हैं।

वोट बैंक और रेवड़ी की राजनीति : वर्तमान स्थापित राजनैतिक दलों ने शोषितों, आदिवासियों और युवाओं को केवल एक वोट बैंक बनाकर छोड़ दिया है। उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के बजाय खोखले नारों और चुनावी फ्रीबीज (मुफ्त की रेवड़ियों) का आदी बनाया जा रहा है, जो उनके आत्मगौरव और पुरुषार्थ को चोट पहुँचाता है।

1855 का संताल हूल का संकल्प : 2026 की चुनौती

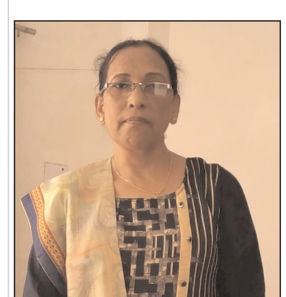

डॉ अन्नपूर्णा झा

विभिन्न क्षेत्रों के जनजातीय विद्रोहों में संताल हूल या संतालों का विद्रोह सबसे जबरदस्त और प्रभावपूर्ण था। यह विद्रोह 1855 ई. में आरंभ हुआ जिसका श्रेय भोगनाडीह के निवासी सिदो- कान्हू, चांद-भैरव तथा फूलो-झानो भाई-बहनों को दिया जाता है।

1790 ई. से पूर्व संताल परगना क्षेत्र संतालों का निवास स्थान नहीं था। वे वीरभूम, धालभूम, सिंहभूम, मानभूम तथा बांकुड़ा आदि क्षेत्रों से पलायन कर वहां पहुंचे थे। वह मूल रूप से पहाड़िया जनजाति का निवास स्थान था।1790 ई. से संतालों का इस क्षेत्र में आगमन आरंभ हुआ तथा 1851 ई. तक यहाँ के एक बड़े भू-भाग में इनके गांव बस गए।

1765 ई. में अंग्रेज़ों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिलने के बाद उनकी रुचि अधिकाधिक राजस्व और अन्य तरीकों से धन कमाने में थी। आम लोगों की सुविधाओं, मूलभूत आवश्यकताओं और परेशानियों की उन्हें कोई परवाह नहीं थी। संताल कई प्रकार से दमन और उत्पीड़न के शिकार थे। न्याय पाने के लिये उन्हें अपने मूल स्थान से काफी दूर देवघर या भागलपुर जाना पड़ता था। अनगिनत परेशानियों, महाजनों के शोषण, सरकार तथा न्यायपालिका के भ्रष्टाचार, पुलिस द्वारा उत्पीड़न और प्रशासनिक उपेक्षा से पीड़ित हजारों संथालों ने एकजुट होकर विद्रोह किया।इस विद्रोह के संबंध में एक तत्कालीन लेखक द्वारा ÷कलकत्ता रिव्यू में एक लेख छापा गया था जिसके कुछ अंश इस प्रकार हैं

जमींदार, पुलिस, राजस्व विभाग और अदालतों ने संथालों पर अत्यधिक जुल्म किया।उनकी जमीन -जायदाद छीन ली। हर कदम पर उन्हें अपमानित किया जाता और मारा-पीटा जाता था। उन्हें कर्ज देकर 50 से 500 प्रतिशत तक की दर से ब्याज वसूला जाता था। ताकतवर और धनी लोग अक्सर उनके घरों को उजाड़ देते और उनकी खड़ी फसलों को बर्बाद कर देते थे।ऐसी घटनाएं आम हो चुकी थी। गैर आदिवासी और सरकारी कर्मचारी भी संतालों की नजर में अत्याचारी थे जो संतालों से बेगार कराते थे और उन्हें परेशान करते थे।

1854 ई. आते-आते संतालों में प्रतिरोध आरंभ होने लगा और वे विद्रोह की तैयारी करने लगे। जमींदारों और महाजनों को लूटने की इक्का-दुक्का घटनाओं के बाद 30 जून 1855 को भगनाडीह के 400 आदिवासी गांवों के हजारों आदिवासियों ने एकत्र होकर एक सभा की जिसमें बाहरी लोगों को भगाने, विदेशियों का राज सदा के लिये समाप्त करने तथा अपना राज स्थापित करने के लिये विद्रोह करने का निर्णय लिया गया। विद्रोहियों के प्रमुख नेता सिद्धू- कान्हू द्वारा घोषणा की गई कि ईश्वर ने उन्हें आजादी के लिये हथियार उठाने का निर्देश दिया है। इस घटना के बाद गांवों में जुलूस निकाले जाने लगे साथ ही ढोल और नगाड़े बजाकर संघर्ष का आह्वान किया जाने लगा।

इतिहास विभाग,
डिग्री कॉलेज मनोहरपुर, कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा।

पूर्वाग्रह मुक्त समाज के लिए मनोवैज्ञानिक हूल जरूरी

प्रो. विनोद कुमार

संसार में किसी भी प्रकार का विरोध या संघर्ष के पीछे अन्याय, असहनीय अत्याचार एवं जुर्म की दास्तां होती है। संताल हूल उसी दास्तां का एक प्रतिबिम्ब है जो अपने अस्तित्व, सम्मान और अधिकारों के लिए छेड़ी गई जंग है। संताल समुदाय द्वारा किया गया यह क्रान्ति यानि हूल मूलतः उस दमनकारी नीति, जुल्म और शोषण के ख़िलाफ था जो संतालों को शांत, संयमित और सुरक्षित जीवन जीने के रास्ते या तो कांटे बोए जा रहे थे या फिऱ अंग्रेजी हुकूमत जीने के रास्ते बहुत ही संकीर्ण कर रहे थे। 1855 के हूल का उद्देश्य जहां समाज को सामाजिक जीवन में बेहतर बदलाव कर हर तरह से शिक्षा में व्यापक सुधार लाकर आर्थिक और राजनीतिक विकास करना था आज वही परिकल्पना संकीर्ण एवं पूर्वाग्रही मानसिकताओं के कारण वर्ष 2026 के पूर्वार्द्ध तक सफ़ल और सार्थक होने से काफ़ी पीछे है। वर्ष 2000 में अलग झारखंड राज्य बन कर यहां की उच्च शिक्षा की स्थिति में न तो अपेक्षित सुधार है और न ही बदलाव। जबकि शिक्षा ही उज्जवल भविष्य का केंद्र विंदु है। संपूर्ण विकास की धूरी है। विडंबना है कि यहां व्यवस्था विशेष से उच्च शिक्षा तक तथाकथित तथा ओछी मानसिकता वाले लोगों द्वारा जायज़ काम करने वालों को जाति, धर्म के नाम भेद किया जाता है। उसे झूठी बातों में फंसा कर बदनाम किया जाता है। उसका हक छीना जाता है। पद, पावर और राजनीतिक पहुंच का का ऐसा क्रूर वातावरण निर्मित किया जहां लोग डर के मारे अपने पर होते जुल्म पर भी जुबां से बोल नहीं पाते है। लोग जानकार भी अपनी सुरक्षा को ले विचारों की अभिव्यक्ति से डरते है वहीं मीडिया भी नकारात्मक बातों की टीआरपी बढ़ाने में मस्त एवं व्यस्त दिखती है। सच्चाई और अच्छे कामों को जहां उत्साहवर्धन होना चाहिए, सहयोग और समर्थन किया जाना चाहिए वहां ईर्ष्या का शिकार बनाकर उसके साथ भेदभाव की रणनीति अपनाई जाती है। समाज को इसके लिए भी हूल की जरूरत है जो समानता, पारदर्शिता, स्पष्टता और निष्पक्षता की कसौटी पर कस चलता हो। हूल अस्तित्व के वास्ते जल, जंगल, जमीन, पलायन, विस्थापन, ग़रीबी, बेरोजगारी, भुखमरी के लिए हो जरूरी है साथ ही नैतिकता, उच्च चिंतन, और स्वच्छ विचारों और व्यवहारों को उदित एवं अभिप्रेरित करने वाले संस्कारों एवं सभ्यताओं के लिए भी हो जिससे हूल की सार्थकता सुनिश्चित हो।

हूल से हाल तक : झारखंड का यथार्थ

डॉ एस के झा

झारखंड में हूल आंदोलन इस बात का साक्षी है कि अतीत में (1855) में यहां के धरतीपुत्र के साथ हुई उत्पीड़न, प्रशासनिक उपेक्षा, भ्रष्टाचार और सरकार के गलत नीतियों के कारण एक ऐसी आवाज सिदो-कान्हू के नेतृत्व में बुलंद होकर आयाम ली जिससे अंग्रेजों को सोचने के लिए विवश होना पड़ा, इतना ही नहीं संताल परगना टेनेंसी एक्ट पारित करने के लिए बाध्य होना पड़ा। आजादी के बाद राष्ट्र को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने की दिशा में बहुत सारी नीतियां बनाई गई। इसी कड़ी में 2000 ई0में झारखंड राज्य की स्थापना हुई ताकि प्राकृतिक संसाधनों से लबरेज इस क्षेत्र का समुचित विकास हो सके। बेशक विगत, 26 वर्षों में राज्य के कई क्षेत्रों में विकास की नई गाथा लिखी गई, परंतु आज भी 1855 ई0के तरह ही कई क्षेत्रों में शोषण, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक उपेक्षाएं, असमानताऐं और कुछ नीतियां कायम है जो हूल आंदोलन के पृष्ठभूमि में थी। भारतीय लोकतंत्र की बहुत बड़ी खासियत है कि यहां इतने सारे फ्लैगशिप स्कीम चलाए जाते हैं, वह अगर विकास के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्तियों तक पहुंच जाय तो निसंदेह गरीबी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से निजात पाया जा सकता है। भ्रष्टाचार जो आज सिर पर चढ़कर तांडव मचा रहा है, राज्य में कार्यरत संविदा कर्मी जिस तरह एक सुरक्षित करियर के लिए जद्दोजहद कर रहा है,वह कहीं ना कहीं शोषित हो रहा है तथा प्रशासनिक उपेक्षाओं का दंश झेल रहा है।राज्य के उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शत प्रतिशत विश्वविद्यालय आज भी शिक्षकों की घोर किल्लतों से जुझ रहा है।

समाजशास्त्र विभाग,
एबीएम कॉलेज जमशेदपुर,

धनबाद में बिना नक्शा के बना गोल्डन वेडिंग पैलेस होगा जमींदोज

संताल एक्सप्रेस

धनबाद। भूली आरा मोड़ बाईपास में बना गोल्डन वेडिंग पैलेस को जमींदोज किया जाएगा। नगर निगम ने यह आदेश जारी किया है। वेडिंग पैलेस का निर्माण नगर निगम से नक्शा पास कराए करा लेने का आरोप है। वेडिंग पैलेस के निर्माणकर्ता पर दस लाख का जुर्माना भी लगाया गया है। वेडिंग पैलेस स्क्रैप कारोबारी गोल्डन खान का बताया गया है। गोल्डन भगोड़े अपराधी प्रिंस खान का करीबी बताया जाता है। निगम की यह कार्रवाई प्रिंस खान के आर्थिक नेटवर्क पर चोट के रूप में देखी जा रही है। निगम की ओर से हाल के दिनों किसी भवन को तोड़ने के आदेश देने का पहला मामला है। निगम ने वेडिंग पैलेस के मालिक निर्माण कार्य को हटा लेने का 15 दिनों का अल्टीमेटम दिया है। इसके बाद निगम खुद से भवन को जमींदोज कर देगा। भवन को जमींदोज करने ने आनेवाला खर्च भी संचालक से वसूलने की चेतावनी दी गई है। निगम से मिली जानकारी के अनुसार गोल्डन वेडिंग पैलेस का निरीक्षण किया गया था। निरीक्षण में पाया गया था कि वेडिंग पैलेस में पार्किंग की कोई व्यवस्था ही नहीं है। निर्माण संबंधी अन्य जरूरी उपाय भी नहीं किये गए है। निगम ने संचालक के नाम नोटिस जारी कर स्थिति स्पष्ट करने का निर्देश दिया था। नक्शा और अन्य जरूरी कागजात भी जमा करने को कहा गया था। निगम के अधिकारियों ने बताया कि संचालक की ओर से कोई वैध कागजात नहीं उपलब्ध कराया है। इसके बाद ही निगम ने दंडात्मक कार्रवाई का निर्णय लिया है। नगर निगम के मुताबिक भवन स्वामी को कई बार अपना पक्ष रखने और जरूरी दस्तावेज जमा करने का मौका दिया गया।

सांसद ढुलू महतो सबसे बड़ा माफिया : अरूप चटर्जी

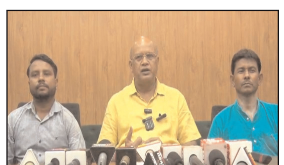

धनबाद। धनबाद सांसद ढुलू महतो और निरसा विधायक अरूप चटर्जी के एक दूसरे पर बयानबाजी से धनबाद की राजनीतिक फिजा गरमा गई है। सोमवार को अरूप चटर्जी ने सांसद ढुलू महतो को धनबाद का सबसे बड़ा माफिया करार दिया। सर्किट हाउस में प्रेस कांफ्रेंस में विधायक ने सांसद पर कई गंभीर आरोप लगाये। सांसद को निर्दलीय चुनाव लड़कर जीतने की चुनौती दे डाली। विधायक अरूप चटर्जी सांसद ढुलू महतो को हालिया बयान पर नाराजगी जता रहे थे। सांसद ने अरूप चटर्जी के स्वर्गीय पिता व निरसा के विधायक के विधायक रहे गुरुदास चटर्जी तल्ख़ टिप्पणी की थी और अरूप को अनुकंपा वाला विधायक बताया था।प्रेस कांफ्रेंस में नाराज दिख रहे विधायक अरूप चटर्जी ने कहा कि सांसद हर काम का श्रेय लेना चाहते हैं। अपने बलबूते तो एक नाली निर्माण का फंड भी नहीं ला पाये। गोविंदपुर व निरसा एलिवेटेड फ्लाई ओवर निर्माण का श्रेय लेने पर भी विधायक ने चुटकी ली। विधायक ने बताया कि ढुलू महतो के सांसद बनने के पहले ही एलिवेटेड फ्लाई ओवर निर्माण की योजना को मंजूरी मिल गई थी। गया पुल चौड़ीकरण निर्माण मामले में भी विधायक अरूप ने सांसद ढुलू महतो को अनावश्यक रूप से श्रेय लेने वाला बताया। अरूप चटर्जी ने दावा किया कि पुल चौड़ीकरण धनबाद विधायक राज सिन्हा की देन है। विधायक ने कहा कि सांसद खुद को हरिश्चंद्र बताते हैं और दूसरों को माफिया कहते हैं, जबकि उनके कई मामलों की जांच होनी चाहिए।

एक जुलाई को डॉ. वीपी केशरी की मनेगी जयंती

रांची । झारखंड प्रदेश वैश्य मोर्चा के तत्वावधान में 1 जुलाई को डॉ. वीपी केशरी की जयंती रांची के रेडियम रोड स्थित आलोका सभागार में मनाई जायेगी. इस अवसर पर एक विचार गोष्ठी का भी आयोजन किया जायेगा. विचार-गोष्ठी का विषय होगा- झारखंड आंदोलन में वैश्य समाज की भूमिका और वर्तमान स्थिति. रांची जिला के पिठोरिया गांव के निवासी डॉ. वीपी केशरी साहित्यकार, शिक्षाविद् के साथ-साथ एक झारखंड आंदोलनकारी भी थे. सन् 1987 में झारखंड समन्वय समिति गठित कर झारखंड आंदोलन को उच्च मुकाम तक पहुँचाने में अग्रिम भूमिका अदा की. 11 अक्टूबर 2009 को हरमू मैदान में आयोजित वैश्य महारैली में वैश्य मोर्चा द्वारा उन्हें 'झारखंड वैश्य रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया था. यह सम्मान उन्हें भारत सरकार के तत्कालीन कोयला मंत्री श्रीप्रकाश जायसवाल के हाथों प्रदान किया गया था. डॉ. वीपी केशरी वैश्य मोर्चा को व्यक्तिगत तौर पर बहुत ही मानते थे और कार्यक्रमों/बैठकों में बोलते थे कि वैश्य मोर्चा ही समाज को जगा सकती है ।

चोरी-छिनतई करने वाले चार अपराधी गिरफ्तार

धनबाद। चोरी- छिनतई और दूसरी आपराधिक घटनाओं को अंजाम देने वाले गिरोह के चार सदस्य गिरफ्तार किये गए है। बलियापुर पुलिस ने सभी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किए गए लोगों के पास से सोने के जेवरात, चोरी के मोबाइल,दो मोटरसाइकिल तथा अन्य सामान बरामद किए गए हैं। पूछताछ में सभी ने कई घटनाओं में अपनी संलिप्तता स्वीकार की है। चारों को जेल भेज दिया गया है। सोमवार को सिटी एसपी ऋत्विक श्रीवास्तव ने बताया कि बलियापुर थ पुलिस ने चोरी और छिनतई की घटनाओं को अंजाम देने वाले एक गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए चार युवकों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से बड़ी संख्या में चोरी के मोबाइल फोन, सोने जैसे धातु के आभूषण, दो मोटरसाइकिल समेत अन्य सामान बरामद किया गया है। सिटी एसपी ऋत्विक श्रीवास्तव ने बताया कि 28 जून की रात बेलगड़िया इलाके में गश्ती के दौरान पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि बेलगड़िया फेज-2 स्थित तीन तल्ला पानी टंकी के पीछे झाड़ियों में कुछ युवक चोरी के सामान का बंटवारा कर रहे हैं। सूचना के आधार पर वरीय अधिकारियों को जानकारी देते हुए छापेमारी की गई।छापेमारी के दौरान पुलिस ने मौके से सुमित कुमार निषाद, शहबाज अंसारी उर्फ छोटू अंसारी, रोहित कुमार रजक और रवि बाउरी को गिरफ्तार किया।

चार साइबर ठग गिरफ्तार

पूर्वी सिंहभूम। जिला पुलिस की साइबर थाना टीम ने एक बड़े अंतरराज्यीय साइबर ठगी गिरोह का पर्दाफाश करते हुए चार शातिर साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। यह गिरोह लोगों को बैंक अधिकारी बनकर फोन करता था और खाता बंद होने या केवाईसी अपडेट नहीं होने का डर दिखाकर उनके मोबाइल पर फर्जी एपीके फाइल भेजता था। जैसे ही पीड़ित उस फाइल को इंस्टॉल करता था।

16 किलो गांजा के साथ दो गिरफ्तार

धनबाद। बलियापुर पुलिस ने 16 किलो गांजा के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए गांजा बरामद गांजा की अनुमानित कीमत लगभग 5 लाख रुपये बताई जा रही है। शुरुआती पूछताछ में दोनों से गांजे की खरीद-बिक्री और सप्लाई नेटवर्क के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।सिटी एसपी के मुताबिक बलियापुर थाना के नेतृत्व में गश्ती एवं छापामारी के क्रम में गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि दो व्यक्ति रखितपुर गुमटी के पास संदिग्ध अवस्था में देखे गए हैं।दो व्यक्ति अपने-अपने बैंग के साथ पैदल कुसमाटांड़ की ओर जा रहे थे।पूछताछ एवं बैग की तलाशी लेने पर गांजा बरामद किया गया। दोनों बैग में 8-8 पैकेट में 16 किलोग्राम गांजा बरागद हुआ. जिसका बाजार मूल्य 4 से 5 लाख रु है।गिरफ्तार तस्करो में विकास कुमार,नोएडा और दूसरा आरोपी श्यामा कांत सिंह, सिंदरी का निवासी है। फिलहाल पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि गांजे की खेप कहां से लाई गई थी और इसे किन इलाकों में सप्लाई किया जाना था। साथ ही इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों की तलाश भी जारी है।

एक भी पात्र मतदाता का नाम मतदाता सूची से नहीं छूटेगा: के रवि

धनबाद। राज्य मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने कहा कि 30 जून से 29 जुलाई बीएलओ मतदाता के घर-घर जाएं तो मतदाताओं को विगत विशेष गहन पुनरीक्षण के मतदाता सूची से उनकी मैपिंग अवश्य सुनिश्चित करें। राज्य में चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम में विगत की विशेष गहन पुनरीक्षण वाले मतदाता सूची से मैपिंग की विवरणी को नागरिकता हेतु वांछित दस्तावेज के रूप में माना गया है। जिन मतदाताओं की मैपिंग पूरी हो जाएगी उन्हें मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के क्रम में सामान्यतः कोई अन्य दस्तावेज नहीं देने होंगे। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी सोमवार को धनबाद जिले में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण हेतु चल रहे कार्य एवं कार्ययोजनाओं की समीक्षा कर रहे थे।धनबाद जिले के भ्रमण के क्रम में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त आदित्य रंजन के साथ धनबाद के भूली बस्ती स्थित मतदान केंद्र संख्या 38 उत्क्रमित मध्य विद्यालय एवं मतदान केंद्र संख्या 210 गुरुनानक मध्य विद्यालय में बीएलओ द्वारा मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण में किए जा रहे कार्य एवं कार्ययोजना की समीक्षा की।मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि बीएलओ द्वारा मतदाताओं को आंशिक रूप से भरे हुए इन्यूमरेशन फॉर्म की 2 प्रति उपलब्ध कराई जाएगी।

कार्यालय, विद्युत कार्यपालक अभियन्ता, विद्युत कार्य प्रमण्डल, दुमका।

शुद्धि पत्र

एततः द्वारा सूचित किया जाता है, कि इस कार्यालय के पत्रांक –665 दिनांक –22.06.2026 से प्रेषित तथा पी०आर० –383172(Energy) 26-27_Dके द्वारा विभिन्न समाचार पत्रों मे प्रकाशित अति अल्पकालीन ई० निविदा आमंत्रण सूचना सं० 10/26-27 में –

1. ऑनलाईन वेबसाईट पर निविदा प्रकाशन की तिथि दिनांक 27.06.2026 के स्थान पर दिनांक 01.07.2026 पढ़ा जाय।
2. ऑनलाईन निविदा जमा करने की तिथि 27.06.2026 (01:00बजे अपराह्न) से 02-07-2026 (2:00 बजे अपराह्नतक) के स्थान पर दिनांक 01.07.2026 (02:00बजे अपराह्न) से दिनांक 06-07-2026 (2:30 बजे अपराह्न)तक पढ़ा जाय।
3. निविदा खोलने की तिथि 03.07.2026 (2:30बजे अपराह्न) के स्थान पर दिनांक 07.07.2026 (2:30बजे अपराह्न) पढ़ा जाय।

शेष अंश यथावत रहेंगे।

विद्युत कार्यपालक अभियन्ता
विद्युत कार्य प्रमण्डल, दुमका।

PR 383578 Energy(26-27)D

कार्यालयः– सदर अस्पताल, देवघर
राजकुमारी कुष्ठाश्रम, झौंसागढ़ी, देवघर–814112
Email-deoghar.cs1@gmail.com

निविदा संबंधित सूचना संख्या–01/2026–27/986 दिनांक–27.06.2026/

स्वास्थ्य विभाग देवघर जिलान्तर्गत सदर अस्पताल देवघर हेतु मशीन–उपकरण से संबंधित का दर निर्धारण हेतु निबंधित निर्माणकर्ता प्रतिष्ठानों/प्राधिकृत वितरक/एजेंसियों से निम्नरूप में निविदा आमंत्रित की जाती है।

1	कार्य का विवरण	Rate Contract For Equipment
2	बेवसाइट पर निविदा प्रकाशित होने की तिथि	28.06.2026 From 12 P.M
3	निविदा का तकनीकि भाग में कागजात हार्डकॉपी, प्रतिभूति राशि एवं निविदा शुल्क का Acknowledgement रसीद की प्रति, शपथपत्र मूल प्रति स्पीडपोस्ट/निबंधित डाक एवं हाथों–हाथ द्वारा षीलबंद लिफाफे में जमा करने की अन्तिम तिथि/समय	04.07.2026 के अपराह्न 5.00 P.M
4	निविदा खुलने का समय एंव जगह	05-07-2026 at 12.00 P.M (अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय प्रकोष्ठ में)
5	निविदा राशि (Tender Fee Paybale in the name of District Suprindentent Deoghar)	5000.00 (Five Thounsand)
6	अग्रधन राशि (Tender Fee Paybale in the name of District Suprindentent Deoghar)	50000.00 (Fify Thousand Rupees)
5	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी	उपाधीक्षक, सदर अस्पताल, देवघर।
6	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का दूरभाष संख्या	9471742824
7	निविदा से संबंधित हेल्पलाईन(दूरभाष)संख्या	9534117677

Further details can be seen on website http:// deoghar.nic.in

PR 383563 (Deoghar)26-27*D उपाधीक्षक सदर अस्पताल, देवघर

झारखण्ड शिक्षा परियोजना, दुमका
––अल्पकालीन निविदा––
(शुद्धि पत्र–01)
PR-382402(Human Resource Development) 26-27*D

नीति आयोग, भारत सरकार से प्राप्त स्वीकृति एवं उपायुक्त, दुमका के आदेश संख्या 58/2026 एवं 102/ 2026 के आलोक में दुमका जिला अंतर्गत तीन +2 उच्च विद्यालय में "AI-EnabledNetbookLab" अधिश्ठापन एवं संचालन हेतु इच्छुक संस्थाओं से प्रस्ताव आमंत्रित किया गया था, का अपरिहार्य कारणों से निविदा जमा करने की अंतिम तिथि 08.07.2026 तक विस्तारित की जाती है।

उक्त निविदा से संबंधित सभी अद्यतन आवश्यक एवं पूर्ण विवरणी जिले के अधिकारिक वेबसाइट https://dumka.nic.in से डाउनलोड किया जा सकता है।

ह/0
जिला शिक्षा पदाधिकारी–सह–
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, दुमका

PR 383524 Human Resource Developement(26-27)D

कार्यालय,श्री श्री 108 बाबा बासुकीनाथ मंदिर, बासुकीनाथ

शुद्धिपत्र

दिनांक 30.06.2026 को हूल दिवस के अवसर पर कार्यालय अवकास रहने के कारण बाबा बासुकीनाथ मंदिर द्वारा दैनिक समाचार पत्रों में **PR No. – 383047** द्वारा प्रकाशित अतिअल्पकालीन पुनर्निविदा आमंत्रण सूचना संख्या– 07/2026–27 (3rd Call) में निम्नांकित संशोधन किया जाता है।

पूर्व में निविदा प्राप्त करने की निर्धारित तिथि एवं समय :–
दिनांक 30.06.2026, अपराह्न– 03:00 बजे तक।

संशोधन के उपरांत निविदा प्राप्त करने की तिथि एवं समय :–
दिनांक 01.07.2026, अपराह्न– 03:00 बजे तक।

शेष सभी शर्त्ते यथावत रहेगी।

अनुमंडल पदाधिकारी,दुमका
–सह–
सचिव, बाबा बासुकीनाथ मंदिर

PR 383603 District(26-27).D

कार्यालय
असैनिक शल्य चिकित्सक सह-मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, देवघर
राजकुमारी कुष्ठाश्रम, झौंसागढ़ी, देवघर–814112
Email-deoghar.cs1@gmail.com

निविदा संबंधित सूचना संख्या–04/2026–27/929 / दिनांक–25.06.2026

स्वास्थ्य विभाग देवघर जिलान्तर्गत सदर अस्पताल देवघर के Mortuary/ Postmortem House हेतु 4 Body Mortuary Freezer से संबंधित हेतु वर्त्तमान वर्ष 2026–27 के लिए आवश्यकतानुसार 4 Body Mortuary Freezer का दर निर्धारण एवं क्रय हेतु हेतु निबंधित निर्माणकर्ता प्रतिष्ठानों/प्राधिकृत वितरक/एजेंसियों से निम्नरूप में निविदा आमंत्रित की जाती है।

1	कार्य का विवरण	Rate Contract For 4 Body Mortuary Freezer
2	बेवसाइट पर निविदा प्रकाशित होने की तिथि	28/06/2026 From 12 P.M
3	निविदा का तकनीकि भाग में कागजात हार्डकॉपी, प्रतिभूति राशि एवं निविदा शुल्क का Acknowledgement रसीद की प्रति, शपथपत्र मूल प्रति स्पीडपोस्ट/निबंधित डाक एवं हाथों–हाथ द्वारा षीलबंद लिफाफे में जमा करने की अन्तिम तिथि/समय	03-07-2026 के अपराह्न 5.00 P.M
4	निविदा खुलने का समय एंव जगह	04-07-2026 at 12.00 P.M (अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय प्रकोष्ठ में)
5	निविदा राशि (Tender Fee DD Mode) Payable to CS-Cum-CMO Deoghar	5000.00 (Five Thounsand)
6	अग्रधन राशि (EMD Fee DD Mode) Payable to CS-Cum-CMO Deoghar	100000.00 (One Lakh Rupees)
7	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी	असैनिक शल्य चिकित्सक सह मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी देवघर।
8	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का दूरभाष संख्या	9308796053
9	निविदा से संबंधित हेल्पलाईन (दूरभाष) संख्या	9534117677

Further details can be seen on website http://deoghar.nic.in

असैनिक शल्य चिकित्सक सह मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी,देवघर

PR 383570 Deoghar(26-27).D

पूर्व रेलवे

ई–नीलामी खो़बो़र

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, पूर्व रेलवे, आसनसोल मंडल, स्टेशन रोड, आसनसोल पिन-713301 होतेते आसनसोल मंडल ता़री रे दुमका स्टेशन रे मोबाइल फू़ड वैन (एमएफवी) रेयाक़् प्रावधान ला़गित् वेबसाइट **www.ireps.gov.in** मेताक़्मे आईआरईपीएस पोर्टल दाराय ते खुला़ ई-नीलामी नेवतायेत् काना। बानाडाय दो़ नोडका लेका मेनक़्आः

नीलामी कैटलॉग सं. एएसएन–एमएसएस–एसटीजीईएन17

क्रम सं.: एए/1, लॉट सं./कैटेगरी: एमएसएस–एएसएन–डीयूएमके–एसटीजीईएन–174–26–1, का़मी रेयाक़् बानाडायः दुमका (डीयूएमके) रेलवे स्टेशन रेयाक़् आसो़ल बो़लो़न/ओडोङ दुवा़र ठेन, मारे स्टेशन बिल्डिंग सामाङ रे मेनाक़् 240 वर्गफुट माप (सेलेत् मेनाक़् स्केच प्लान रे उदुक़् आकात् लेका) रे बातलाव आकान टोठा रे मित्टेन मोबाइल फूड वैन/ट्रक रेयाक़् 05 बो़छो़र सो़मो़य ला़गित् चालाव-बानाव आर जेलजो़तो़न।

ई–नीलामी रेयाक़् ता़रीक/सो़मो़यः मा़हित 13.07.2026, 12.00 बजे।

ASN-154/2026-27

ठिका़ खो़बो़र दो़ वेबसाइट **www.er.indianrailways.gov.in/www.ireps.gov.in** रे हों़ बेबो़सता आकान मेनाक़्आ।

नों़डे पांजालेपेः @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

झारखण्ड सरकार
क्षेत्र सर्वेक्षण प्रमण्डल, अग्रिम योजना, पथ निर्माण विभाग, दुमका

अतिअल्पकालीन ई–प्रोक्योरमेंट सूचना
(1st Call)
ई–निविदा प्रसंग सं0:–RCD/FSD/AP/DUM/02/2026-27
दिनांक:–29.06.2026

1.	कार्य का नाम	**Consultancy services for preparation of viability and financial option analysis/Feasibility Study of following Roads in PPP/HAM/BOT Mode.** 1. Muri- Rangamati Road (Tentative Length= 60 Km) 2. Hazaribag-Katkamsandi-Chatra Road (Tentative Length= 70 Km) 3. Chatra-Chauparan Road (Tentative Length= 51 Km) 4. Angara-Muri Road (Tentative Length= 44 Km) 5. Lohardaga-Kisko-Richughuta Road (Tentative Length=33 Km) 6. Lohardaga-Pesrar Road (Tentative Length= 39 Km) 7. Badkagaon-Urimari Road (Tentative Length= 29 Km)
2.	अनुमानित लंबाई	326कि०मी०
3.	कार्य समाप्ति की अवधि	30दिन
4.	वेबसाईट पर निविदा प्रकाशित होने की तिथि एवं समय	01.07.2026,12.00 बजे अपराह्न
5.	निविदा जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय	08.07.2026, 04.00 बजे अपराह्न तक
6.	निविदा खोलने की तिथि एवं समय	09.07.2026, 12.30 बजे अपराह्न
7.	निविदा आमंत्रित करने वाले का नाम एवं पता	कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, क्षेत्र सर्वेक्षण प्रमण्डल अग्रिम योजना, पथ निर्माण विभाग, दुमका।
8.	प्रोक्योरमेंट पदाधिकारी का संपर्क नं0	8292901787
9.	ई–प्रोक्योरमेंट सेल का हेल्पलाईन नं0	0651–2401010

अतिरिक्त जानकारी के लिए वेबसाईट पर देखें :–http://jharkhandtenders.gov.in

कार्यपालक अभियंता,
क्षेत्र सर्वेक्षण प्रमण्डल, अग्रिम योजना,
पथ निर्माण विभाग, दुमका

PR 383571 Road(26-27).D

Office of the Executive Engineer
Drinking Water & Sanitation Mechanical Division Dumka

e-Procurement Notice Very Short Term Tender
Tender Reference No. :- DWSD/Mech. Div.Dumka/10/2026-27 Date- 29.06.2026

1	Department Name :	Drinking Water & Sanitation Department
2	Name & Address of the office Inviting Tender :	Executive Engineer, D. W. & S. Mechanical Division Dumka
3	Date of Publication of tender/time in website :	03.07.2026/11:00 AM
4	Last date/time for receipt of online bid :	13.07.2026/04:00 PM
5	Last date/time of online submission of Earnest Money and Cost of BOQ (As per Letter No.- 120, dated- 03-10-2023 of Secretary, Information Technology & e-Governance Department, Govt. of Jharkhand) :	13.07.2026/04:00 PM
6	Date of opening of tender/ time :	14.07.2026/04:00 PM
7	Name & Address of tender opening officer :	Executive Engineer, D. W. & S. Mechanical Division Dumka
8	Contact no. of Procurement office :	9752521294
9	Help line No. of e-Procurement cell :	0651-2480345

Sl. No.	Name of Work	Estimated Cost (in Rs.)	Earnest Money (in Rs.)	Cost of BOQ (in Rs.)	Time of completion (in Days)
1.	Estimate for supplying, installation and commissioning of domestic type RO+UV water purifier in Hostel building, hanger building & administrative building and supplying, installation and commissioning of new HDPE water tanks and allied works at Air Port Campus Dumka.	5,98,290.00	12,000.00	1,250.00 (Non-Refundable)	30 Days

Note:-
- No claim shall be entertained because of disputation of internet service being used by the bidders. Bidders are advice to upload their bids well in advance to avoid last minute technical snags.
- Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in
- Work order will be issued after administrative approval.

Executive Engineer
D. W. & S. Mechanical Division Dumka

PR 383537 (Drinking Water and Sanitation)26-27*D

जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त का कार्यालय, देवघर

-: प्रेस विज्ञप्ति :-

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के पत्रांक 23/2025-ERS (Vol.II) दिनांक 14.05.2026 द्वारा दिनांक 01.10.2026 की अर्हता तिथि मानते हुए मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम (SIR), 2026 के तहत प्रथम चरण में दिनांक–30.06.2026 से 29.07.2026 तक गणना प्रपत्र का वितरण, संग्रहण, डिजिटाईजेशन एवं ASDD List का कार्य किया जाना निर्धारित है। दिनांक–30.06.2026 से 29.07.2026 तक बी0एल0ओ0 द्वारा मतदाताओं को आंशिक रूप से पहले से भरा हुआ गणना प्रपत्र (Enumeration Form) दिया जायेगा। बी0एल0ओ0 गणना प्रपत्र (Enumeration Form) बाँटने और उन्हे इकट्ठा करने के लिए कम से कम तीन बार House to House Visit करेंगे।

गणना चरण (Enumeration Phase) की गतिविधियों की जानकारी हेतु दिनांक 30.06.2026 को पूर्वा0 11.00 बजे से 12.00 बजे BLO द्वारा संबंधित सभी BLA-2, चुनाव पाठशाला के सदस्यों, तथा सामान्य मतदाता, सामाजिक कार्यकर्ता एवं अन्य राजनीतिक कार्यकर्ता जैसे पिछले चुनाव के निर्वाचन अभिकर्ता आदि के साथ सभी मतदान केन्द्रों पर एक बैठक निर्धारित किया गया है। बैठक की कार्यावली निम्नवत् होगीः–

1. SIR से संबंधित निर्धारित कार्यक्रमों की जानकारी देना।
2. गणना चरण (Enumeration Phase) की गतिविधियों की जानकारी देना।
3. ASDD सूची के तैयार करने संबंधी जानकारी देना।
4. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय से प्राप्त Leaflets में अंकित सूचना को सभी उपस्थित सदस्यों को पढ़कर सुनाना।
5. मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय से प्राप्त Posters में अंकित सूचना को सभी उपस्थित सदस्यों को पढ़कर सुनाना।
6. नये मतदाता के पंजीकरण हेतु आवेदन प्राप्त करने के संबंध में जानकारी देना एवं अन्य बिन्दुओं पर चर्चा।

उक्त कार्यक्रम के बारे में राज्य के अधिक–अधिक नगारिको तक जागरूकता के उद्देश्य से दिनांक–30.06.2026 को जनजागरूकता अभियान का शुभारंभ एवं दो घंटे का सोशल मिडिया अभियान (पूर्वा 11.00 बजे से अप0 01.00 बजे तक) निर्धारित किया गया है। उक्त अभियान के क्रम में फेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम, यू–ट्यूब आदि सोशल मिडिया प्लेटफार्म पर हैशटैग #JharkhandSIR अभियान निर्धारित है।

उप निर्वाचन पदाधिकारी देवघर

PR 383544 Deoghar (26-27)_D

जिला निर्वाचन पदाधिकारी –सह–उपायुक्त, देवघर

झारखण्ड सरकार
प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अमड़ापाड़ा कार्यालय

अति अल्पकालीन पुनः निविदा आमंत्रण सूचना :– 02/2026–27

1.	विज्ञापन दाता का नाम :–	प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अमड़ापाड़ा
2	परिमाण विपत्र की बिक्री की तिथि :–दिनांक–	07.07.2026 से 08.07.2026 10:00 बजे पूर्वाह्न से 5:00 बजे अपराह्न तक
3	परिमाण विपत्र की बिक्री की स्थान :–	प्रखण्ड विकास पदाधिकारी का कार्यालय अमड़ापाड़ा
4	निविदा प्राप्त करने की तिथि एवं समय :–	दिनांक – 10.07.2026 को 1:00 बजे अपराह्न तक
5	निविदा खोलने की तिथि एवं समय :–	दिनांक – 10.07.2026 को 3:00 बजे अपराह्न
6	निविदा प्राप्त करने की स्थान :–	प्रखण्ड विकास पदाधिकारी का कार्यालय अमड़ापाड़ा
7	कार्य की विवरणी :–	

क्र0 सं0	ग्रुप संख्या	पंचायत	ग्राम	योजना का नाम	तकनीकी स्वीकृति राशि/प्राक्कलित राशि (रू0 में)	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र की राशि	कार्य समाप्ति की अवधि
1	12	बासमती	अम्बाडीहा	उत्क्रमित मध्य विद्यालय अम्बाडीहा में शौचालय निर्माण 2 युनिट	1639328.00	32800.00	5000.00	3 माह
2	13	बासमती	पोचईबेड़ा	उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय पोचईबेड़ा धीरी टोला में शौचालय निर्माण 2 युनिट	1639328.00	32800.00	5000.00	3 माह
3	17	पचुवाड़ा	वनकुंजा	प्राथमिक विद्यालय वनकुंजा में शौचालय निर्माण 1 युनिट	819664.00	16400.00	1250.00	3 माह

8. ग्रामीण कार्य विभाग (REO) झारखण्ड सरकार राँची/पेयजल एवं स्वच्छता विभाग राँची/ जिला परिषद, पाकुड़ एवं भवन निर्माण विभाग, झारखण्ड सरकार में निबंधित संवेदक ही निविदा में भाग ले सकते हैं।
9. निविदा शूल्क राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा निर्गत ड्राफ्ट या बैंकर्स चेक जो प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अमड़ापाड़ा के पदनाम से देय हो देना होगा।

नोट :– निविदा की शर्तें कार्यालय सूचना पट पर देखा जा सकता है।

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, अमड़ापड़ा

PR 383582 Revenue(26-27)#D

Office of the Executive Engineer
Drinking Water & Sanitation Division, Pakur.

e-Procurement Notice
Very Short Term urgent E-Procurement Notice (4th Call)
Tender Reference No.- DWSD/PKR/18/ 2026-27 (e-Tender)Date- 27.06.2026

1	Department Name :	Drinking Water & Sanitation Department, Jharkhand, Ranchi.
2	Name & Address of the Office Inviting Tender	Executive Engineer, D.W.&S. Division, Pakur.
3	Date of Publication of Tender/Time on Website :	29.06.2026/ 04 : 00 PM
4	Last date /Time for receipt of Online Bid	06.07.2026/ 04 : 00 PM
5	Last date/ time of Online submission of Earnest Money and Cost of BOQ (As per Letter No.-120, dated-03.10.2023 of Secretary to Govt., Information Technology & e-Governance Department, Govt. of Jharkhand)	06.07.2026/ 04 : 00 PM
6	Date of Opening of Tender /Time:	07.07.2026/ 04 : 00 PM
7	Name & Address of Tender Opening Officer :	Executive Engineer, D.W.&S. Division, Pakur.
8	Contact no. of Procurement Office :	9431157520

Name of work : Relocation of 125/115 mm. Dia. with. 90 mtrs. different average deep (depth will be mentioned in technical documents in Metres) drilled tube well with IM-II (IS-15500/part-II)/2004 Hand Pump and 32 mm dia. medium class riser pipe by DTH (FDK/KPO/COPCO) Rig Machine with 125 mm. dia. Blue UPVC casing pipe, construction of platform and drain etc. including dismantling of existing defunct H.P. materials and depositing taken out old materials to Departmental store etc. under D.W.&S. Division, Pakur on Turn-Key basis for the year 2026-27.

Sl. No.	Group No.	No. of Drilled Tubewell	Estimated Cost (in Rs.)	Earnest Money (in Rs.)	Cost of BOQ (in Rs.)	Time of Completion (in days)
1	2	3	4	5	6	7
1	SRDT/90-1	28	2875320.00	58000.00	5000.00	45 days

Note:-
- Tender is being invited in anticipation of Administrative Approval and in view of coming summer season-2026. Work Order will be issued after Administrative Approval.
- No claim shall be entertained because of disputation of internet service being used by the bidders. Bidders are advice to upload their bids well in advance to avoid last minute technical snags.
- Further details can be seen on website http://jharkhandtenders.gov.in
- Estimated Cost may be increase or decrease.

Executive Engineer
D.W. & S. Division, Pakur.

PR 383467 (Drinking Water and Sanitation)26-27*D

होड़ उमझाउ लाड़हाई : हुल 1855

- चुण्डा सोरेन 'सिपाही'

हें, होड़ उमझाउ लाड़हाई गे - 'हुल 1855'। एनते, नोआ 'हुल' साबाद दो पारसी बिज्ञान लेका ते पेया आखोर ते बेनावाक् साबादकाना। ओना रे मित् दो 'ह', दोसार दो 'उ' आर तेसार दो 'ल'।नोवाको पेने आखोरको मित्एत् खान 'हुल' साबाद रेयाक् बेनाव होयोक् नकाना। आर, ओनाको पेने साबाद ते बेनावाक् साबाद 'हुल' रेयाक् मिमित् आखोरको रेयाक् बेनाव होरा पांजायेत्कान दो होयोक् काना 'होड़ उमझाउ लाड़हाई'। तोबे, कुकली राकाप्कोक्आ 'हुल' दो चेदाक् आर से होड़ उमझाउ लाड़हाई दो चेदाक् ? ओना रेयाक् तेला रूवाड़ काथा रे मेनकोक्आ जे जेलेका खोक्मांदा दो रूवा रेयाक् रेहेत् आर सिड़ोग रोड़ आर चिगारी दो झोगड़ा रेयाक् रेहेत् काना। ओनका गे काथा बाङ गोपोङ आर एपड़े रोड़दो लाड़हाई आर से तोपोत्-तापामोक् रेयाक् गे मित् मोटारेहेत् काना। आदो, ओनका लेका ते सेदाय अंग्रेज कु पानी सोरकार जाहां दो इगलैंड रेन महारानी क्वीन एलीजावेद'आक् 31 दिस बर 1600हिलोक् नोआ भारत दिसाम रेयाक् पुरूब नाखा रेयाक् टोठाको रेन होड़ सांव ते बोगे सो पोक दोहो काते बानिज-बेपारा मेनते नोआ दिसाम तेको हेच् लेना। ओनको दो सूई लेका तेको बोलोलेन दो तायोम ते दो पाल लेकाको दार एना। आर, ओनका लेका ते नोआ तोलहांट रे दो राजमहल रेन राजा मीर कासिम 1763-64 साल रे उनी सांव तेको लाड़हायेन रे उनीको हाराव केदे ते 1765 साल खोन दोआको गे राजोक्को एहोप् केदा। ओनका मा नोआ दिसाम रेन होड़सांव ते बानिज-बेपार लागित् ते मा एटाक् दिसाम रेन होड़ाक् मा आड़ीगान गे कु पानी मा ताहेंकान ताको गे। जे लेका- पुर्तगाली ईष्टइण्डिया कु पानी- 1408 साल खोन, डच ईष्ट इण्डिया कु पानी 1602 साल खोन, डेनिश ईष्ट इण्डिया कु पानी 1616 साल खोन, फ्रांसीसी ईष्ट इण्डियाकु पानी 1664 आर स्वीडिश ईष्ट इंण्डिया कु पानी 1731 साल खोन एमान। मेनखान, ओनकोको मुद रे नोको ब्रिटीश ईष्ट इण्डिया कु पानी रेनहोड़ दो आड़ी कुमायां, हुसियार आर से लालोचिया होड़को ताहेंकाना। आर, ओनका लेका ते ओनको दो 1600 साल खोन 1947 सालहाबिच्को राज लेना। उन रे ओनको दो नोआ दिसाम रेयाक् तिज-बासुतमा आको दिसाम तेको गेमेरलेत् गे। मेनखान, ओना सांव ते गे नोआ दिसाम रेन होड़ हों आड़ी लेका तेको सासोन आर सेकोपाझातलेत्कोआ।

तोबे, नोआ 30 जून 1055 साल रे नोको होड़ होपोन जाहांय दो बुकानन हामिल्टन साहेब दो 1790 साल रे Sonthur (संथाल, संताल) ञुतुम तेय बिकाउ आकात्को दो चाक्को हुल लेदा। ओना रेयाक् तेला रूवाड़ रे ओनको आद आर आगिल हापड़ामकोवाक् गे मित् टेन लागड़ें सेरेञ रेयाक् गे उमुल पांजा काते गे आलगा तेबोन बुझाउ दाड़े केया। आर, ओना दो नोडका लेका गे। जे लेका-

सिदो-कान्हू चेते लागित् हुल रे,
चेते लागित् लोक बोलायलो ?
महाजोन किनाराम, बेचाराम,
बोड़ो जोबोर ठोक रे,
युनी युपोर हुल छेड़ायलाम।

चेतान रेयाक् सेरेञ रेयाक् उमुल पांजायेत्कान खान बाडायोक् काना जे महाजोनको बिरूद रे हुल दो एहोप् लेना। मेनखान, ओना गे तायोम ते दो मित् टेन माराङ रूप रे बोदोल एना। मेताक्मे, तिन रे नोको अंग्रेज कु पानी सोरकार दो नोआ दिसाम रे राजोक्एएहोप् केदा। उन खोन गे ओनको दो नोआ दिसााम रेन होड़ सांव ते बिनसुलुक बेवहार दोय एहोप् लेदा। आर, ओनका लेका ते आच् रेनआमला-कापलाको हों ओनका गेको कामीकान ताहेंकाना। होड़ होपोनाक् दो जाहांनाक् गे चास-बासको ञेलेत् ताहेंकाना। सीम-सुकरी, मेरोम-भिडी आर से काडा-डांगराकोको ञेलेत्को ताहेंकाना। ओनको हों महाजोनको ठेन हाताव रीन बाडको एम दाड़ेयाक्कान ताहें खान दो जोबोरजुसटीको लागा इदियेत्को ताको ताहेंकाना। कोम दोर ते रीनको एमाको ताहेंकाना। आर, ओना गे तायोम ते दो ढेर सुद दोर तेको आदायकोआ। ओना ते होड़ होपोन दो सानामको काराच्-कुरूच् चाबावाकान ताहेंकाना। ओनका लेका ते होड़ होपोन दो ओनको ठेन खोन छुडार रेयाक्को ञेलहोहोरकान ताहेंकान दो आचका गे बाडायगोत् एना जे बाड़हेत् सोर,भोगनाडीह रेन चुनू हाड़ाम होपोन सिदो आर कान्हू ताकिन दो सुबा ठाकुरकिन जानामाकाना। उनकिन दो एयाय धाव ते माराङबुरू आरजाहेरएरा सांव ते जुदा-जुदा मुठान रेकिन ञापाम आकाना। ओनारे पाहिल धाव दो सेरमा खोन आंड़गोनकान रिमिल लेका, दोसार धाव दो झाल-झाल सेतोङ रे मित् उमूल लेका, तेसार धाव दो बिलान टांडीरे पुटाक्गोत्एन मित् बुरू लेका, पोनाक् धाव दो मित् टुटुरी पोटोम आर मेत्हां दो कुहड़ा ते पोटोम आकान मित् मायलीउ लेका, मोड़ेयाक् धाव दो बिलान टांडी रे मित् सारजोम दारे लेका, तुरूयाक् धाव दो मित् सेंगेल आलाङ लेका आर एयायाक् धाव दोकाचा ते डेंगा आकान मित् टेन पोण्ड होड़ लेका। उनी दो नोआ सेस धाव रे गे मित् टेन पुथिये एम ओटोवात्किना। ओना रे दो जाहांन ओल दो बाङ ताहेंकाना। सादा गे ताहेंकाना। आर, सेस धाव रे गे उनी दो उनकिने मेतात्किना- 'आबेन दो नोआ दिसाम रेन सुबा ठाकुरेञ बेनावेत्बेना। नोआ कागोज रेयाक् साकामको दो गोटा संताल डिहाको रे पासनाव आर लाई चेहावकोबेन जे दारायकान होयोक् लागिदोक्कान हुल रे लागित् होड़को दो सापड़ाव आकानको ताहेंन। ओना तायोम उनी दोय छानगोत् एना।

ताक दो पिपरा रेन हाड़मा देसमांझी आर लखान, आमगाछी रेन गारभू मांझी आर मित् बार होड़ बेगोर काहां-काहीं ते दिघीरे थाना रेन माहेशलाल दोरोगा दो आमड़ापाड़ा रेन किनाराम भगत महाजोनाक् मेन लेका ते भागलपुर ते हाजोतको लागित्ए तोल इदियेत्कोकान ताहेंकाना। गारभू रेन ओड़ाक् होड़ दो ओनकोखूप्ए माना-मानाकात्कोआ। मेनखान, महेशलाल दोरोगा आर किनारामभगत दो नासे हों बाडकिन बाताव लेदा। ओना इयाते उनी दो पाडेरकोलारेन साम परगना ठेने चालाव एना। आर, ओनाको जोतो काथाय लाइयादे ते उनी दो झुंकाल-माछाको पेया कोड़ा भोगनाडीह ते सिदो आर कान्हू ताकिन ठेने कोलकेत्कोआ। ओण्डे दो आयमा होड़को जारवा आकानताहेंकाना। नोको कोड़ा दो गारभू ताको बाबोत रे साम परगानावाक् काथाको लाइयात्किना। ओना ते ओनका मा होड़ माको जारवा आकानताहें गे। मेनेक, ओना खोन हों बांड़ती होड़ ओनको हाड़मा ताकोछाडावको लागित् ते जारवाको लागित्किन पोरतोन केदा। आर, ओनका लेका ते ओनको दो बाड़हेत् सोर रे मेनाक् हापड़ामकोवाक्नामडाक आतो पंचकाठिया बाड़े दारे ठेन साना-फानावान ते गेल हजारगानहोड़को जारवागोत् एना। ञिन्दा सारा दो बाड़हेत् रे किनाराम भगत रेन भाचात कोड़ा ताको ओड़ाक् रेको ताहेंयेना। आर, ओनकालेका ते दोसार हिलोक् दो सिमको राग सांव तेको मोहण्डायेना।

कुनामी दिन। डिग-डिग तेरदेच्। महेशलाल दोरोगा दो सादोम रेय देच् आकाना। आर, ओनको हाड़मा मांझी आर गारभू मांझीताको दोको तोल थोबड़े आकात्को तेको ताड़ाम इदियेदा। ओनका-ओनका जेमोन गे ओनको जारवा होड़को तियाक्केत्कोआ।कान्हू दो आड़ी गार तेय तारासगोत् केदा- 'ओकोय कानाम आम दो नोको बिन दुसी होड़ दो आलिञाक् हुकुम बेगोर तेम तोल इदियेत्कोआ ?'

ओना काथा आंजोम काते दोरोगा दोय मेनगोत् केदा- 'ओकोय कानाबेन या आबेन दो ?....इञ हाकिम सामाङ रे ओनकान काथाबेन रोड़ेत् काना ?'

उनी दोरोगावाक् ओनकान काथा आंजोम ते मित् होड़ दोय मेनगोत् केदा- 'ओकोय कानाय या नुई दो ?...हाकिम साकाम रे हों ओनकान काथाय रोड़ेत् काना ?....सादोम खोन ओर ञुरहा काते होड़ेच् गादार उदुक्आयपे से !'

ओना सांव ते गे एदरेयाकान गारभू मांझी दो तोल आकादे ताहें सिकड़ी दोय ओर तोपाक्गोत्केत् ते मित् होड़ तारवाड़ेये रेच् केदेया आर आराक्-पोंडे बेंगेत्केत् सांव ते सादोम चेतान रेय ताहेकान दोरोगा होटोक्ए माक् केदेया। आर, इना हेलेच् रे गेये सुमारगोत् कादेया। आर, ओनका लेका ते हुल दो एने एहोप् एना। ओण्डे खोन गे जारवा फद दो उधवा नाला, राजग्राम आर पेयालापुर एमान जायगा रे सेन कातेको आतारकेत्कोआ। मेनेक,= काथाय ओना उधवानाला रेयाक् लाड़हाई रे गे साम परगाना दोयगोच् एना आर ओनका लेका ते तेहेञ हाबिच् हों उनी दो मित् टेनगाखुड़ आर दिलगारिया साधिन सिकारिया लेका ते जियांत आकान गे मेनाया।

उन बिदाल रे जंगल तराई ञुतुम ते बिकाउक्कान ताहें बिर-बुरू आर से आकुट बिरको ते पेरेच् ओका दो होड़ होपोनको दो नापड़ाक्-नापड़ाक् कुल-तारूप् आर से बिसान बिञ-किदिञको सांव ते तोपोत् आर तापाम काते जोल-जोल गोडा-बाड़गेको बेनावान ताहें टोठाको दो उपी लेका फद ते गेको पेरेच् केदा। जाहांय गे आको बिरूद रेको रोड़ेत्कान ताहेंकाना। ओनको गे होड़ेच् गादारको उदुक्आकोकान ताहेंकाना। गोरा-पालटोनकोवाक् गुली सामाङ रेचांड काते आकोवाक् केटेच् कोड़ामको ओडावेत् ताहेंकाना! आर, ओनका लेका ते हजार-हजार गोरा पालटोनको होंको तुञ गोच्ओचोक्कान ताहेंकाना। आर, से नोते ओनको लिडारोक्को सिदो, कान्हू, चान्द, भायरो, फुलो आर झानो ताको हों दाया गे आकोवाक् जिवीको तेंगेन केदा। आर, से ओना लाड़हाई रे दो काथाय 65हजारगान खोन हों बांड़ती होड़ गे जिवीको आलाय लेदा। आर, ओनका लेका ते तिमिनो मायजीउकोवाक् डांडा हों खालीलेन ताकोआ।.....

.....दाक् दिन तियाक्एन ते थोड़ाको दोमबड़ावञोक् एना। ब्रिटीश कु पानी सोरकार दोय हुदिस जोडकान ताहेंकाना। जे नित दो हुल दोदोमबड़ाव एना। मेनखान, इनाक् सुमुङ ते चेत् होड़को दोमबड़ावक् तामा ? बाङ गे। दाक् दिन ओडोकेन सांव ते आरहों लाड़हाई दो एहोप् एना। जायगा-जायगा रे होड़ होपोन दो आको रेन बाइरीको सांव तेको तोपोदोक्कान ताहेंकाना। आर, ओनका लेका ते काथायमित् धाव दो तिनगान फद चोङ मित् टेन लांदुड़ ओड़ाक् रे बोलोकाते गोरा पालटोनको ताड़ांक् आकावात्को ताहेंकाना। ओना तेसिपाहीको दो ओना लांदुड़ ओड़ाक्को एसेत् आचुरकेत् तेको ठुकेत्कोआ। आर, ओना काते दो लिडार दो ओनको होड़ आकोवाक्साना-फाना जिमाकाक्ए मेतात्कोआ। मेनखान, ओना रेयाक् जोबाब रे फदको दो मित् धाव ते सारको आड़ाक्केत् ते तिनगान सिपाहीकोको गोच् एना। ओना काते लिडार ताको दो आरहों ठुय रे हुकुमे एमात्कोआ। ओनका लेका ते लिडार दो तिन धाव ओनको फदको आकोवाक् साना-फाना जिमाय रेयाक्ए मेताकोकान ताहेंकाना। उन धान गे ओनको दो सारको आड़ाक्एत् ताहेंकाना। आर, ओना तायोम दो आरहों गुली आड़ाक्ए मेताकोकान ताहें ते ओना लांदुड़ ओड़ाक् रे गुलीको आड़ाक्एत्कान ताहेंकाना। ओनका-ओनका तिन रे दोओना लांदुड़ ओड़ाक् खोन सार ओडोकोक् दो बोन्द एना। उन रे उनी दो आच् रेन मित् सिपाहियान ते ओनको ञेलको लागित् तेयबोलोक्कान ताहें दो एकेन मित् टेन आधेड़ होड़ आच्आक्होपोन-होपोन पिलचू टेंगोच् साप् काते ओनको गोच् आकानको होरहो आकात्कोय तेंगो आकान ताहेंकाना। मेनेक, तिन रे दो उनकिन मेंत्-मेत्किन बेंगेत् ञाम एना। उनी आधेड़ हाड़ाम होड़ दो उनी चेतान रे कुल लेकाय दोन लादेयेन ते एडे गेये हेलेच् गोच् केदेया। आर, ओनका गे नोआ तोलहांट रे तिनगान चोङ ओकाको रे तोपोत्-तापाम होयेना। ओना रेयाक् दो जाहांन लेखा आर जोखा गे बाङ ताहें काना।...

कु पानी सोरकार दो नोआ काथाय बाडाय केदा। ओना ते उनी दो 10 नव बर 1855 हिलोक् दो नोआ बिर-बुरू टोठा रे बिनबिचार आन,मेताक्मे, मार्शल-लॉ-ये लागू केदा। मेनखान, एन रे हों होड़ ड्डहोपोन, मेताक्मे, लाड़हाई फद दो बाको दो बड़ाव लेना। ओना तेआड़ीगान होड़को गोच् एना। ओनका-ओनका ओनाको ञेल काते कु पानी सोरकार दो हुक्दिसे एहोप् एना- 'नोको होड़ होपोन दो उनाक् गे सोड़ा मोनेयानको कानाको। मेनखान, तेहेञ लेकान दिनरे उनाक्को गुजुक्कान रे हों आकोवाक् कोड़ाम चांड काते जिवी आलाय लागित् होंको सिकारोक् काना। ओहो मेनले नोआ रे दो होय हों दाड़ेयाक्आ जे आले साक्सोन होड़ाक् गे जाहां-बाङ-जाहां आलेयाक् गे भूल-बिसार मेनाक् आकादा।'

भागलपुर रेय ताहेंकान ताहे कलेक्टर साहेब दो नोआ बाबोत ते मित् दुपुड्डुप्ए होय ओचो केदा। ओना रे सारी गे आच् रेनआमला-कापलाकोवाक् गे दुसी दोय ञामकेत् ते उन बिदाल रे जेनरलआन लेका ते नोआ तोलहांट सासोनोक्कान ताहें छाडा काते 37'आक् आन धाराको बेनाव केदा। आर, ओना काते बंगाल रेयाक् बीरभूमजिला आर बिहार पोनोत रेयाक् भागलपुर जिला गेत् बेगारकेत् ते 1855 साल रेयाक् 22 दिसंबर हिलोक् दो ओनकोको हुललेत्संतालकोवाक् जात ञुतुम ते संतालपरगना जिलाको थापना केदा। आर,ओका मार्शल-लॉ दो 10 नव बर 1855 हिलोक्को जारी लेदा। ओना दो 3 जनवरी 1856 हिलोक्को ओचोक् कादाक्आ।.....

भोगनाडी रे मेला

- शिवलाल मरण्डी 'बेचारा'

टोको टोको ठेड़ो टोको,
बाहु कुड़ीय उसात् आकान पोकपोको।
लागावाकाना मा ञेलपे भोगनाडी रे मेला।
उल बोगे ते बेलेयाकाना एन एनबेतार रे ढेला।।
लोचोत् - दोंगोत् होड़ मेला रे दोकान मेनाक् साजाव।
हाड़ाम - बुडहीकिन आत् आकाना लाई बाड़ाय हों लाजाव।।
ञेलपे-ञेलपे लाड़ु ञेलपे रासा जोरोक् काना।
तुला होड़े तुल बाड़ायकान पायसाय एरोक् काना।।
आसाम रेयाक् पाञ्ची ञेलपे बंगाल रेयाक् चुड़ी।
डुमका रेयाक् कुरता ञेलपे पाकुड़ रेयाक् साड़ी।।
ञेलपे ञेलपे हाहाड़ा गे दाक् रे छाकाव पुड़ी।
जोम ते बाको मोकोञोक्कान ढेर दो जावाँय कुड़ी।।
ञेलकिनपे सिदा - कान्हू जिवात् मुठान लेका।
आक्-सारकिन गोक् आकादा ताहेंकान ताकिन ओका।।
नुकिन दो फूलो झानो नुकिन दो बोयहा कुड़ी।
नुकिन दो चांद भायरो सोंगे रे आक् आपाड़ी।।
चेत् लेकान गाड़ीम ञेला भोगनाडी टान्डी रे।
चेत् कोचोको पान्तेयाकात् ओत रे आदोम बिन्डी रे।।
जिनिस आदो बुबुलाक्कान ओकोय कुसीक् सुती।
डोम कोड़ाकिन खेञ्चेरोक्कान पाठे काते धुती।।
चुड़ी सांखा पायोल मुन्दाम दोकान पेरेच् माला।
नियाँ जागहा रे बाङ ताहेंकान चेत् हों पेरेच् होला।।
बुडही हाड़ामकिन तियाक् आकान सेतोडेत्किना आड़ी।
ओना तेकिन तायनोमेना पाहिल रुवाड़ गाड़ी।।
कुड़ी-कोड़ाको छिलबिलाक्कान उमार रेगे काना।
मोन कुसीये मेला लेनखान आदोक् रेहों सोना।।
उड़ाक् लेकाय साड़ीयाकान आबोक् लेका साया
चेले बाडाय काना उनी रेन जावाँय मेनाय ताया।।
इरची बाङ दोय पोतावाकान टेन्डार काते साबड़ी।
पाहिल जावाँय ठेन बाय रोफालेन लायेयाको ताहेंकानाय आड़ी लिबड़ी।।

मेला ठेला रिडात् गेया आलोम खोजोक् फँक।
30 जून रेयाक् दिन रेदो आयकाक् गेया दाँक।।
तिरया बानाम तुमदाक् दोकान नावाँ- नावाँ मुची।
मा ञेलकोपे एनेच् कुड़ी सामाङ उप् दो कापची।।
सान्देस दिपिल बापला डालिच् दाउड़ा दोकान बाकी।
छुटकी - बाटकी मा ञेलकिनपे मेला रे झाका - झाकी।।
गिदरा सावदा ओरोङ तेयाक् आदोम फुलाक् ताको।
जिनगी हों मित् टेन मेला काना पायसा कुलाक् ताको।।
सिदा - कान्हू बागान ञेलपे लाठे ठुबे उल ।
मित् टेन कुकली ओकोय राकाब चेत् दो दोसार हूल ?

आकिल रेयाक् सिलपिञ

-

नाजीर हेम्ब्रम

हुदूड़-हुदूड़ होय ते,
लाड़ाक् काना टाटी सिलपिञ
ओड़ाक् ओडोङ-बोलोन ओकते
जावरो आमेम तिपिञ।

बुरु दिसोम होड़ कानाम
बानुक् तामा काट सिलपिञ।
आदिवासी होपोन कानाम
जोतो गे टाटी सिलपिञ।

फांका फायाड़ ञेलोक् काना
दुवार बाचो सिञ;
झिच् खातिर बोलोयेनाय
कोमपानी रूपी बिञ।

सुलुक घारोंज जियोन आमाक्
उजाड़ तामाय तिहिञ,
गाड़ी चालाक् छाटका सेच् ते
दिन गे आमेम तिपिञ।

बोजाव गाड़ी होर एसेत्
तिरयाउ ताहेन जिलिञ,
मालजाल सांवते मानमीको हों
दिनाम गेको तिपिञ।

चासा लेदाम बाड़गेको रे
जोंडरा तुड़ी तिलमिञ
उजाड़ कातेत् खाद घाडलाक्
बेनाव एना तिहिञ।

सेंडा जोड़मे आकिल गेयान
मेताम कानाञ ईञ
लुटिया बाको बोलोक् लागित्
दोहोयमे दुवार सिञ।

काट सिलपिञ, टाटी सिलपिञ,
आरहों मेंड़हेत् सिलपिञ,
बेनाव जोड़मे ओना खोन केटेच्
आकिल रेयाक् सिलपिञ।।

होड़ होपोनकोवाक् हूल

महेंद्र बेसरा 'बेपारी'

तेहेञ खोन मित् साय एयाय गेल सेरमा लाहा रे सूदखोर माहाजोनाक् हाउण्डी, कुरमुताहा दोरोगावाक् काट जीबा आन, आमला कापलाकोवाक् एड़े फासियारा आर हाकिमकोवाक् ढिलीसिली ते माराङ संताल हूल होय लेना। नोआ हूल रेन माराङ आयुरकिन दो भोगनाडी आतो रेन दिलगारिया सिदो आर कान्हू भायादी गे। उनकिनाक् आयुर ते ओका सेंगेल लागाव लेना ओना दो आड़ी माराङ आर बोतोरानाक् गे ताहेंकाना। गोटा संताल दिसोम रेन होड़को बे बोतोर जिवी चुपुत् उरीच् काते हूल रेको दोन खादले लेना। मित् सेच् आक्-सार, तारवाड़े आर मित् सेच् गुली बांदुक, तानाक् बुसाक् गोच्-गोपोच् होय एना। नोआ लाड़हाई रे आलेखा हूलगारियाको मांयाम गोहा एना। गाडा दाक् लेका मांयाम आतू एना आर ओना मांयाम तेगे दिसोम दो रोफा रूवाड़ लेना। संताल दिसोम रे लाहाते लेका गे बेताबे हेच् रूवाड़ लेना।

तिन जोखेच् दोरोगा आर माहाजोनकोवाक् पाझेत सासेत चुड़ा रे ताहेकाना उनजोखेच् होड़ होपोनको दो माराङ मुंहिंन रेको पाड़ाव लेना। आकोवाक् जुमी जायगा मेंत् सामाङ खोन लिलामोक् कान ताहेंकाना। बेदोसते आर बिना कुली बुझाउते जेहेलको तोल इदियेत्को ताहेंकाना। एरा-उरु पिढ़ी चेतान पिढ़ी माहांजोन ठेन गोलाम लेकाको खाटावोक् कान ताहेंकाना। नोआ खातिर ते होड़ होपोनकोवाक् जिवेदोक् ओपरोम माराङ मुसकिल रे पाड़ाव लेना। नोआ माराङ मुंहिंन खोन दोक् दारामको लागित् होड़ होपोनको दो साहेब सुबा ठेनको आरोज आरदास लेदा, मेनखान होड़ होपोन रेन
हाकिम बाको ताहेंकानते बाको ओवरलेत्कोआ। एकेन आर एकेन एड़े आसको एमावात्कोआ। बोछोर-के-बोछोरको कोयोक् होर केदा, मेनखान आस दो बाङ पुराउलेनताकोआ। नोआ इयाते होड़ होपोनकोवाक् दो ओनको चेतान रे बिसवास गे रापुत्एनताकोआ । नोते माहांजोन आर दोरोगावाक् कोचलोन आर सांताव दो दिनेक दिनते ढेर इदी एना। नोआ इयाते बोतोर आर भोयोन रेयाक् हावाल गोटा टाण्डी आटेत् आकान ताहेकाना। होड़ होपनको दो आकोवाक् हारकेत सासेत ओकोय ठेनको लाईया, ओकोय ठेनको लालिसा, ओकोय ओवारकोआ? ओनकोवाक् जिवेदोक् रेयाक् होर दो गोटा गे एसेत् चुकाउ आकान ताहेंकाना। बाञ्चावोक् रेयाक् आस दो चाबावाकान ताहेंकानताकोआ। नोंकान ओकते रे ओनको ठेन दो एकेन मित्टेन गे उपाई ताहेंकाना। ओना दो हूल गे। हूल मेनेक जिवी आलाय आर जिवी हाताव रेयाक् लाड़हाई।

मेनआकादाको जे गोलाम साहाव खोन भागेया लाड़हाईकाते गुजुक्। आखिर मा आखिर संताव आर कोचलोनते गुजुक् मा होयोक् कानगे ओना खोन बोगे मा ओना बिरुद रे तेंगोक्। चाहे चेदाक् बाङ जिवी गे चालाव उतारोक्। जुदी आपनार होक आर आईदारी ञाम लागित् जिवी आलाय होयोक् खान नोआ रे दो चेत् भूल गे बानुक्आ बिचकोम नोआ दो गोरोब रेयाक् काथा काना। भाग लेका ओना ओकते गे भोगनाडी आतो रेन भायादी सिदो कान्हू सुबा ठाकुरकिन तेंगो एना। संताव आर सिबोड़ बिरूद रे हूल लागित् होड़किन आयुर केत्कोआ। उनकिन हों माहाजोनाक् रोडोच्, कोचलोन आड़ी सोर खोनकिन ञेलआकात् ताहेंकाना। मित् धाव सिदो दो आच् बाबा माहाजोन ठेने पाझेत ओचोक् कान इयाते दामिन रेन ञेल तोदारोकिच् पालटीन साहेब ठेने लालिसलेदा। सिदो दो पालटीन ठेन आड़ी आस कातेय चालाव लेना, मेनखान उलटाउते आच् गेय रूहेत् तारधाम ओचो एना। नोआ दोसिदो लागित् आड़ी माराङ ओपोमान गे ताहेकाना। उन हिलोक् गे सिदो दो नोआ रेयाक् बादला हाताव लागित् किरियाय जोम लेदा।

सेसानती रे ओना ओकते सेटेरेना आर बाछाव ओचोआकान आयुरकिन होड़किन होय एना। काथाय मित् ञिदा जाहेर एरा दो कुकमूते उनकिन ठेने सोदोर एना। जाहेर एरा दो भायादीकिन होड़ होपोनको आयुरकोते दुक जाला खोन ओवारको लागित्ए मेतावाक्किना। 'सिदो कान्हू! मा एभेन चिरगालबेन। होड़को आयरको लागित् आबेनगेञ बाछावआकात्बेना। होड़को दो आड़ी माराङ दुक रे मेनाक्कोआ। राक् आरको होमोर हालाङ एदा। माहाजोन ठेनको पाझेत ओचोक् काना। दोरोगा ठेनको तोल ओचोक् काना। कुंपनी सोरकार दोबड़ा खाजनाय लादेआपेकाना। आबेनगे ओनको दो संताव सासेत
बिरूद रे लाड़हाई लागित् आयुरकोबेन। नोआ बेगोर आपेयाक बाञ्चाव दो बानुक्आ। आपेयाक् दिसोम खोन माहाजोनको, दोरोगाको आर कुंपनी सोरकार लागाकोपे तोबेआनेच् दिसोम दो रोफा रूवाड़ोक्आ।' कुकमू खोन एभेन तोरागे भायादीकिन दोकिन केटेल गोत् एना, मेनखानकिन बुझाउ केदा जे दोरसोनकिन ञेलआकादा। दोसार हिलोक् उनकिन दो उम साफाकाते ओड़ाक् राचा रे मित्टेन पिण्ड बेनावकाते धुप धुंड़ांकिन जेरेत् केदा आर जाहेर नायो ञुतुम ते बाखेंड़ बिनतीकिन एहोप् केदा। उनकिन दो कुलही कुलहीते गुहरिया टामाककिन रु ओचोकेत्कोआ। नोआ आञ्जोमते आतो रेन होड़को दो उनकिन ओड़ाक्को सेटेर एना। पोण्ड साफा काचा ते डेंगावाकान आर पोरोय पोण्ड किचरिच् ते होड़मो दापालआकात् भायादीकिन पिण्ड सामाड़ रे दुडुप्आकानको ञामकेत्किना। उनकिनाक् नोआ रूप ञेलते आतो होड़को आड़ीको भाड़ो एना। खानगे उनकिन दो कुकमू ञेलआकात् आर सुबा ठाकुरकिन तेंगोएन रेयाक् काथाकिन लाईयात्कोआ। नोआ काथा दो मित् होड़ खोन बार होड़, मित् आतो खोन एटाक् आतोते आड़ी उसारा पासनाव चालाव एना।

भोगनाडी रे सुबा ठाकुरकिन उपेलआकान काथा दो बुरु सेंगेल लेका गोटा टोठा रे पासनाव गोत् एना। होड़को दो आड़ी आसकाते उनकिन ठेन हिजुक्को धुराउ एना। होड़को दो उनकिन सामाङ रे ओमबाक् कातेको जोहारआकिनकान ताहेंकाना आर आको सांवतेको आगुआकात् दानको एमाकिनकान ताहेंकाना। उनकिन दो दोरसोन ञेलआकात् होड़गे। भोर दानते पेरेच्आकान होड़ गे। होड़ होपोनको दो सुबा ठाकुर ञेल काते रासकातेको सारभाराव एना। मित् माराङ आस आर साहोस जानामाक्कोआ। मोने जिवी रे दिल आर दाड़े सारसावाक्कोआ।

सुबा ठाकुर दो भोगनाडी रेयाक् माराङ साउड़ी टाण्डी रे 30 जून 1855 कुनामी ञिंदा रे मित्टेन जापारवाक्किन होहो लेदा। सुबा ठाकुरताकिनाक् होहो आञ्जोमते चारियाकोण्ड खोन गेल हाजार होड़को सेटेर लेना। नोआ दो संताव आर सासेत ओचोवाकान होड़कोवाक् माराङ जापारवाक् ताहेंकाना। उनकिन दो नोआ जापारवाक् रे गादेल होड़को ताला रेकिन लाई जाहिर केदा तेहेञ आपे सामाङ रेलिञ तेंगोआकान दो चोट चांदोवाक् साहाई आर दाड़े तेंगे। जाहेर एरावाक् हुकुम तेंगे आपेको आयुर लागित्लिञ तेंगोआकाना। संताव आर कोचलोन दो नितोक् बाबोन साहावा। ओना दो तेंगो दाराम होयोक्ताबोना। नोआ लागित् ते आबो दो हूल होयोक्ताबोना। हूल रेयाक् ओकते दो सेटेरआकाना, एकेन चिंन्हा कोयोक् होर रे ताहेनपे। जेमोनगे चिन्हा सोदोरोक्आ हूल दो एहोबोक्आ। हूल होतेते गे आबो दो गोलाम रेयाक् सिकड़ीबोन तोपाक् गिडी दाड़ेयाक्आ। हूल होतेते गे दिसोम रोफा रूवाड़ोक्आ आर आबोवाक् राजबोन ञाम दाड़ेयाक्आ। आक् सार साजावपे, कापी तारवाड़े लासेरपे आर बोरलोम फिरी सापड़ावपे। आबो चेतानरे जाहेर एरा मेनाया, उनीगे आबो दोय गोड़ोआबोना।' सुबा ठाकुराक् काथा दो जावरावाकान होड़को लागित् मित्टेन माराङ मानतार गे ताहेंकाना। जित आर छाडावडी ञाम रेयाक् तापिस मानतार गे। उनकिनाक् काथा दो मिमित् होड़को लागित् बिपोद खोन रूखिया ञाम रेयाक् तुड़ी पाड़्हाव ताबीज लेका ताहेंकाना। जावरावाकान होड़को मेन केदा 'आबेनगे राज, आबेनगे सुबा ठाकुर, आबेनगे देब दोरसोनिया, आबेनगे दोक् दारामकिन आबेनाक् हुकुम लेकागे होयोक् मा।' जापारवाक् टाण्डी खोन मिमित् होड़को दो भायादीकिनाक् मानतार बाखेंड़ बाखेंड़ते आपान-आपिन ओड़ाक्को सेटेर एना आर आतो होड़ जावरा काते जोतो काथाको लाई सोदोरात्कोआ। नोआ आञ्जोमते होड़को दो हूल लागित् पाठे उरिजोक्को एहोप् केदा। (तोंगेक्आ लाहा सेच्---)

हायरे हुल

- धार्मेंजय हेम्ब्रम

सिदो-कानु हुल रेयाक् ओकोर बोयहा मोहोत,
लागा टाण्डी आखरिञेत्को नोआ हासा-ओत।

ओकोयेम मेताय ओकोय ठेन दो ती दो मासेम जोड़,
जोतो दिसाम सासोनिया कोमबड़ो चाटोक् होड़।

टाका रेयाक् लोब लालोच बाचो सामड़ावलेन,
नाहाक् बिदाल लाउड़िया गे रेच्ए एहोप्एन।

पारगाना ञुतुम एकेन-एकेन ओलेन संताल राज,
हायरे-हायरे नित रेहों डामाडोल गे सोमाज।

सोरेस आन सोरेस कानून एकेन कागोच रेगे,
साहेब सुबा बाड़िच् हुदिस एनते मोंगोच रेगे ।

तिसेम दिसाई हुल बिदाल नाहाचार नाचार सासोन,
हुल बुगी इका कातेत् आम रासका रेगे मोगोन।

हादोस कातेत् निसास कातेत् चेत् एम चेकाय एसकार,
बोयहा रेयाक् गुन दाड़े उछात आकान नेतार।

बाहा आनाङ जो दो जो आनाङ गे बिली,
ओकोय आंदोड़ आईदार लागित् बानुक्को गे चिली?

नावांनिच् अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सालाक् मानोत सालाक्को ञापामेना

आदिवासी पांची ते दाहड़ी कातेको मानोत केदेया

खोबोरिया

पाकुड़। जिला रे नावांनिच्ए हेच्एन अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कुमार गौरव मानोत सालाक् ञापामे लागित् केकेएम कॉलेज पाकुड़ रेन आदिवासी पाठवाको दो सोमवार हिलोक् आदिवासी पांची ते मानसालाक् दाहड़ी काते दारे इता एमचालाय तुलुच्को मानोत सालाक्को ञापाम केदेया। आदिवासीको लागित् पांची दो एकेन होड़मो दापाल सुमुङ साधोन गे बाङ, बोरोङ आदिवासीकोवाक् सांस्कृतिक पहचान, सोमाज सांव जोड़ाव, सामाजतेयाक् हालोत आर प्रकृति लागित् मानोत रेयाक् चिन्हा होयोक् काना। सांवते गे 30 जून 2026 हूल दिवस बाबोत रेको गालमाराव चारचा केदा आर पाकुड़ जिला दो नशा मुक्त जिला आर कोमबड़ो, डाकात, बलात्कार, गोच् लेकान घोटोनाको रोकाव दाराम लागित् आड़ी घाड़िच्को गालमाराव केदा। नोआ ताकरे आदिवासी पाठवाको रे कमल मुर्मू छात्र नेता, अजय हे ब्रम वरिष्ठ छात्रनायक, रोजिक मरांडी उप छात्रनायक, सर्वेश बेसरा, बिपिन सोरेन, सिकंदर हांसदा एमानको ताहेंकाना।

आदिवासी समाज के अधिकारों की रक्षा का संदेश देता है हूल

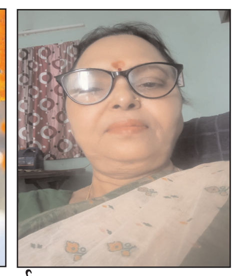

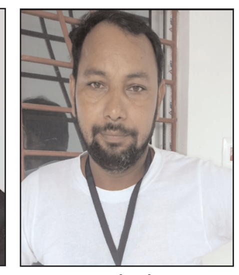

पाकुड़ के लोगों ने दी प्रतिक्रियाएं

जितेन्द्र दास

पाकुड़। हूल दिवस प्रत्येक वर्ष 30 जून को मनाया जाता है ।यह दिन 1855 के संथाल हूल विद्रोह की स्मृति में मनाया जाता है । हूल शब्द का अर्थ है विद्रोह क्रांति या अन्य के विरुद्ध संघर्ष । यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम की शुरुआती और महत्वपूर्ण जन आंदोलन में से एक माना जाता है ।

प्रमुख लोगों के विचार -

आदिवासी समाज के अधिकारों की रक्षा का संदेश देता है: दानियल

हूल दिवस 1855 के संथाल हुल (विद्रोह) की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 30 जून को जाता है। इस ऐतिहासिक विद्रोह का नेतृत्व सिदो मुर्मू, कान्हू मुर्मू, चाँद मुर्मू और भैरव मुर्मू ने अंग्रेजी शासन तथा शोषणकारी महाजनी व्यवस्था के विरुद्ध किया था।हुल दिवस हमें स्वतंत्रता, साहस, सामाजिक न्याय और आदिवासी समाज के अधिकारों की रक्षा का संदेश देता है। इस अवसर पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है तथा उनके संघर्ष और बलिदान को याद किया जाता है।

आदिवासी समाज के अधिकारों की रक्षा का संदेश देता है हूल दिवस : मार्क बस्की

फूल दिवस 1855 के संथाल रूल स्मृति में प्रत्येक वर्ष 30 जून को मनाया जाता है ।इस ऐतिहासिक विद्रोह का नेतृत्व कानून सिदो मुर्मू, कान्हु मुर्मू, चांद मुर्मू और भैरव मुर्मू ने अंग्रेजी शासन तथा शोषणकारी ,महाजनी व्यवस्था के विरुद्ध किया था। हुल दिवस हमें स्वतंत्रता, साहस, सामाजिक न्याय और आदिवासी समाज के अधिकारों की रक्षा का संदेश देता है।

जेकेएलएम जिला अध्यक्ष

आदिवासी समाज के गौरवशाली इतिहास कि हमें याद दिलाता है हूल : अजीजुल इस्लाम

हूल दिवस आदिवासी समाज के गौरवशाली इतिहास कि हमें याद दिलाता है। हमें अपने महापुरुषों के आदर्शों को अपनाकर समाज में एकता भाईचारा और न्याय की भावना को मजबूत करना चाहिए। हमें संकल्प लेना चाहिए कि अपने इतिहास संस्कृति और विरासत का सम्मान करेंगे और समाज में शांति समानता और सद्भावना बनाए रखने के लिए अपना योगदान देंगे।

झामुमो जिला अध्यक्ष

हूल अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रेरणा का प्रतीक : प्रो निर्मल मुर्मू

हुल दिवस केवल एक ऐतिहासिक दिवस नहीं बल्कि अन्याय और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने का प्रेरणा का प्रतीक है। यह हमें अधिकारों और सम्मान की रक्षा का संदेश देता है। किंतु वर्तमान समय में हमें अपनी सम्मान के लिए लगता है कि एक और हुल की आवश्यकता है।

स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष का नमन करने का अवसर : चंदन भगत

हूल सिदो- कन्हू, चांद - भैरव और सभी वीर शहीदों के साहस बलिदान तथा स्वतंत्रता के लिए किए गए संघर्ष का नमन करने का अवसर है। यह हमें आदिवासी समाज के गौरवशाली अतीत के इतिहास को याद दिलाता है। इस अवसर पर हम अपने प्रेरणा के स्रोत सिदो - कन्हू, चांद - भैरव जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

समाजसेवी

शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा : चित्रलेखा गौर

आजादी हमें यूं ही नहीं मिली है। आजादी की जंग की शुरुआत में वीर सिदो- कन्हू, चांद - भैरव जैसे वीर योद्धा ने संथाल विद्रोह से इसे शुरुआत की थी। यह हमें हमेशा शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा देती है। जो आज भी कायम है

पूर्व मुखिया

स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा देने में प्रेरणा का स्रोत : रिचा कुमारी

संथाल हुल की शुरुआत 30 जून 1855 को भोगनाडीह से शुरू हुई थी। इस आंदोलन का नेतृत्व सिदो मुर्मू , कान्हू मुर्मू ,चांद मुर्मू, भैरव मुर्मू ने किया था। उन्होंने कहा कि इस संघर्ष में उनकी बहन फूलों मुर्मू और झानो मुर्मू का भी महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। उस समय अंग्रेजी शासन जमींदारों और महाजनों द्वारा आदिवासी समुदाय को शोषण किया जा रहा था। इस आंदोलन का उद्देश्य शोषण से मुक्ति और सम्मान पूर्वक जीवन का अधिकार प्राप्त करना था। यह आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा देने में प्रेरणा का स्रोत रहा है। ऐसे वीर सपूत को नमन है।

संतालों ने हिम्मत से अंग्रेजी सिपाहियों और जमीदारों का मुकाबला किया था : बिकास रविदास

संथालों ने बेहद हिम्मत से अंग्रेजी सिपाहियों और जमीदारों का मुकाबला किया। अंग्रेजों ने भी पूरी क्रूरता के साथ विद्रोहियों को रोकने का प्रयास किया। सिद्धू और कान्हू दोनों भाइयों को पकड़ लिया गया और पेड़ से लटकाकर 26 जुलाई 1855 को फांसी दे दी। इन्ही शहीदों की याद में हर साल पूरा देश हूल क्रांति दिवस मनाता है।

झामुमो हिरणपुर प्रखंड उपाध्यक्ष

देवघर में रथ यात्रा महोत्सव का शुभारंभ

देवघर। जसीडीह मुख्य मार्ग स्थित रोहिणी मोड़ के पास दामोदर ग्राम इस्कॉन मंदिर परिसर में सोमवार को स्नान पूर्णिमा और स्नान यात्रा का आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया गया। इसी के साथ आगामी रथ यात्रा महोत्सव का भी शुभारंभ हो गया। मंदिर प्रबंधन ने बताया कि 16 जुलाई को झांसागढ़ी स्थित गौशाला मैदान से अपराह्न तीन बजे भगवान जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा निकाली जाएगी। कार्यक्रम की शुरुआत दोपहर करीब 12 बजे संकीर्तन के साथ हुई, जो लगभग एक घंटे तक चला। इसके बाद इस्कॉन प्रमुख श्रीनिवास गोपाल दास ने स्नान यात्रा का महत्व बताते हुए कहा कि स्नान पूर्णिमा भगवान जगन्नाथ के प्राकट्य दिवस के रूप में भी मनाई जाती है। उन्होंने बताया कि स्नान यात्रा के बाद भगवान 15 दिनों तक अस्वस्थ रहने की परंपरा के अनुसार भक्तों को दर्शन नहीं देते और इस अवधि में केवल उनकी सेवा की जाती है। उन्होंने बताया कि हर वर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा के अवसर पर भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा को मंदिर से बाहर लाकर भक्तों को दर्शन कराया जाता है। इसके बाद 108 कलशों के पवित्र जल से उनका अभिषेक किया जाता है। अभिषेक के लिए विभिन्न तीर्थस्थलों से लाए गए जल को वैदिक मंत्रों से शुद्ध किया जाता है, जिसमें चंदन, गुलाब, घी, दही और मधु सहित अन्य पवित्र सामग्री मिलाई जाती है।

ट्रेन में युवक पर हमला, पत्नी और बहन से अभद्रता, 77 हजार रुपये छीनने का आरोप

सरैयाहाट। हंसडीहा रेलवे स्टेशन पर सोमवार को ट्रेन में चढ़ने के दौरान मारपीट, महिलाओं के साथ अभद्रता और 77 हजार रुपये की छिनतई का मामला सामने आया है। घटना को लेकर हंसडीहा निवासी सूरज कुमार सिंह ने हंसडीहा थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। आवेदन में सूरज कुमार सिंह ने बताया कि सोमवार सुबह करीब 10 बजे वह अपनी पत्नी पप्पी देवी और बहन काजल कुमारी के साथ भागलपुर जाने वाली ट्रेन से बहन की शादी का सामान खरीदने जा रहे थे। ट्रेन हंसडीहा रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या दो पर खड़ी थी। इसी दौरान बभनखेता गांव निवासी छोटू कुमार, आनंद यादव, सुबोध यादव, दीपक यादव, बादल यादव, प्रमोद यादव, विकास यादव, मुन्ना यादव तथा एक-दो अज्ञात व्यक्ति भी ट्रेन में चढ़ गए। शिकायत के अनुसार, सभी आरोपितों ने मिलकर उनकी पत्नी और बहन के साथ धक्का-मुक्की की तथा पत्नी की साड़ी खींचकर अभद्र व्यवहार किया।

वज्रपात से 18 वर्षीय किशोरी की मौत

रामगढ़ (दुमका) । थाना क्षेत्र अंतर्गत लखनपुर गांव में सोमवार की शाम वज्रपात से 18 वर्षीय मोनी बेसरा की मौत हो गई। घटना के वक्त मोनी बेसरा अपने घर पर अकेली थी। उसी वक्त वज्रपात हो गया। आनन फानन में ग्रामीणों की मदद से उसे रामगढ़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया जहां चिकित्सकों ने जांच के बाद मोनी बेसरा को मृत घोषित कर दिया। मृतका के माता-पिता सोमवार को लगने वाली साप्ताहिक हाट में खरीदारी करने गए थे। घटना की सूचना पाकर परिजन घर पहुंच गए हैं। खबर लिखे जाने तक शव का पोस्टमार्टम कराने की तैयारी की जा रही थी।

नगर थाना प्रभारी राजीव कुमार का मधुपुर तबादला, रवि ठाकुर को मिली नगर की कमान

देवघर । एसपी प्रवीण पुष्कर ने पुलिस प्रशासन को अधिक प्रभावी और सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से जिले में सात पुलिस पदाधिकारियों का तत्काल प्रभाव से तबादला किया है। इस संबंध में जिला आदेश संख्या 732/2026 जारी किया गया है। जारी आदेश के अनुसार, नगर थाना प्रभारी राजीव कुमार को मधुपुर थाना प्रभारी बनाया गया है, जबकि बाबा मंदिर थाना प्रभारी रवि ठाकुर को नगर थाना की कमान सौंपी गई है। वहीं, मधुपुर थाना प्रभारी संतोष कुमार गुप्ता का तबादला बाबा मंदिर थाना प्रभारी के पद पर किया गया है। इसके अलावा, बाबा मंदिर थाना में पदस्थापित प्रियरंजन कुमार को चितरा थाना का थाना प्रभारी बनाया गया है। तकनीकी शाखा, देवघर में कार्यरत संदीप कृष्णा को मोहनपुर थाना का नया थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है। वहीं, चितरा थाना प्रभारी विपिन कुमार तथा मोहनपुर थाना प्रभारी सालो हेंब्रम का तबादला पुलिस केंद्र, देवघर कर दिया गया है। एसपी प्रवीण पुष्कर के आदेश के बाद सभी स्थानांतरण तत्काल प्रभाव से लागू कर दिए गए हैं।

महेशमारा में भव्य राधा-कृष्ण मंदिर का निर्माण शुरू

देवघर। शहर के महेशमारा में भव्य राधा-कृष्ण मंदिर के निर्माण की शुरुआत सोमवार को ज्येष्ठ पूर्णिमा के अवसर पर हुई। वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. सुनील खवाड़े ने आम लोगों की मौजूदगी में मंदिर की आधारशिला रखकर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। उन्होंने पहली ईंट जोड़कर मंदिर निर्माण की शुरुआत की। इस अवसर पर पुरोहित जनार्दन पंडित ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधि-विधान से भूमि पूजन कराया। धार्मिक माहौल में बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी शामिल हुए। डॉ. सुनील खवाड़े ने कहा कि महेशमारा में राधा-कृष्ण मंदिर का निर्माण पूरे क्षेत्र के लिए खुशी की बात है। उन्होंने कहा कि मंदिर निर्माण में हरसंभव सहयोग दिया जाएगा और प्रयास रहेगा कि इसे भव्य स्वरूप दिया जाए, ताकि दूर-दराज से भी श्रद्धालु यहां दर्शन और पूजा के लिए पहुंच सकें। उन्होंने बताया कि मंदिर की वास्तुकला आकर्षक होगी और इसके निर्माण से आसपास का वातावरण भी आध्यात्मिक बनेगा।

पानी को लेकर मारपीट, छह लोग घायल

देवघर। नगर थाना क्षेत्र के बरियार बांधी मोहल्ले में पानी बहने को लेकर शुरू हुआ मामूली विवाद देखते ही देखते हिंसक झड़प में बदल गया। घटना में एक ही परिवार के छह लोग घायल हो गए। सभी घायलों को इलाज के लिए देवघर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां ऑन ड्यूटी चिकित्सक की देखरेख में उनका इलाज चल रहा है। घायल दिलीप कुमार साह ने बताया कि उन्होंने हाल ही में नया घर बनवाया है। घर की नई ढलाई होने के कारण उसमें पानी भरकर रखा गया था। इसी दौरान किसी बच्चे के कारण वह पानी बहकर पड़ोसी के घर की ओर चला गया। सोमवार सुबह इसी बात को लेकर दोनों पक्षों के बीच कहासुनी शुरू हुई। दिलीप कुमार साह का आरोप है कि विवाद के दौरान पड़ोसी चार-पांच अन्य लोगों के साथ लाठी-डंडा लेकर उनके घर में घुस आए और परिवार के सदस्यों के साथ मारपीट करने लगे। इस घटना में दिलीप कुमार साह, पिंकी साह, सोनाली, सरिता देवी, अर्नव कुमार और अभिनव कुमार घायल हो गए। मारपीट की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और बीच-बचाव कर किसी तरह मामला शांत कराया। इसके बाद परिजन सभी घायलों को इलाज के लिए देवघर सदर अस्पताल लेकर पहुंचे। घटना की सूचना नगर थाना पुलिस को दे दी गई है। पुलिस मामले की जानकारी जुटाकर आगे की कार्रवाई में लगी हुई है।

पाकुड़ : दो बंद मकानों से लाखों की चोरी

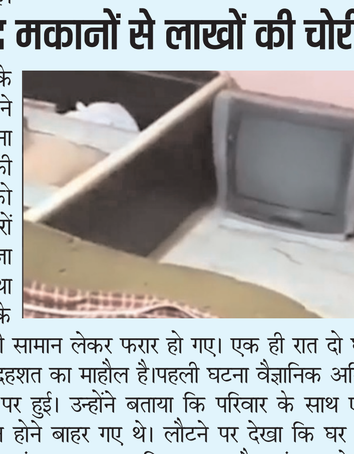

पाकुड़ । नगर थाना क्षेत्र के सिंधीपाड़ा मोहल्ले में चोरों ने दो बंद मकानों को निशाना बनाकर लाखों रुपये की चोरी की वारदात को अंजाम दिया। बदमाश घरों का ताला और दरवाजा तोड़कर अंदर घुसे तथा नगदी, सोने-चांदी के जेवरात और अन्य कीमती सामान लेकर फरार हो गए। एक ही रात दो घरों में हुई चोरी से इलाके में दहशत का माहौल है।पहली घटना वैज्ञानिक अमित कुमार आर्या के आवास पर हुई। उन्होंने बताया कि परिवार के साथ एक विवाह समारोह में शामिल होने बाहर गए थे। लौटने पर देखा कि घर का दरवाजा टूटा हुआ है और अंदर का सामान बिखरा पड़ा है। जांच करने पर नगदी, जेवरात समेत कई कीमती सामान गायब मिले।दूसरी चोरी सेवानिवृत्त शिक्षिका अल्पना चटर्जी के घर में हुई। उन्होंने बताया कि उनकी पुत्री ऋतु भट्टाचार्य अपने दो बच्चों के साथ वहीं रहती हैं। परिवार किसी आवश्यक कार्य से बरहरवा के बिंदुपाड़ा गया हुआ था। इसी दौरान चोरों ने घर में घुसकर अलमारी और अन्य सामान खंगाल डाला। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार सोने-चांदी के आभूषण, नगदी और पीतल के बर्तन चोरी हुए हैं। चोरी गई संपत्ति का सही आकलन परिवार के सभी सदस्यों के लौटने के बाद किया जाएगा। घटना की सूचना मिलते ही नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है ताकि आरोपियों की पहचान की जा सके। पुलिस ने घटनास्थल से आवश्यक साक्ष्य भी जुटाए हैं।मामले की जानकारी मिलने पर एसडीपीओ कुमार गौरव भी घटनास्थल पहुंचे और जांच का जायजा लिया।

बसंत सोरेन ने सुशील मुर्मू के परिजनों से की मुलाकात, कहा -पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति

रामगढ़ (दुमका) । झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं झारखंड आंदोलनकारी रहे स्वर्गीय सुशील मुर्मू के निधन की खबर पाकर झामुमो नेता सह दुमका विधायक बसंत सोरेन सोमवार को स्व सुशील मुर्मू के पथरिया पंचायत के गोविंद पुर स्थित आवास पहुंचे और शोक संतप्त परिवार से मिलकर गहरी संवेदना व्यक्त की।इस दौरान विधायक बसंत सोरेन ने स्व. सुशील मुर्मू के परिजनों को ढांढस बंधाते हुए कहा कि सुशील दा का निधन झारखंड मुक्ति मोर्चा परिवार एवं झारखंड आंदोलन के लिए अपूरणीय क्षति है। उन्होंने कहा कि वे अपने जीवन का महत्वपूर्ण समय संगठन को मजबूत बनाने तथा झारखंड आंदोलन को गति देने में समर्पित किया था। उनके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि स्व. सुशील मुर्मू एक समर्पित, कर्मठ एवं जनहित के प्रति प्रतिबद्ध कार्यकर्ता थे। उनके निधन से पार्टी ने एक अनुभवी और संघर्षशील साथी को खो दिया है। उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोकाकुल परिवार को इस दुख की घड़ी में संबल प्रदान करने की प्रार्थना की।मौके पर झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिला अध्यक्ष शिव कुमार बास्की, जिला परिषद उपाध्यक्ष सुधीर मंडल प्रखंड अध्यक्ष बाबूलाल मुर्मू, पूर्व अध्यक्ष शिवलाल मरांडी, सचिव नन्दलाल राउत, छोटेलाल मंडल सहित कई पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं स्थानीय ग्रामीण लोग उपस्थित थे।

हूल दिवस पर सिदो कान्हू हाई स्कूल में कार्यक्रम

दुमका। सिदो कान्हू हाई स्कूल में हूल दिवस के पावन अवसर पर एक भव्य एवं प्रेरणादायक कार्यक्रम का आयोजन बेहद उत्साह और उमंग के साथ किया गया। इस विशेष समारोह का शुभारंभ विद्यालय के सचिव प्रदीप्त मुखर्जी, प्राचार्य इंद्रजीत प्रसाद भगत, उप प्राचार्य राजेश कुमार झा, अंग्रेजी विभागाध्यक्ष अमित झा और रंजीत प्रसाद साह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए सचिव प्रदीप्त मुखर्जी ने विद्यार्थियों को संबोधित किया और उन्हें हूल दिवस के ऐतिहासिक महत्व से रूबरू कराते हुए प्रेरित किया। इसके बाद कक्षा नौवीं के छात्र अमन कुमार मिश्रा और ग्यारहवीं विज्ञान की छात्रा सबीना बेसरा ने स्वागत और परिचय भाषण देकर अतिथियों का अभिनंदन किया। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के तहत कक्षा नौवीं की छात्राओं लक्ष्मी प्रिया और दीपिका टुडू ने एक बेहद मनमोहक नृत्य पेश कर पूरे सभागार का मन मोह लिया। वहीं शिक्षाप्रद सत्र में दसवीं के छात्र भास्कर तिवारी और नौवीं की छात्रा रानी सोरेन ने अंग्रेजी में बेहद प्रभावशाली और ओजस्वी भाषण प्रस्तुत किए। इस मौके पर उप प्राचार्य राजेश कुमार झा ने अपने मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को जीवन में निरंतर आगे बढ़ने की सीख दी। कार्यक्रम के सफल संचालन की जिम्मेदारी अंग्रेजी विभागाध्यक्ष सह लिटरेचर क्लब के मेंटर अमित झा ने निभाई। आयोजन को सफल बनाने में सीसीए विभागाध्यक्ष सुनील कुमार, मेंटर रणजीत प्रसाद साह और शशांक शेखर चक्रवर्ती की गरिमामयी उपस्थिति और सक्रिय योगदान रहा।

हूल दिवस से पहले लिट्टीपाड़ा पहुंची कांग्रेस की पदयात्रा, नेताओं ने आदिवासी अधिकारों पर दिया जोर

लिट्टीपाड़ा (पाकुड़)। हूल दिवस के अवसर पर दुमका से भोगनाडीह तक निकाली जा रही आदिवासी कांग्रेस की पदयात्रा सोमवार को लिट्टीपाड़ा पहुंची। पदयात्रियों ने विश्राम के बाद लिट्टीपाड़ा चौक स्थित महापुरुषों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद आयोजित सभा में कांग्रेस नेताओं ने आदिवासी समाज के अधिकारों, एकता और सामाजिक मुद्दों पर अपने विचार रखे।सभा को संबोधित करते हुए हिरणपुर प्रखंड अध्यक्ष ने कहा कि हूल दिवस यह संदेश देता है कि जब-जब अत्याचार बढ़ेगा, तब-तब सिद्धो-कान्हू जैसे महानायक अन्याय के खिलाफ खड़े होंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि आदिवासी समाज की पहचान को कमजोर करने का प्रयास किया जा रहा है।कांग्रेस नेता रसका हेंब्रम ने कहा कि आदिवासी समाज को अपने अधिकारों और अस्तित्व की रक्षा के लिए एकजुट रहने की आवश्यकता है। प्रदेश अध्यक्ष मराण्डी ने अपने संबोधन में आरोप लगाया कि आदिवासी समाज को विभाजित करने तथा मताधिकार को प्रभावित करने का प्रयास किया जा रहा है। कार्यक्रम को नेशनल कोऑर्डिनेटर आशिका कुजूर तथा अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य डॉ. सुशील मरांडी ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम में सैकड़ों पदयात्री एवं कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित रहे। अंत में प्रखंड अध्यक्ष मुर्शीद आलम ने सभी अतिथियों एवं पदयात्रियों का आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

हादसे के शिकार श्रमिकों के आश्रितों को मिली मदद

दुमका। सोमवार को एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील पहल के तहत उपायुक्त अभिजीत सिन्हा द्वारा झारखंड प्रवासी श्रमिक दुर्घटना कोष के अंतर्गत दो मृतक प्रवासी श्रमिकों के वैध आश्रितों को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। यह सहायता उन परिवारों के लिए एक बड़ा संबल है जिन्होंने अपने कमाऊ सदस्यों को खो दिया है। प्रशासनिक स्तर पर हुई इस त्वरित कार्रवाई के तहत प्रखंड रामगढ़ के ग्राम पिंडारी (पंचायत नौखेता) निवासी स्वर्गीय विकास राय, जिनकी गुजरात में मृत्यु हो गई थी, तथा ग्राम शंकरपुर (पंचायत भतुरिया बी) निवासी स्वर्गीय रामदेव राय, जिनकी केरल राज्य में आकस्मिक मृत्यु हो गई थी, के परिवारों को मदद पहुंचाई गई। सभी नियमानुसार आवश्यक प्रक्रियाएं पूरी होने के बाद स्वर्गीय विकास राय की माता आशा देवी और स्वर्गीय रामदेव राय की माता विभावती देवी को पचास-पचास हजार रुपये की एकमुश्त आर्थिक सहायता राशि सौंपी गई।

बाबा दुबे पूजा धूमधाम से संपन्न

मसलिया । मसलिया प्रखंड के कुंजबोना पंचायत अंतर्गत गादी सिंगरो गांव में सोमवार को वार्षिक बाबा दुबे पूजा श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुई। पूजा में दुमका के अलावा देवघर और जामताड़ा के विभिन्न गांवों से सैकड़ों श्रद्धालु शामिल हुए। श्रद्धालु दूध, दही, चीनी, अगरबत्ती, फल-फूल सहित पूजन सामग्री लेकर बाबा के मंदिर पहुंचे। पंडित विजय पांडेय एवं संजय पांडेय ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ विधि-विधान से पूजा-अर्चना कराई और क्षेत्रवासियों के सुख-समृद्धि की कामना की। मुख्य यजमान सुभाष सिंह ने बताया कि पुरखों की परंपरा के अनुसार बंगला आषाढ़ माह के दूसरे सोमवार को बाबा दुबे की पूजा की जाती है।

स्कूल में छात्रा से कथित छेड़छाड़ के आरोप पर बवाल

किताब लेने स्कूल गई सातवीं की छात्रा ने प्रधानाध्यापक पर लगाया छेड़खानी का आरोप

संवाददाता

सरैयाहाट। सरैयाहाट प्रखंड के उत्क्रमित उच्च विद्यालय दिग्घी में कक्षा सातवीं की एक छात्रा द्वारा विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक पर कथित छेड़छाड़ का आरोप लगाए जाने के बाद सोमवार को पूरे इलाके का माहौल गर्म हो गया। देखते ही देखते बड़ी संख्या में ग्रामीण और अभिभावक विद्यालय पहुंच गए। आक्रोश इतना बढ़ा कि विद्यालय में ताला जड़ दिया गया और घंटों तक अफरा-तफरी का माहौल बना रहा। पीड़ित छात्रा का आरोप है कि वह बीते बुधवार को किताब लेने विद्यालय गई थी। उसी दौरान प्रभारी प्रधानाध्यापक ने उसके साथ कथित रूप से अभद्र व्यवहार करते हुए छेड़छाड़ करने का प्रयास किया। घर पहुंचकर छात्रा ने रोते हुए पूरी घटना अपने परिजनों को बताई। इसके बाद गांव में घटना की चर्चा फैलते ही लोगों का गुस्सा भड़क उठा। सोमवार को ग्रामीणों ने विद्यालय पहुंचकर विरोध जताया और कार्रवाई की मांग पर अड़ गए। सूचना मिलते ही अंचलाधिकारी राहुल कुमार शानू और थाना प्रभारी राजेंद्र यादव पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। अधिकारियों ने लोगों को समझाकर शांत कराया, विद्यालय का ताला खुलवाया तथा छात्रा और उसके परिजनों से पूरे मामले की जानकारी ली।

मामले की गंभीरता से जांच की जा रही है। पीड़ित छात्रा से भी बातचीत की गई है। आरोपी शिक्षक के पक्ष को जाना गया। निष्पक्ष तरीके से जांच कराई जाएगी, जांच में आरोप सही पाए जाने पर संबंधित व्यक्ति के विरुद्ध नियमानुसार विभागीय कार्रवाई के साथ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

राहुल कुमार शानू,
अंचलाधिकारी सरैयाहाट।

भाजपा की बैठक, बूथ स्तर तक संगठन मजबूत करने पर जोर

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

दुमका। भारतीय जनता पार्टी की दुमका जिला इकाई की महत्वपूर्ण संगठनात्मक बैठक सोमवार को अग्रसेन भवन में जिला अध्यक्ष रूपेश मंडल की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में मुख्य रूप से भाजपा के संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह उपस्थित रहे, जबकि संचालन जिला महामंत्री मृणाल मिश्रा ने किया।

बैठक को संबोधित करते हुए कर्मवीर सिंह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की सबसे बड़ी ताकत उसका समर्पित कार्यकर्ता है। उन्होंने कहा कि संगठन की मजबूती के लिए पार्टी की गतिविधियों का बूथ स्तर तक नियमित संचालन बेहद जरूरी है और प्रत्येक कार्यकर्ता को संगठन के कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभानी होगी।

उन्होंने संगठनात्मक कार्यों की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए बताया कि प्रत्येक माह 1 से 7 तारीख तक मंडल स्तर की बैठकें आयोजित की जाएंगी। इसके बाद 10 से 11 तारीख को जिला स्तरीय बैठक तथा प्रत्येक माह की 15 तारीख को प्रदेश स्तरीय बैठक आयोजित होगी। इसके अलावा हर महीने के तीसरे रविवार को शक्तिकेंद्र बैठक तथा अंतिम रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय कार्यक्रम मन की बात को कार्यकर्ताओं और आम नागरिकों के साथ सामूहिक रूप से सुनने का निर्देश दिया गया।

देवघर में स्वनिधि महोत्सव, 27.20 लाख रुपये का ऋण वितरित

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

देवघर। नगर निगम के सभागार में सोमवार को स्वनिधि महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शहर के पथ विक्रेताओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना और उन्हें सामाजिक सुरक्षा से जोड़ना था। समारोह में मेयर रवि कुमार राउत, डिप्टी मेयर टीप चटर्जी, नगर आयुक्त सुलोचना मीणा, सहायक नगर आयुक्त, नगर मिशन प्रबंधक, विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि, सामुदायिक संगठनकर्ता तथा सीआरपीएस मौजूद रहे। नगर निगम की ओर से एक जून से 30 जून तक आयोजित लोक कल्याण मेले के दौरान पथ विक्रेताओं को बड़े पैमाने पर आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई गई। इस अवधि में विभिन्न बैंकों के माध्यम से कुल 27.20 लाख रुपये का ऋण वितरित किया गया। इसके तहत 113 पथ विक्रेताओं को पहली किस्त के रूप में 15-15 हजार रुपये, 15 विक्रेताओं को दूसरी किस्त के रूप में 25-25 हजार रुपये तथा 11 विक्रेताओं को तीसरी किस्त के रूप में 50-50 हजार रुपये का ऋण दिया गया। नगर आयुक्त सुलोचना मीणा ने कहा कि प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के तहत देवघर नगर निगम क्षेत्र के सभी पात्र पथ विक्रेताओं को योजना का लाभ दिलाने का लक्ष्य रखा गया है।

मधुपुर : ट्यूशन के लिए निकली 16 वर्षीय छात्रा लापता, अपहरण की आशंका

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

मधुपुर। थाना क्षेत्र से 16 वर्षीय एक छात्रा के रहस्यमय ढंग से लापता होने का मामला सामने आया है।रविवार की सुबह ट्यूशन पढ़ने के लिए घर से निकली छात्रा देर शाम तक वापस नहीं लौटी,जिसके बाद परिजनों में हड़कंप मच गया। काफी खोजबीन के बावजूद जब उसका कोई सुराग नहीं मिला तो छात्रा के पिता ने मधुपुर थाना में लिखित आवेदन देकर पुत्री की सकुशल बरामदगी तथा दोषियों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की मांग की है। घटना के बाद पुलिस पूरे मामले को गंभीरता से लेते हुए विभिन्न बिंदुओं पर जांच कर रही है। परिजनों द्वारा दिए गए आवेदन के अनुसार, 16 वर्षीय नाबालिग छात्रा शनिवार 28 जून की सुबह करीब 7¬18 बजे अपने घर से इलेक्ट्रिक स्कूटी पर सवार होकर ट्यूशन पढ़ने के लिए निकली थी। निर्धारित समय बीत जाने के बाद भी जब वह घर नहीं लौटी तो परिवार के लोग चिंतित हो गए। पहले उन्होंने अपने स्तर पर रिश्तेदारों, परिचितों और संभावित स्थानों पर उसकी तलाश की, लेकिन कहीं से भी कोई जानकारी नहीं मिली। छात्रा के पिता ने आवेदन में आशंका व्यक्त की है कि उनकी पुत्री को किसी अज्ञात व्यक्ति ने बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया है अथवा उसका अपहरण कर लिया गया है। उन्होंने पुलिस से मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल कार्रवाई कर बेटी को सकुशल बरामद करने की गुहार लगाई है। सीसीटीवी फुटेज से मिला महत्वपूर्ण सुराग आवेदन मिलते ही मधुपुर पुलिस सक्रिय हो गई। पुलिस ने छात्रा के घर के आसपास और संभावित मार्गों पर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू की।

देवघर : अधिवक्ताओं ने हूल के शहीदों को स्मरण किया

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

देवघर। हुल दिवस के अवसर पर अधिवक्ताओं ने संताल हुल के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके संघर्ष और बलिदान को याद किया। उन्होंने कहा कि हुल दिवस केवल इतिहास का स्मरण करने का अवसर नहीं है, बल्कि समाज को एकजुट करने, अपनी संस्कृति और परंपराओं को सहेजने तथा नई पीढ़ी को जागरूक बनाने का भी दिन है। रेखा कुमारी ने कहा कि हुल दिवस पूर्वजों के साहस और बलिदान की याद दिलाता है। उन्होंने लोगों से शिक्षा, एकता और समाज के विकास के लिए मिलकर काम करने तथा पूर्वजों की विरासत को आगे बढ़ाने का आह्वान किया। महामाया ने कहा कि सिदो-कान्हू, चांद-भैरव और फूलो-झानो का संघर्ष आज भी अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा देता है। उन्होंने कहा कि हुल दिवस समाज की अस्मिता, सम्मान और गौरव का प्रतीक है।

देवराज पप्पू ने कहा कि हुल दिवस केवल अतीत को याद करने का अवसर नहीं है। यह नई पीढ़ी को अपने अधिकारों, संस्कृति और परंपराओं के प्रति जागरूक करने का भी महत्वपूर्ण दिन है।

जूनियर बाबूलाल मरांडी ने कहा कि वर्ष 1855 के हुल आंदोलन ने देश की आजादी की लड़ाई को नई दिशा दी थी। उन्होंने कहा कि शहीदों के सपनों को साकार करने के लिए समाज में भाईचारा, एकता और विकास की भावना को मजबूत करना जरूरी है। अनिल कोल ने कहा कि हुल दिवस यह संदेश देता है कि एकजुट होकर किसी भी अन्याय का मजबूती से सामना किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हुल आंदोलन के शहीदों का बलिदान हमेशा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।

बाबा बैद्यनाथधाम–बासुकिनाथ तीर्थ क्षेत्र विकास प्राधिकार।
(कार्यालय, बाबा बैद्यनाथ मंदिर, देवघर)

E-mail- contact@babadham.org/babamandir2018@gmail.com

आम सूचना

श्रावणी मेला–2026 के अवसर पर प्रत्येक सोमवार को बाबा बैद्यनाथ मंदिर सहित सभी मंदिरों एवं सभी प्रवेश द्वार को फूलों से सजाया जाना है। साथ ही साथ सम्पूर्ण मंदिर परिसर(22 मंदिर सहित) में आकर्शक विद्युत साज–सज्जा करवाया जाना है। उक्त के दर निर्धारण खुली डाक के द्वारा मंदिर प्रभारी की अध्यक्षता में प्रशासनिक भवन स्थित मंदिर कार्यालय में दिनांक–..07../..07./2026 को अपराह्न 03:30 बजे किया जाएगा।

खुली डाक में भाग लेने हेतु इच्छुक व्यक्ति/प्रतिष्ठान भाग लेने से पूर्व बाबा बैद्यनाथ मंदिर सहित सभी मंदिरों एवं सभी प्रवेश द्वार का अवलोकन कर सकते हैं। डाक में भाग लेनेवाले व्यक्ति/प्रतिष्ठान को फूल एवं विद्युत सजावट से संबंधित प्रस्तुति(PowerPoint के द्वारा) दिखाना होगा। सर्वश्रेश्ठ प्रस्तुती एवं न्यूनतम बोली के आधार पर संवेदक का चयन किया जाएगा।

डाक में भाग लेनेवाले व्यक्ति/प्रतिश्ठान आधार कार्ड, पेन कार्ड एवं GST रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र के साथ आवेदन मंदिर कार्यालय में दिनांक–..06../..07../2026 तक कार्यालय अवधि में जमा करना होगा।

कार्य की विवरणी:–

1. फूल सजावट– श्रावण माह में प्रत्येक सोमवार।
2. विद्युत सजावट– सम्पूर्ण श्रावण माह।

संवेदक द्वारा प्रस्तुति एवं न्यूनतम बोली में सफल होने वाले व्यक्ति/प्रतिष्ठान को कार्य आवंटित किया जाएगा।

ह०/–
अनुमण्डल पदाधिकारी
–सह–मंदिर प्रभारी,बाबा बैद्यनाथ मंदिर, देवघर।

PR 383538 Deoghar(26-27)D

आई0टी0आई0 में नामांकन के लिए ऑनलाइन पंजीकरण जारी, जल्द करें आवेदन

झारखण्ड सरकार श्रम, नियोजन, प्रशिक्षण एवं कौशल विकास विभाग
प्राचार्य का कार्यालय :–महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, देवघर बसुआडीह, जसीडीह, देवघर–814142
Office e-mail id-witideoghar@gmail.com

महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, देवघर में शैक्षणिक सत्र 2026–27–28 में नामांकन संबंधित सूचना
शुद्धि–पत्र (Corrigendum)

1. एतद् द्वारा सर्वधारण को सूचित किया जाता है कि इस कार्यालय द्वारा दिनांक– 28.06.2026 (रविवार) को प्रकाशित नामांकन सूचना– **PR383456 Deoghar (26-27)#D** में ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन एवं आवेदन पत्र भरने की अंतिम तिथि– 20.07.2026 के स्थान पर 15.07.2026 तथा औपबंधि मेधा सूचियों (आठवीं/10वीं कक्षा) का प्रकाशन– 10.07.2026 पूर्वाह्न 12:00 बजे के स्थान पर 20.07.2026 पूर्वाह्न 12:00 बजे तक पढ़ा जाय।

02. संशोधित महत्वपूर्ण तिथियाँ :–

क्र0 सं0	विवरणी	तिथि
02	ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन एवं आवेदन पत्र भरने की अंतिम तिथि	15.07.2026
03	औपबंधि मेधा सूचियों (आठवीं/10वीं कक्षा) का प्रकाशन	20.07.2026 पूर्वाह्न 12:00 बजे तक

नामांकन सूचना की अन्य सभी शर्ते एवं प्रावधान यथावत रहेंगे।

प्रभारी प्राचार्य
महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, देवघर।

PR 383573 Deoghar (26-27)D

JHARKHAND URJA SANCHARAN NIGAM LIMITED
(CIN No. – U40108JH2013SGC001704)
Office of the General Manager, Transmission Zone-VI, Deoghar
Email- gmtz6deoghar@gmail.com

SHORT TENDER

Sealed Tender in two parts containing Techno-commercial Part(Part-I) and Price Part (Part-II) scribed on separate two sealed envelope with NIT No. written on top of envelope are invited from reputed, experienced and financially sound agencies/firm/contractors for execution of following works:-

STN No.	Name of Work	Cost of B.O.Q (inclusive GST) (in Rs.)	EMD Amount (in Rs.)
308/PR/JUSNL/ 2026-27	Engagement of emergency maintenance gang stationed at 132/33KV GSS, Deoghar for attending emergency preventive/breakdown maintenance of transmission lines and GSS as required for maintaining un-interrupted power supply during Sharawani Mela 2026 including hiring of one no. light vehicle (from 25.07.2026 to 08.09.2026 i.e. 1.5 month).	Rs. 886.00	Rs. 7,200.00

1. Start date & time of sale of BOQ:-02.07.2026 at 12:00 P.M.
2. Last date & time of sale of BOQ:-17.07.2026 up to 03:00 P.M.
3. Last date & time for submission of tender documents:-18.07.2026 up to 03:00 P.M.
4. Date & Time for opening of Tender (Part-I):-18.07.2026 at 04:00P.M.
5. Bidopening date for price part (Part-II):-Will be communicated later on.
6. Tender documents with detailed Terms and Conditions can be obtained from the office of the Manager (F&A), Transmission Zone-VI, Deoghar on submission of cost of B.O.Q. (Non-refundable). No postal/courier request will be entertained. For any clarification please contact 7488012827.

स्वहित एवं राष्ट्र हित में ऊर्जा बचायें। कृपया अपनी शिकायतों को टॉल फ्री नं0 1800 345 6570 पर दर्ज करायें।

Sd/- General Manager
(Transmission Zone-VI), Deoghar

PR.NO.383600 Jharkhand Urja Sancharan Nigam Ltd(26-27):D

बाल विकास परियोजना कार्यालय, गोड्डा–ग्रामीण।
–: आम सूचना :–

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि बाल विकास परियोजना,गोड्डा–ग्रामीण अंतर्गत सेविका/सहायिका के रिक्त पदों पर आम सभा के माध्यम से निर्धारित तिथि एवं समय के अनुसार चयन की कार्रवाई विभागीय ज्ञापांक–05/म0क0वि0ओ0के0से0रा0नि0 335/2022–2239 राँची, दिनांक 30.09.2022 में दिए गए निर्देश एवं समय–समय पर निर्गत संशोधित पत्रों के आलोक में बाल विकास परियोजना पदाधिकारी, गोड्डा–ग्रामीण की अध्यक्षता में आमसभा हेतु गठित चयन समिति के सदस्यों द्वारा किया जायेगा आंगनबाड़ी केन्द्रवार रिक्त सेविका/सहायिका के पदो की सूची पर आंशिक संशोधन निम्न प्रकार है :–

क्र0 सं0	पंचायत का नाम	आँगनबाड़ी केन्द्र का नाम	पद	आमसभा तिथि	समय	पूर्व में निर्धारित आमसभा स्थल	वर्तमान में निर्धारित आमसभा स्थल
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	अधिसूचित	लहेरी टोला	सेविका	04.07.2026	10:00 AM	आँ0बा0केन्द्र भवन	प्रा0 विद्यालय कुम्हार टोला

निर्धारित आम सभा में सेविका/सहायिका पद हेतु आँगनबाड़ी केन्द्र के पोशक क्षेत्र के इच्छुक महिला आवेदिका अपने सभी शैक्षणिक प्रमाण–पत्र/निवासी प्रमाण–पत्र/जाति प्रमाण–पत्र एवं अन्य प्रमाण–पत्रों की मूल प्रति एवं स्व अभिप्रमाणित छायाप्रति तथा पासपोर्ट साईज के फोटोग्राफ के साथ निर्धारित स्थल पर उपस्थित रहेंगी। आवेदिका की उम्र आम सभा की तिथि को 18 वर्ष से 35 वर्ष से अधिक नहीं होगी। सेविका/सहायिका चयन हेतु रिक्त पदों की विस्तृत सूचना एवं अन्य अहर्ता की जानकारी संबंधित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी के कार्यालय से कार्य अवधि में प्राप्त किया जा सकता है।

बाल विकास परियोजना पदाधिकारी,
गोड्डा–ग्रामीण।

PR 383480 District(26-27)D

जिला मत्स्य कार्यालय, दुमका

जलाशय/खदान स्तरीय मत्स्य जीवी सहयोग समिति/समिति के सदस्यों/ जिले के मत्स्य पालकों के लिए आवेदन आमंत्रण सूचना

एतद् द्वारा दुमका जिले के मत्स्य पालकों को सूचित किया जाता है कि चालु **वित्तीय वर्ष– 2026–27** में **विभागीय स्वीकृत्यादेश संख्या– 15 रा0 (वि0) दिनांक– 23.06.2026** द्वारा राज्य योजना तालाब तथा जलाशय मत्स्य का विकास एवं जीर्णोद्धार योजनान्तर्गत जिले के मत्स्य पालकों हेतु कल्याणकारी योजनाएँ संचालन की स्वीकृति प्रदान की गई है जिनकी विवरणी/कोटिवार लक्ष्य/ स्वीकृत राशि/सरकारी अनुदान राशि/लाभुक अंशदान राशि व योजना के लाभ प्राप्ति हेतु अर्हताऐं निम्न प्रकार है :–

क्र0 सं0	सामग्री का नाम	आवंटित लक्ष्य –796–	स्वीकृत राशि	सरकारी अनुदान	लाभुक अंशदान	अर्हताऐं
1	2	3	4	5	6	7
1	नाव	07	40,000.00 प्रति यूनिट	36,000.00 प्रति यूनिट	4,000.00 प्रति यूनिट	जलाशय/खदान स्तरीय मत्स्य जीवी सहयोग समितियों अथवा उनके सदस्यों के लिए
2	ग्रो–आउट नेट	14	30,200.00 प्रति यूनिट	22,650.00 प्रति यूनिट	7,550.00 प्रति यूनिट	वर्ष– 2020–21 तक निर्मित केजों के केज लाभुकों के लिए
3	गिल नेट 5 किग्रा0 प्रति आवेदक	10	2,950.00 प्रति 05 किग्रा0	2,655.00 प्रति 05 किग्रा0	295.00 प्रति 05 किग्रा0	जलाशय में मछली शिकारमाही करने वाले जलाशय मत्स्य जीवी सहयोग समिति/सदस्यों/विस्थापित तथा कोविड–19 के प्रवासी मजदूरों को मत्स्य शिकारमाही हेतु

इच्छुक जलाशय मत्स्य जीवी सहयोग समिति लि0/जलाशय समिति के सदस्यों तथा विस्थापित मजदूर कार्यालय कार्य अवधि में दिनांक– 20.07.2026 तक अपना आवेदन निम्नांकित शर्तों के साथ जिला मत्स्य कार्यालय, दुमका में प्रस्तुत कर सकते हैं :–

अहर्ताएं :–
1. विहित प्रपत्र में वर्तमान का फोटोयुक्त आवेदन। (आवेदन पत्र कार्यालय से निःशुल्क प्राप्त करें।)
2. आधार कार्ड की स्वअभिप्रमाणित छायाप्रति संलग्न करें।
3. बैंक पासबुक की स्व0 अभिप्रमाणित छायाप्रति संलग्न करें।
4. विगत दो वर्षों का मत्स्य शिकारमाही का आंकड़ा संलग्न करें।
5. लाभुक अंशदान व्यय करने हेतु सक्षमता संबंधी शपथ–पत्र संलग्न करें।
6. जलाशय समिति के सदस्य गिलनेट हेतु अपने आवेदन को समिति के सचिव/अध्यक्ष से अनुशंसा कराकर प्रस्तुत करेंगे।
7. चयनित लाभुक द्वारा सामग्री क्रय करने के उपरांत क्षेत्रीय प्रभारी से भौतिक सत्यापन कराते हुए प्रमाणक कार्यालय में प्रस्तुत करने के उपरांत सक्षम स्तर से लाभुक के रूप में चयनोपरांत राशि का भुगतान अधोहस्ताक्षरी के द्वारा संबंधित लाभुक के बैंक खाते में हस्तांतरित किया जाएगा।
8. आवेदक का NFDP Portal पर निबंधन संबंधी प्रमाण पत्र आवेदन के साथ संलग्न करना अनिवार्य है।

उपरवर्णित सभी आवश्यक दस्तावेज अपने आवेदन के साथ संलग्न कर पूर्ण रूप से भरे हुए आवेदन अपने क्षेत्रीय प्रभारी के माध्यम से प्रस्तुत करें।

जिला मत्स्य पदाधिकारी–सह–
मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी,दुमका

PR 383527 (Fish)26-27*D

साइबर अपराधी ने सेना का अफसर बन डॉक्टर के खाते से 2.99 लाख उड़ाये

रांची, (हि.स.)। साइबर अपराधियों ने सेना का अफसर बनकर डॉक्टर हुमायूं के खाते से 2.99 लाख रुपये उड़ा लिया। खाते से पैसा निकालने के बाद दूसरे दिन सुबह साइबर अपराधियों ने पैसा वापस करने का फर्जी मैसेज भेजा। फोन कर अपनी गलती के लिए माफी मांगी। डॉक्टर हुमायूं अहमद ने वेबसाइट पर अपना फ्लैट किराये पर देने का विज्ञापन दिया। विज्ञापन के आधार पर आशीष कुमार पहाड़ी नाम के व्यक्ति ने उनका फ्लैट किराये पर लेने की इच्छा जतायी।

कुएं में डूबने से सगे भाइयों की मौत

रांची। रांची जिले के अनगड़ा थाना क्षेत्र के चंद्राटोली गांव में सोमवार सुबह दर्दनाक हादसे में दो सगे भाइयों की कुएं में डूबने से मौत हो गई। मृतकों की पहचान सुखराम मुंडा (42) और विनोद मुंडा (35) के रूप में हुई है। घटना के बाद पूरे गांव में शोक का माहौल है, जबकि परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।स्थानीय लोगों के अनुसार, विनोद मुंडा सुबह खेत जाने के दौरान सिंचाई कूप से पानी निकालने पहुंचा था। इसी दौरान उसका संतुलन बिगड़ गया और वह कुएं में गिर गया। भाई को डूबता देख सुखराम मुंडा उसे बचाने के लिए बिना देर किए कुएं में कूद पड़ा। हालांकि, बचाव का प्रयास दोनों के लिए जानलेवा साबित हुआ और दोनों की डूबने से मौत हो गई। ग्रामीणों के अनुसार, विनोद मुंडा मिर्गी की बीमारी से पीड़ित था और अविवाहित था।ग्रामीणों ने बताया कि जिस सिंचाई कूप में हादसा हुआ, वह करीब 30 फीट गहरा है और उसमें लगभग 22 से 23 फीट तक पानी भरा हुआ है। यह कुआं मनरेगा योजना के तहत करीब दो वर्ष पहले बनाया गया था, लेकिन अब तक उसकी सुरक्षा के लिए मुंडेर का निर्माण नहीं कराया गया। ग्रामीणों का आरोप है कि सुरक्षा इंतजामों में लापरवाही के कारण यह हादसा हुआ।घटना की सूचना मिलते ही अनगड़ा थाना प्रभारी गौतम रजवार पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों की मदद से दोनों शवों को कुएं से बाहर निकाला गया और पोस्टमार्टम के लिए रिम्स भेज दिया गया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

झामुमो ने कृषि रोजगार और ग्रामीण विकास के मुद्दों पर केंद्र सरकार को घेरा

रांची।झामुमो के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने सोमवार को हरमू स्थित पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान किसानों, रोजगार, शिक्षा, ग्रामीण विकास और सामाजिक सरोकारों से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर पार्टी का पक्ष रखा। उन्होंने केंद्र सरकार की नीतियों की आलोचना करते हुए कहा कि किसानों, मजदूरों और युवाओं से जुड़े मुद्दों पर गंभीरता से काम किए जाने की आवश्यकता है।सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि कृषि क्षेत्र आज भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। किसानों की आय बढ़ाने, ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने तथा कृषि आधारित रोजगार के अवसरों का विस्तार करने के लिए प्रभावी नीतियों की जरूरत है। झामुमो नेता ने कहा कि ग्रामीण विकास को गति दिए बिना समग्र आर्थिक विकास संभव नहीं है। उन्होंने युवाओं के रोजगार और शिक्षा के मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाते हुए कहा कि प्रतियोगी परीक्षाओं की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी, समयबद्ध और विश्वसनीय बनाया जाना चाहिए। साथ ही युवाओं को रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है।झामुमो महासचिव ने कहा कि श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा, सामाजिक न्याय और संस्थागत पारदर्शिता लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को ऐसी नीतियां बनानी चाहिए, जिनसे ग्रामीण क्षेत्रों का संतुलित विकास हो और आम लोगों को योजनाओं का वास्तविक लाभ मिल सके।

प्रपत्र VI 'क' झारखण्ड सरकार राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग (भू–अर्जन निदेशालय) या समाहर्ता या समुचित सरकार
प्रारंभिक अधिसूचना
(अधिनियम–30/2013 की धारा–11(1) के अधीन)

अधिसूचना सं0–1129/भू0अ0 — दिनांक–24.06.2026।
असाधारण अंक सं0–69 — दिनांक–25.06.2026

चूंकि झारखण्ड सरकार/समाहर्ता को यह प्रतीत होता है कि ग्राम–बिशालपहाड़ी, थाना–निरसा, थाना स0–31 अंचल– निरसा, जिला– धनबाद में सार्वजनिक प्रयोजनार्थ यथा परियोजना जामताड़ा–निरसा पथ के बरबेंदिया (निरसा) के बराकर नदी पर उच्च स्तरीय पुल निर्माण हेतु अपेक्षित है। प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन के प्रयोजनार्थ अपर समाहर्ता अथवा नियम 2(1) (ख) के तहत नियुक्त पदाधिकारी प्रशासन के रूप में नियुक्त किए गए है। अतएव अधिसूचित किया जाता है कि ग्राम–बिशालपहाड़ी, थाना–निरसा, थाना स0–31 अंचल– निरसा, जिला– धनबाद में उपर्युक्त कथित परियोजना के लिए कामोवेश कुल–15.911 एकड़ यानि–6.4417 हेक्टेयर मानक माप का भूखंड जिसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है अर्जनाधीन है:–

क्र0 सं0	खाता सं0	सर्वे भूखंड सं0	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता	सीमा (भूखंड सं0) उ0	द0	पू0	प0
1	68	1	सरकारी	नदी	0.476	अनाबाद बिहार सरकार	नदी	2	नदी	नदी
2	65	2	सरकारी	दोन एक	7.097	दामोदर घाटी निगम	1	3	2	2
3	1	3	रैयती	कनाली	1.188	आनंद मराण्डी पिता भजु मराण्डी, पार्वत मराण्डी, ननुलाल मराण्डी उर्फ श्यामलाल मराण्डी, देवीलाल उर्फ हीरालाल मराण्डी, पिता–ईश्वर मराण्डी	2	57	3	3
4	1	42	रैयती	गोड़ा–दो	0.036	आनंद मराण्डी पिता भजु मराण्डी, पार्वत मराण्डी, ननुलाल मराण्डी उर्फ श्यामलाल मराण्डी, देवीलाल उर्फ हीरालाल मराण्डी, पिता–ईश्वर मराण्डी	38	43	42	रास्ता
5	68	43	सरकारी	पुरानी परती	0.057	अनाबाद बिहार सरकार	42	44	43	रास्ता
6	68	44	सरकारी	बाईद	0.053	अनाबाद बिहार सरकार	43	45	44	रास्ता
7	68	45	सरकारी	बाईद	0.166	अनाबाद बिहार सरकार	44	53	45,46	रास्ता
8	68	46	सरकारी	मोटी आर	0.004	अनाबाद बिहार सरकार	45	53	46	45
9	1	53	रैयती	बाईद	0.078	आनंद मराण्डी पिता भजु मराण्डी, पार्वत मराण्डी, ननुलाल मराण्डी उर्फ श्यामलाल मराण्डी, देवीलाल उर्फ हीरालाल मराण्डी, पिता–ईश्वर मराण्डी	45	54	53	रास्ता
10	68	54	सरकारी	बाईद	0.118	अनाबाद बिहार सरकार	53	55	54	रास्ता
11	68	55	सरकारी	मोटा आर	0.018	अनाबाद बिहार सरकार	54	56	55	रास्ता
12	68	56	सरकारी	बाईद	0.347	अनाबाद बिहार सरकार	55	56	56	रास्ता
13	66	57	सरकारी	पक्की सड़क	1.434	जिला परिषद	3	58	3	58
14	68	58	सरकारी	पुरानी परती	0.754	अनाबाद बिहार सरकार	57	66	57,58	58
15	46	66	रैयती	बाईद	0.706	उरू हेम्ब्रम, पिता–गणेश हेम्ब्रम, खेपा हेम्ब्रम, वो राम हेम्ब्रम, पिता–चुना हेम्ब्रम, दिवाकर हेम्ब्रम, पिता–लखन हेम्ब्रम, लवासन हेम्ब्रम, वो प्रमेश्वर हेम्ब्रम, पिता–मताल हेम्ब्रम, बिनोद हेम्ब्रम, पिता–चुरका हेम्ब्रम, सीतल हेम्ब्रम वो ज्योति हेम्ब्रम, पिता–मनसु हेम्ब्रम, सोना हेम्ब्रम वो लुधुन हेम्ब्रम, पिता–भेरो हेम्ब्रम, हरीशल हेम्ब्रम, पिता–लोधु हेम्ब्रम	58	69	66	66,68
16	7	68	रैयती	कनाली	0.006	गुमदी सोरेन, पिता–मनसा सोरेन, चुनु मेझीयाईन, पिता–दुर्गा मांझी, चरण सोरेन, पिता–जरमेन सोरेन, बड़की मेझीयाईन, पिता–दुखु मांझी, मगन मांझी, लखीराम मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, मानिक मांझी, वो मोती मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, लुधाई मांझी वो गोविन्द मांझी, पिता–मंगल मांझी, लवीन सोरेन वो जहर सोरेन वो चाँद सोरेन, पिता–गुलु सोरेन, वरो मांझी, वो छोटो मांझी, पिता–मंगल मांझी, सुरजमानी मझीयाईन वो सरोजनी मझियाईन, पिता–सोखा मांझी	66	70	66	68
17	68	69	सरकारी	कनाली	0.149	अनाबाद बिहार सरकार	66	79	66	70
18	9	79	रैयती	कनाली	0.042	गोपीन मराण्डी वो किष्टो मराण्डी, पिता–मझीया मराण्डी, जनेश्वर मराण्डी वो श्यामलाल मराण्डी, पिता–चन्दन मराण्डी	69	80	78	77,78
19	7	80	रैयती	कनाली	0.050	गुमदी सोरेन, पिता–मनसा सोरेन, चुनु मेझीयाईन, पिता–दुर्गा मांझी, चरण सोरेन, पिता–जरमेन सोरेन, बड़की मेझीयाईन, पिता–दुखु मांझी, मगन मांझी, लखीराम मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, मानिक मांझी, वो मोती मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, लुधाई मांझी वो गोविन्द मांझी, पिता–मंगल मांझी, लवीन सोरेन वो जहर सोरेन वो चाँद सोरेन, पिता–गुलु सोरेन, वरो मांझी, वो छोटो मांझी, पिता–मंगल मांझी, सुरजमानी मझीयाईन वो सरोजनी मझियाईन, पिता–सोखा मांझी	79	91	81	80
20	9	81	रैयती	कनाली	0.092	गोपीन मराण्डी वो किष्टो मराण्डी, पिता–मझीया मराण्डी, जनेश्वर मराण्डी वो श्यामलाल मराण्डी, पिता–चन्दन मराण्डी	66	89	82	80
21	9	82	रैयती	कनाली	0.030	गोपीन मराण्डी वो किष्टो मराण्डी, पिता–मझीया मराण्डी, जनेश्वर मराण्डी वो श्यामलाल मराण्डी, पिता–चन्दन मराण्डी	66	83	66	81
22	29	83	रैयती	कनाली	0.069	मनो मुर्मु, पिता–लोधु मुर्मु	82	87	84	89
23	9	84	रैयती	कनाली	0.072	गोपीन मराण्डी वो किष्टो मराण्डी, पिता–मझीया मराण्डी, जनेश्वर मराण्डी वो श्यामलाल मराण्डी, पिता–चन्दन मराण्डी	66	86	84,85	83,87
24	25	85	रैयती	कनाली	0.009	भुडा हेम्ब्रम, पिता–दिको हेम्ब्रम	84	67	85	86
25	39	86	रैयती	कनाली	0.172	रोसनी मझायीन, पति–बिनोद मराण्डी, बाबुलाल मराण्डी वो रूपलाल मराण्डी वो दशरथ मराण्डी, पिता–बिनोद मराण्डी, बिशु मराण्डी वो सागर मराण्डी, पिता–गेनु मराण्डी	87	108	85	90,103
26	47	87	रैयती	कनाली	0.054	लीलू मांझी पिता– कलदु मांझी	83	86	84	86
27	32	88	रैयती	कनाली	0.027	भुडा मांझी, पिता–दिको मांझी, मंगल मांझी वो बुधु मांझी, पिता–धनु मांझी	89	90	87	91
28	68	89	सरकारी	कनाली	0.03	अनाबाद बिहार सरकार	81	88	83	91
29	46	90	रैयती	कनाली	0.015	उरू हेम्ब्रम, पिता–गणेश हेम्ब्रम, खेपा हेम्ब्रम, वो राम हेम्ब्रम, पिता–चुना हेम्ब्रम, दिवाकर हेम्ब्रम, पिता–लखन हेम्ब्रम, लवासन हेम्ब्रम, वो प्रमेश्वर हेम्ब्रम, पिता–मताल हेम्ब्रम, बिनोद हेम्ब्रम, पिता–चुरका हेम्ब्रम, सीतल हेम्ब्रम वो ज्योति हेम्ब्रम, पिता–मनसु हेम्ब्रम, सोना हेम्ब्रम वो लुधुन हेम्ब्रम, पिता–भेरो हेम्ब्रम, हरीशल हेम्ब्रम, पिता–लोधु हेम्ब्रम	88	103	86	90
30	68	91	सरकारी	कनाली	0.012	अनाबाद बिहार सरकार	80	90	88,89	91
31	68	93	सरकारी	कनाली	0.001	अनाबाद बिहार सरकार	79	80	80	93
32	27	103	रैयती	मोटा आर	0.017	भुडा हेम्ब्रम, पिता–फुचा हेम्ब्रम, बाबु राम हेम्ब्रम, पिता–लिखु हेम्ब्रम, सामु हेम्ब्रम, पिता–मदन हेम्ब्रम, सिलु हेम्ब्रम, पिता–देवा हेम्ब्रम, सोना राम हेम्ब्रम वो शिवलाल हेम्ब्रम, पिता–काली हेम्ब्रम	90	107	86	103
33	7	107	रैयती	गोड़ा तीन	0.018	गुमदी सोरेन, पिता–मनसा सोरेन, चुनु मेझीयाईन, पिता–दुर्गा मांझी, चरण सोरेन, पिता–जरमेन सोरेन, बड़की मेझीयाईन, पिता–दुखु मांझी, मगन मांझी, लखीराम मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, मानिक मांझी, वो मोती मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, लुधाई मांझी वो गोविन्द मांझी, पिता–मंगल मांझी, लवीन सोरेन वो जहर सोरेन वो चाँद सोरेन, पिता–गुलु सोरेन, वरो मांझी, वो छोटो मांझी, पिता–मंगल मांझी, सुरजमानी मझीयाईन वो सरोजनी मझियाईन, पिता–सोखा मांझी	103	103	108	106
34	46	108	रैयती	गोड़ा तीन	0.158	उरू हेम्ब्रम, पिता–गणेश हेम्ब्रम, खेपा हेम्ब्रम, वो राम हेम्ब्रम, पिता–चुना हेम्ब्रम, दिवाकर हेम्ब्रम, पिता–लखन हेम्ब्रम, लवासन हेम्ब्रम, वो प्रमेश्वर हेम्ब्रम, पिता–मताल हेम्ब्रम, बिनोद हेम्ब्रम, पिता–चुरका हेम्ब्रम, सीतल हेम्ब्रम वो ज्योति हेम्ब्रम, पिता–मनसु हेम्ब्रम, सोना हेम्ब्रम वो लुधुन हेम्ब्रम, पिता–भेरो हेम्ब्रम, हरीशल हेम्ब्रम, पिता–लोधु हेम्ब्रम	86	112	109	107
35	39	109	रैयती	बाईद	0.088	रोसनी मझायीन, पति–बिनोद मराण्डी, बाबुलाल मराण्डी वो रूपलाल मराण्डी वो दशरथ मराण्डी, पिता–बिनोद मराण्डी, बिशु मराण्डी वो सागर मराण्डी, पिता–गेनु मराण्डी	86	112	110	108
36	26	110	रैयती	बाईद	0.091	भुडा हेम्ब्रम पिता–दिको हेम्ब्रम वो मंगल हेम्ब्रम वो बुधु हेम्ब्रम पिता– धन्ना हेम्ब्रम	67	112	111	109
37	46	111	रैयती	कनाली	0.085	उरू हेम्ब्रम, पिता–गणेश हेम्ब्रम, खेपा हेम्ब्रम, वो राम हेम्ब्रम, पिता–चुना हेम्ब्रम, दिवाकर हेम्ब्रम, पिता–लखन हेम्ब्रम, लवासन हेम्ब्रम, वो प्रमेश्वर हेम्ब्रम, पिता–मताल हेम्ब्रम, बिनोद हेम्ब्रम, पिता–चुरका हेम्ब्रम, सीतल हेम्ब्रम वो ज्योति हेम्ब्रम, पिता–मनसु हेम्ब्रम, सोना हेम्ब्रम वो लुधुन हेम्ब्रम, पिता–भेरो हेम्ब्रम, हरीशल हेम्ब्रम, पिता–लोधु हेम्ब्रम	67	112	67	111, 110
38	68	112	सरकारी	मोटी आर	0.121	अनाबाद बिहार सरकार	111	113	112	120
39	68	113	सरकारी	बाईद	0.161	अनाबाद बिहार सरकार	112	114	113	113
40	68	114	सरकारी	बाईद	0.054	अनाबाद बिहार सरकार	113	116	115	114
41	68	115	सरकारी	बाईद	0.11	अनाबाद बिहार सरकार	113	116	रास्ता	114
42	68	116	सरकारी	बाईद	0.209	अनाबाद बिहार सरकार	114,115	117	रास्ता	116
43	68	117	सरकारी	बाईद	0.215	अनाबाद बिहार सरकार	116	134	रास्ता	117
44	37	134	रैयती	गोड़ा दो	0.071	रेंगा हेम्ब्रम, पिता–गणेश हेम्ब्रम, शिवलाल हेम्ब्रम वो गोडा हेम्ब्रम वो सुकल हेम्ब्रम, पिता–मोलीन हेम्ब्रम	117	135	रास्ता	134
45	3	135	रैयती	गोड़ा दो	0.066	किष्टो कोल वो पशु कोल वो गोपाल कोल वो कालो कोल पिता– कुचा कोल	134	136	रास्ता	135
46	23	136	रैयती	गोड़ा दो	0.072	बड़का मुर्मु वो देवन मुर्मु वो छोटो मुर्मु, पिता–चुरू मुर्मु, बाबुलाल मुर्मु वो मनो मुर्मु वो गोलमा मुर्मु, पिता–लुधु मुर्मु, सुकुल मुर्मु, छन्द मुर्मु	135	137	रास्ता	136
47	25	137	रैयती	गोड़ा दो	0.038	भुडा हेम्ब्रम, पिता–दिको हेम्ब्रम	136	138	242	137
48	27	138	रैयती	गोड़ा दो	0.029	भुडा हेम्ब्रम, पिता–फुचा हेम्ब्रम, बाबु राम हेम्ब्रम, पिता–लिखु हेम्ब्रम, सामु हेम्ब्रम, पिता–मदन हेम्ब्रम, सिलु हेम्ब्रम, पिता–देवा हेम्ब्रम, सोना राम हेम्ब्रम वो शिवलाल हेम्ब्रम, पिता–काली हेम्ब्रम	137	139	242	138
49	7	139	रैयती	गोड़ा दो	0.024	गुमदी सोरेन, पिता–मनसा सोरेन, चुनु मेझीयाईन, पिता–दुर्गा मांझी, चरण सोरेन, पिता–जरमेन सोरेन, बड़की मेझीयाईन, पिता–दुखु मांझी, मगन मांझी, लखीराम मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, मानिक मांझी, वो मोती मांझी, पिता–देवीलाल मांझी, लुधाई मांझी वो गोविन्द मांझी, पिता–मंगल मांझी, लवीन सोरेन वो जहर सोरेन वो चाँद सोरेन, पिता–गुलु सोरेन, वरो मांझी, वो छोटो मांझी, पिता–मंगल मांझी, सुरजमानी मझीयाईन वो सरोजनी मझियाईन, पिता–सोखा मांझी	138	140	242	139
50	19	140	रैयती	गोड़ा दो	0.022	पुरान मराण्डी वो पटला मराण्डी, पिता–रोहनी मराण्डी, रसीक मराण्डी वो लोथा मराण्डी वो नीलू मराण्डी, पिता–कान्दु मराण्डी, बाबुलाल मराण्डी वो मनसु मराण्डी, पिता–नन्कु मराण्डी	139	141	242	140
51	1	141	रैयती	गोड़ा दो	0.023	आनंद मराण्डी पिता भजु मराण्डी, पार्वत मराण्डी, ननुलाल मराण्डी उर्फ श्यामलाल मराण्डी, देवीलाल उर्फ हीरालाल मराण्डी, पिता–ईश्वर मराण्डी	140	142	242	141
52	49	142	रैयती	गोड़ा दो	0.014	दरसनी मझीयाईन, पिता–रलसेन सरेन, रावन सरेन, पिता–लखाई सरेन, लुसु सरेन वो हलधर सरेन, पिता–कोका सरेन	141	143	रास्ता	142
53	68	143	सरकारी	गोड़ा दो	0.002	अनाबाद बिहार सरकार	142	242	242	143
54	1	242	रैयती	कनाली	0.346	आनंद मराण्डी पिता भजु मराण्डी, पार्वत मराण्डी, ननुलाल मराण्डी उर्फ श्यामलाल मराण्डी, देवीलाल उर्फ हीरालाल मराण्डी, पिता–ईश्वर मराण्डी	136	243	रास्ता	242
55	68	243	सरकारी	कनाली	0.051	अनाबाद बिहार सरकार	242	244	रास्ता	242
56	1	244	रैयती	कनाली	0.061	आनंद मराण्डी पिता भजु मराण्डी, पार्वत मराण्डी, ननुलाल मराण्डी उर्फ श्यामलाल मराण्डी, देवीलाल उर्फ हीरालाल मराण्डी, पिता–ईश्वर मराण्डी	243	245	रास्ता	244
57	1	245	रैयती	कनाली	0.057	आनंद मराण्डी पिता भजु मराण्डी, पार्वत मराण्डी, ननुलाल मराण्डी उर्फ श्यामलाल मराण्डी, देवीलाल उर्फ हीरालाल मराण्डी, पिता–ईश्वर मराण्डी	244	248	रास्ता	245
58	68	248	सरकारी	पोखर	0.251	अनाबाद बिहार सरकार	245	249	रास्ता	248
59	10	249	रैयती	गोड़ा दो	0.095	जमोली मझायाईन वो सुकर मनी मझियान पिता– सीतल मराण्डी	248	249	रास्ता	248
कुल–					15.911					

यह अधिसूचना भू–अर्जन पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकार एवं पारदर्शिता अधिकार अधिनियम 2013 (अधिनियम संख्या 30/2013 की धारा–11(1) के उपबंधों के अधीन सभी संबंधित व्यक्तियों के लिए जारी की जाती है।

भूमि की योजना का निरीक्षण जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, धनबाद के कार्यालय में किसी कार्य दिवस को कार्यावधि में किया जा सकेगा। झारखंड सरकार/समाहर्ता–सह–समुचित सरकार उक्त अधिनियम की धारा 12 में यथाउपबंधित एवं यथाविनिर्दिष्ट कार्यों के समुचित निष्पादन हेतु अपेक्षित किसी भूमि का सर्वेक्षण एवं उसकी प्रविष्टि करने किसी भूमि के किसी स्तर को मापने के लिए अथवा भूमि खोदने या भू–वेधन–छिद्र करने सहित सभी अन्य कार्यों के संचालन करने हेतु जिला भू–अर्जन पदाधिकारी धनबाद और उनके कर्मचारी को प्राधिकृत करती है।

अधिनियम की धारा 11(4) के अधीन कोई व्यक्ति जिला समाहर्ता के पूर्विक अनुमोदन के बिना इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से प्रारंभिक अधिसूचना में विनिर्दिष्ट भूमि का कोई अंतरण यथा क्रय/विक्रय नहीं करेगा या ऐसा कोई अंतरण नहीं करवाएगा या ऐसी भूमि पर कोई अवभार नही उत्पन्न करेगा। अधिनियम की धारा 15 के अधीन यथाउपबंधित इस अधिसूचना के प्रकाशन की तिथि से साठ (60) दिनों के अंतर्गत भूमि के अर्जन की बाबत किसी प्रकार की आपत्तियां हितबद्ध व्यक्ति द्वारा जिला भू–अर्जन पदाधिकारी, धनबाद के समक्ष दर्ज की जा सकेंगी।

ह0/–
समाहर्ता, –सह– समुचित सरकार

PR 383551 Land Reforms(26-27)D